ऐतिहासिक बातां

*
*
*

सम्पादक

नारायणसिंह भाटी

प्रकाशक
राजस्थानी शोध-संस्थान
चौपासनी - जोधपुर

★

परम्परा—भाग ११

★

मूल्य—३ रुपये

★

मुद्रक
हरिप्रसाद पारीक
साधना प्रेस, जोधपुर

विषय-सूची

सम्पादकीय

प्राचीन राजस्थानी साहित्य का प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में यहां के इतिहास के साथ घनिष्ट सम्बन्ध है। यहाँ के मध्यकालीन इतिहास में युद्ध और संघर्षो का आधिक्य है। मुगलों और मरहठो के साथ यहाँ के लोगों को अपनी स्वतत्रता की रक्षा के लिए जो संघर्ष करना पडा है उसका चित्रण हमारे साहित्य में देखने को मिलता है, चाहे वह गद्य में हो या पद्य मे, वीररसात्मक हो या शृंगाररसात्मक, नीतिपरक हो या प्रशस्तिपरक, प्रबध मे हो या मुक्तक में।

उस भीषण संघर्ष की दारुण ज्वाला के बीच जीवन की अनिश्चितता ने मर कर भी मृत्यु को जीत लेना चाहा है। इस संघर्ष की कीर्ति को अमरत्व प्रदान करने वाला साधन साहित्य से बढ कर कौन-सा हो सकता था? अतः ऐसे साहित्य के सृजन में चारणो और सोनीमरों का महत्वपूर्ण योग है। कीर्ति को अक्षुण्ण बना देने वाले इन साहित्यकारों के पास 'गीत' और 'वात' कहने की वह अद्भुत कला थी जो भव्य भवनो और गढ़ किलो के ढह जाने पर भी शताब्दियो तक अपना अस्तित्व समाज के मानस-पटल पर कायम रखने में समर्थ है।

भीतडा ढह जाय धरती भिळैं।
गीतडा नह जाय कहै राव गांगो॥

इन कवियो ने उस समाज की साधारण से साधारण मार्मिक घटनाओ और योद्धाओ तथा सत्पुरुषों का जो वर्णन अपनी ओजमयी वाणी में किया है वह अतिशयोक्तिपूर्ण होने पर भी इतिहास की बहुत बडी धरोहर है।

कहने का तात्पर्य यह है कि इतिहास को विस्तार के साथ जाने बिना उस साहित्य के मर्म को पहचानना असभव है। अतः इतिहास के साधनो की जानकारी व सुरक्षा आवश्यक है।

यहां के इतिहास को जानने के कई साधन उपलब्ध हैं जिनमें ख्यात, बात, वचनिका, पीढ़ी, वंसावली, हाल, पट्टा, फरमान, बही, विगत, सिलालेख, तावापतर, ख़त, ग्रहदनामा, वसियतनामा आदि महत्वपूर्ण हैं।

यहां सक्षेप में प्रत्येक की जानकारी देना अप्रासंगिक न होगा, जिससे कि उनके महत्व को समझा जा सके।

ख्यात—ख्यात शब्द संस्कृत के 'ख्याति' शब्द से बना है। इसमें प्राय किसी एक वंश अथवा अनेक वंशों का विवरण प्रत्येक वंश के विशिष्ट पुरुषों, उनके कार्यकलापों सहित होता है। उनका नामकरण उस वंश के नाम से, (राठौडा री ख्यात) राज्य विशेष के नाम से (मारवाड़ री ख्यात) अथवा ख्यात लेखक के नाम से (नैणसी री ख्यात, दयाळदास री ख्यात) होता है। इनमे प्रसिद्ध घटनाओं का वर्णन विस्तार के साथ रोचक शैली मे मिलता है। प्रत्येक अध्याय 'बात' के नाम से अलग किया गया है। प्राय. सभी महत्वपूर्ण घटनाओ के सवत् और कही-कही तिथि तक देने का प्रयत्न किया गया है। स्थान-स्थान पर वशावलिया भी दी हुई मिलती हैं। युद्धो और सघर्षों के वर्णनो की इनमें अधिकता है। युद्धो में बहादुरी दिखाने वाले योद्धाओं का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया गया है। वीरगति को प्राप्त होने वाले योद्धाओ और सतियों की नामावली भी मिलती है। राजाओ के राजकुमारो के नाम, जन्मतिथिया, रानियों के नाम, उनके बनवाये हुए प्रासाद, कुए, बावड़ो और डोळी, सासण आदि के रूप मे दिये जाने वाले दान आदि का भी ब्यौरा मिलता है। प्रत्येक शासक के अधीन परगने, गढ़, किले, राज्य की आमदनो आदि भी दर्ज किये गये हैं। कही-कही पद्यांश भी मिलते हैं। इनमे अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन और जन-श्रुतियाँ होते हुए भी इतिहास की महत्वपूर्ण सामग्री सुरक्षित है।

बात—जैसा कि ऊपर कहा गया है, ख्यात के विभिन्न अध्याय बातों मे विभक्त किये गये हैं। पर इन ख्यातनुमा बातो के अतिरिक्त महत्वपूर्ण *ऐतिहासिक पुरुषो को लेकर सैकडों बातों का निर्माण हुआ है। जैसे—* जगदेव पवार री बात, कुवरसी साखला री बात, रायधण भाटी री बात, लाखे फूलाणी री बात आदि। पर इनमें ऐतिहासिक तथ्य गौण और कल्पना तत्व अधिक है। वे साहित्यिक कोटि का रचनाएँ हैं, फिर भी इनका अपना ऐतिहासिक महत्व है। बहुत सी आवश्यक जानकारी केवल इन्ही बातो के माध्यम से प्राप्त होती है।

वचनिका—यह गद्य-पद्य-मिश्रित रचनाएँ हैं। प्रसिद्ध ऐतिहासिक

व्यक्ति इनके नायक हैं। सबसे प्राचीन वचनिका 'अचळदास खीची' की उपलब्ध हुई है। 'रतनसी महेसदासोत री वचनिका' अत्यंत प्रसिद्ध है। ये रचनाएँ साहित्यिक होते हुए भी इतिहास को दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।

पीढ़ी—राजस्थान में प्रत्येक जाति के भाट होते हैं। उनका काम पीढियें लिखना होता है। वे वही-भाट अथवा वही-वचा कहे जाते हैं। उनकी वहियों में जाति विशेष के आदि पुरुष से लेकर वर्तमान पुरुषों तक के नाम लिखे होते हैं। उन्हें प्राय. पीढिया कठाग्र होती हैं। विवाह होने पर, पुत्र उत्पन्न होने पर, उनकी वही में जब नाम दर्ज करवाये जाते हैं तो उनको बड़े सम्मान के साथ पुरस्कार दिया जाता है। कई बार इन वहियो के लिए भी ख्यात शब्द का प्रयोग हुआ है[1]।

वसावली—राज्यवशों तथा महत्वपूर्ण घरानों की वशावलियां ठेट आदि पुरुष से लगा कर लिखी हुई मिलती हैं। उनमें कही-कही महत्वपूर्ण पुरुषो का थोडा वहुत हाल भी मिलता है।

हाल—किसी स्थान, वस्तु या पुरुष से सम्बन्धित वृत्तात को हाल कहते हैं। कही-कही 'वात' के स्थान पर ख्यातो में 'हाल' शब्द प्रयुक्त हुआ है।

पट्टा—किसी व्यक्ति को लिखित रूप मे राज्य की ओर से जो जागीर का अधिकार दिया जाता था उसे पट्टा कहते हैं। पट्टा लिखने का एक विशेष ढग होता था। उसमें राज्य को मोहर आदि भी लगी होती थी। पुराने ठिकानो में अब भी ऐसे पट्टे सुरक्षित हैं।

फरमान—राज्य की ओर से किसी जागीरदार अथवा राज्य कर्म-चारी को कोई लिखित आदेश दिया जाता था, उसे फरमान कहा जाता था। मुगल वादशाहों की ओर से हिन्दू राजाओ को दिये गये फरमान इतिहास की दृष्टि से वडे महत्वपूर्ण सिद्ध हुए हैं[2]।

वही—एक विशेष प्रकार की वनावट के रजिस्टर को वही कहते हैं जिसमें इतिहास सवधी वातों-ख्यातो से लेकर छोटी-वडी कई उपयोगी वातें दर्ज की हुई मिलती हैं। प्राचीन काल मे प्रतिष्ठित व्यक्तियों की जो निजी वहियां हुआ करती थी उनमे वे अपने जीवन काल की कई महत्व-पूर्ण घटनाओ को भी लिख लिया करते थे।

---

[1] ओझा निबध सग्रह, भाग २, पृ० १६६।

[2] ओझाजी का जोधपुर राज्य का इतिहास—भाग १, पृ० ७ भूमिका।

बिगत—विगत का तात्पर्य वृत्तांत से है। ख्यात के लिए भी कई वार यह शब्द प्रयोग में लिया गया है, जैसे—राठौड वश की विगत।

सिलालेख—प्राचीन मंदिरों, देवालयों, इमारतों, कुओं, वावडियों, सती-स्मारको आदि पर कितने ही शिलालेख मिलते हैं। इनमें इतिहास-सम्बन्धी बहुत ही महत्वपूर्ण और प्रामाणिक सामग्री मिलती है। प्राचीन भाषा और साहित्य की भी उनसे जानकारी होती है। वहुत से शिला-लेख अब धूमिल अथवा खडित हो गये हैं जिन्हें पढने में वडी कठिनाई होती है।

तांबापतर—ये ताम्र धातु के बने चद्दर पर लिखे होते हैं। इनमें ब्राह्मणों आदि को दानस्वरूप दी जाने वाली जमीन का विवरण होता है। ऐसी जमीन का कर आदि नही लिया जाता था।

खत—खत शब्द का प्रयोग वैसे प्राय. पत्र के लिए होता है। पुराने जमाने के प्रसिद्ध पुरुषो के लिखे हुए खत कही-कही अब भी सुरक्षित है। इनसे कई ऐतिहासिक तथ्यो की जानकारी प्राप्त होती है। 'खत' का अर्थ ऋण-पत्र भी होता है। जैसे 'पोल रौ खत'। इसमे रुपये उधार देने वाले का नाम नही होता, केवल लेने वाले का ही नाम होता है और जिस किसी के पास यह खत होता है वही रुपया वसूल करने का अधिकारी होता है। इसी प्रकार 'डूल रौ खत' भी मिलता है, जिसके अनुसार रुपये उधार देने वाला एक मयाद के बाद रुपये प्राप्त न होने पर ऋण लेने वाले की जमीन का मालिक हो जाता है।

अहदनामा—विदेशियो के साथ तथा स्थानीय शासकों में परस्पर जो सधिया हुई हैं उनको लिखित शर्तो आदि को अहदनामे के नाम से अभिहित किया गया है।

वसियतनामा—कई राजाओं और प्रतिष्ठित व्यक्तियो के लिखे हुए वसियतनामे आज भी उपलब्ध होते हैं। इतिहास की दृष्टि से भी वे महत्त्वपूर्ण हैं।

उपरोक्त सभी साधनो मे ऐतिहासिक वातों और ख्यातों का वडा महत्व है। ये ख्याते प्राचीन राजस्थानी भाषा में लिखी हुई मिलती हैं।

ऐतिहासिक बाते दो प्रकार की उपलब्ध होती हैं। एक तो वे जो ख्यात के ही अश (अध्याय) हैं और जिनका निर्माण इतिहास की रक्षा के लिए किया गया है। दूसरी वे जो ऐतिहासिक तथ्य अथवा ऐतिहासिक पुरुष को

लेकर साहित्य-सृजन के दृष्टिकोण से लिखी गई हैं। एक में इतिहास-संबंधी जानकारी संकलित की गई है तो दूसरी में इतिहास के सहारे कथा कहने की कला का विकास हुआ है। एक से इतिहास-सम्बन्धी जानकारी होती है तो दूसरी से मनोरंजन होता है।

यहां सम्पादित ऐतिहासिक वार्ते प्रथम कोटि की हैं। उनके महत्व को जानने के लिये ख्यातों के निर्माण और उनकी विशेषताओं से परिचित होना आवश्यक है।

प्राचीन काल में ऐतिहासिक घटनाओं, महत्वपूर्ण पुरुषों और राज्यवंशों-सम्बन्धी जानकारी को संकलित करने का प्रयत्न किया गया है। मध्यकालीन मुगल शासकों ने तो अपने राज्यकाल में ही अपने जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं और ऐतिहासिक तथ्यों को लिपिबद्ध करवाया था।

राजस्थान में ख्यात-निर्माण की परम्परा बादशाह अकबर से प्रारम्भ हुई है[1]। उपलब्ध ख्यातों में अभी तक मुहणोत नैणसी की ख्यात सब से प्राचीन है। इसके पश्चात् तो कई राज्यघरानों और ठिकानों ने ऐसे प्रयत्न करवाये होंगे पर ऐसी प्राचीन ख्यातें बहुत कम उपलब्ध होती हैं।[2]

ख्यातकारों ने प्रायः भाटों की बहियों, जनश्रुतियों, प्रवादों आदि से सहायता लेकर इनका निर्माण किया है। समय के साथ-साथ उनमें प्रतिलिपिकारों ने अपनी जानकारी भी जोड़ दी है। इस तरह बहुत सी सुनीसुनाई और अप्रामाणिक सामग्री भी इनमें मिलती गई है। नैणसी री ख्यात के अतिरिक्त बांकीदास री ख्यात, दयाळदास री ख्यात, राठौड़ां री ख्यात आदि प्रसिद्ध हैं।

इन ख्यातों (ऐतिहासिक वार्तों) पर यहां तीन दृष्टिकोणों से विचार किया जाता है।

ऐतिहासिक—

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, इनका उद्देश्य राज्य परिवारों की ख्याति को सुरक्षित रखना तथा महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं की जानकारी देना

---

[1] मुहणोत नैणसी री ख्यात, भाग २—ओझाजी द्वारा लिखित भूमिका, पृ० १।

[2] अभी अनूप संस्कृत लाइब्रेरी से 'दलपत विलास' नामक अपूर्ण ख्यात ग्रंथ की प्रति प्राप्त हुई है, जो श्री रावत सारस्वत द्वारा सम्पादित की जा कर सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट से प्रकाशित हो रहा है। यदि यह दलपतसिंह के समकालीन लेखक द्वारा लिखी गई है तो अवश्य प्राचीन है।

है। अन्य कितनी ही छोटी-बडी बातो की जानकारी भी इनके माध्यम से उपलब्ध होती है। पर ये ख्याते विशुद्ध इतिहास न होकर इतिहास की सामग्री मात्र प्रस्तुत करती हैं। विशुद्ध इतिहास की दृष्टि से ही उन्हे परखना उचित नही होगा। इनके ऐतिहासिक मूल्य के सम्बन्ध मे ओझाजी ने लिखा है—'उनमें दिये हुए वृत्तातो का परस्पर एक दूसरी ख्यात से बहुधा मिलान भी नही होता। यदि एक ख्यात-लेखक एक घटना का एक प्रकार से वर्णन करता है तो दूसरा उसी घटना का बिल्कुल भिन्न वर्णन करता है। मुहणोत नैणसी की ख्यात मे तो एक ही घटना के कई वृत्तात मिलते हैं। सच बात तो यह है कि वास्तविक इतिहास के ज्ञान के अभाव मे ख्यात-लेखकों ने जैसा कुछ भी सुना वैसा ही अपनी ख्यातो मे दर्ज कर दिया।'[1]

फिर भी इतिहास लेखको के लिए ख्याते सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं। स्वय ओझाजी, कर्नल टॉड और विश्वेश्वरनाथ रेऊ ने स्थान-स्थान पर ख्यातो को ज्यों का त्यों उद्धृत किया है। पाद टिप्पणिया तो ख्यातो और फारसी तवारीखो से भरी पडी हैं। मुहणोत नैणसी की ख्यात के सम्बन्ध मे तो स्वय ओझाजी ने स्वीकार किया है कि कर्नल टॉड को यदि यह ख्यात मिल गई होती तो उसका 'राजस्थान' कुछ और ही होता[2]। कहने का तात्पर्य यह है कि सावधानीपूर्वक प्रयोग करने पर ऐतिहासिक जानकारी के लिए ख्याते बहुत महत्वपूर्ण साधन हैं।

समाजशास्त्रीय—

यहा के प्राचीन समाज की राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक व नैतिक प्रवृत्तियों का इनमे विस्तार के साथ वर्णन मिलता है। यहा के शासको का विदेशियो के साथ सघर्ष और युद्ध के तौरतरीके, हारजीत और जीवन-मरण की कितनी ही कथाये इनमे सविस्तार देखने को मिलती हैं। उस समय की जातीय व्यवस्था, विभिन्न जातियो की सामाजिक स्थिति, धार्मिक मान्यताएँ और धर्म की रक्षा के लिए किये जाने वाले बलिदान के सैकड़ों उदाहरण उनमे मिलते हैं। उस समय का रहन-सहन, आर्थिक व्यवस्था, आवागमन के साधन, जमीन की उपज, कर-वसूली की व्यवस्था, सिक्कों का चलन और व्यापार आदि की व्यवस्था का भी पता चलता है। इसके अतिरिक्त सामाजिक रीति-नीति और जीवन-मूल्यो को परखने के भी महत्वपूर्ण सकेत इनमे सुरक्षित हैं।

---

[1] जोधपुर राज्य का इतिहास, भा. १, पृ २२९-२३०।

[2] मुहणोत नैणसी की ख्यात की भूमिका।

साहित्यिक—

राजस्थान का अधिकांश प्राचीन साहित्य यहां के इतिहास से अतिरंजित है। वीररसात्मक साहित्य इसका प्रमुख उदाहरण है। जहाँ इतिहासकारों ने केवल उस समय की महत्वपूर्ण घटनाओं का ही उल्लेख किया है, वहाँ साहित्यकारों ने इतिहास की साधारण से साधारण घटना को लेकर दातारों, जूंझारों और आदर्श पुरुषों पर असंख्य डिंगल गीत, दोहे, सोरठे, कवित्त, छप्पय, नीसांणियां तथा खडकाव्य, प्रबंधकाव्य, वातों आदि का निर्माण किया है। उनका प्रसंग इतिहास में न मिल कर इन्ही ख्यातों और ऐतिहासिक बातों मे मिलता है। अभी तक अधिकांश राजस्थानी साहित्य हस्तलिखित ग्रंथों में बिखरा पडा है और जो थोडा बहुत प्रकाशित हुआ है उसे समझने के लिए भी प्रकाशित इतिहास अपर्याप्त है। अत. इस प्रकार के ऐतिहासिक साधनों को प्रकाश में लाना बहुत जरूरी है।

इन ख्यातों-बातो मे शताब्दियों की ऐतिहासिक घटनाओं को संग्रहीत करने का प्रयत्न किया गया है। उनमे कई ऐसी असाधारण और रोचक घटनाओं का वर्णन प्राप्त होता है जिनके आधार पर आज भी सुन्दर कहानियें, उपन्यास, नाटक आदि का निर्माण हो सकता है।

कही-कही तो इन ख्यातो मे ही ख्यातकारो ने मार्मिक स्थलों का इस खूबी के साथ वर्णन किया है कि उनमे सहज साहित्यिक सौन्दर्य निखर आया है। स्थान-स्थान पर गीत, दोहे, कवित्त आदि पद्यांशो का प्रयोग भी साहित्यिक दृष्टि से कम महत्वपूर्ण नही है।

सैकडो पृष्ठो मे लिखी गई इन ख्यातों का भाषा की दृष्टि से भी बडा महत्व है। इनमें स्थल-स्थल पर ठेट राजस्थानी के शब्दो की सुगठित योजना, मुहावरो तथा कहावतो का सुन्दर प्रयोग और तत्कालीन समाज के विभिन्न पक्षों को व्यक्त करने वाली उपयुक्त शब्दावली का उदाहरण देखने को मिलता है। अरबी तथा फारसी के शब्दो का भी प्रयोग इनमें हुआ है। राजस्थानी भाषा के विकास-क्रम को समझने में इनसे बहुत महत्वपूर्ण सहायता मिल सकती है।

प्रस्तुत संग्रह की वातें मारवाड़ के इतिहास से सम्बन्ध रखती हैं। मारवाड़ की विगत ख्यात महाराजा मानसिंहजी के समय में लिखी गई। इसमें प्रारंभ से लगा कर महाराजा मानसिंहजी तक का विवरण मिलता है[1]। मारवाड़ की

[1] ओझाजी द्वारा लिखित जोधपुर राज्य का इतिहास, भाग १, पृ. ४ भूमिका।

ख्यात की प्रतियों मे मूंदियाड़ की ख्यात, पारलाऊ की ख्यात, जिरमेसर की ख्यात आदि प्रसिद्ध हैं। पर ये सभी ख्यातें अधिक प्राचीन नही हैं।

प्रस्तुत बातें सं० १७०३ की लिखी हुई मिलती हैं, जैसा कि इस संग्रह की अंतिम बात के अंत में लिखा हुआ मिलता है। मुहणोत नैणसी की ख्यात का लेखन काल सं० १७०७ से १७२५ तक माना गया है, अत. ये बाते भी नैणसी के समकालीन किसी व्यक्ति द्वारा लिखी गई है। लेखक ने लिखा है कि मु० सुन्दरदास ने उससे यह बात लिखवाई। इससे इन बातो की प्राचीनता के बारे में कोई संदेह नही रह जाता।

इसी हस्तलिखित ग्रथ में 'कुतबदीन साहजादे री बात' है। उसके अंत मे उसका लिपिकाल स० १७६४ लिखा हुआ है। पूरी पोथी एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखी हुई हैं तथा काफी जीर्ण हो चुकी है।

इन बातो मे कुछ महत्वपूर्ण ऐतिहासिक तथ्यों की विशेष जानकारी मिलती है। कई स्थलों पर वह मारवाड की ख्यात से मिलती-जुलती सामग्री भी है। मालदे के राज्यकाल का वर्णन इसमे बहुत विस्तार के साथ किया गया है। सोजत का वृत्तात ख्यात लेखक के विस्तीर्ण ज्ञान का द्योतक है। नैणसी की ख्यात में मालदे के बाद के शासकों का हाल नही मिलता, पर इसमें जसवंतसिंहजी तक का हाल है। प्राचीन राजस्थानी गद्य साहित्य का सुन्दर उदाहरण तो ये बाते प्रस्तुत करती ही है पर इतिहास के पुनर्निर्माण मे भी इनसे सहायता मिल सकती है।

—नारायणसिंह भाटी

राव रिणमल री बात

१

राव रिणमल अठे धिणले सोजत कनै रहै। गाव री ठकुराई पाखती घणा रजपूतां रा भूल[1] रहै। घणु सिकार रमै। सिकार रमै मु च्यार पांच ठोड भुजाई[2] हुवै। सिकार खेल नै पधारै नै भुजाई पांतियै वैसै[3] तितरै खविर ग्रावै जे सुवर ठावो हुग्रो छै, तरै ऊठ नै यहीज ग्रसवार हुवै, ग्रा भुजाई युंहीज रहै। हुकम करै—जे फलाणी ठोड भुजाई तयारी करावज्यो, म्हे उठै ग्रावा छा। उठै सिकार खेल नै पधारै, भुंजाई पातियै वैठै तितरै वळे खवर ग्रावै नै उठा सुं युहीज चढै, ग्रा भुजाई युहीज रहै। वळै बीजी ठोड़ तयार हुवै। युं च्यार पाच ठोडा भुजाई व्है। रजपूतां री वडो जोड रहै। खरचा रा ग्रोधुळा व्है[4]। तरवार, ग्राचार सगळां ऊपर वहै।

इण भात हालतो देख नै गोढवाड पाखतो सोनगरा री ठकुराई म सोनगरा नूं ग्रमावा हुवा[5] जु ए पासती भुंडी, इण नैडा थका म्हानुं बिगाड, तरै राव रिणमल नु परणाय नै वेमामीया[6], ग्रावोजाव हुई। तरै सोनगरा मिळ नै वेटी नु कह्यो—बाई म्हे थारा माटी[7] ग्रागै रह सका नही, तुं वेमामै तो म्हे रिणमल नु माग। तरै वेटी कह्यो—थे ग्रा वात मत करो। तरै या कह्यो—तुं म्हा सगळा नै मार, हाथ सु। तरै कह्यो—तो रुढा थे जाणो। मु एक समै रावजी सासरै पधारिया, तरै या वीचारियो—जे ग्राज राव नु मारा। वेटी नुं भेद दीयो—जे ग्राज राव नुं मारसा।

रावजी एक समै सोनगरीजी मुं किणहीक भात रिभाया हुता, तद हुकम कियो—तुं माग, मागै मु चु। तरै इण कह्यो—जु हु कदेक माग मुं। सो तिण दिन कहाड मेलीयो—जे राज मोनु कोल दीयो थो मु ग्राज ग्रा बात हु मागुं

---

[1]समूह [2]भुना हुग्रा खाना [3]भोजन करने को पंक्ति में बैठते हैं [4]ग्रत्यधिक खर्च होता है [5]उनके दिल में समाये नहीं [6]विश्राम में लाये [7]पति।

छु, सो राज आज म्हारी वागी पहर नैं पधारीया। राते माळीयैं सूता[1]। सोनगरां जांणीयो—परभाते माळीया सुं उतरतां मारसां, नैं सोनगरी रात घड़ी ५ पाछली रही तरे सैं रावजी नैं फुरमायो—जे रावजी साथ में पधारो। तरैं रावजी उण हीज वागैं पहरीयां साथ मे पधारीया नैं सोनगरा तरवार कटारी सभाय माळीयैं चढिया, जाय नैं रावजी नुं जोवण लागा[2]। तरैं सोनगरी कह्यौ—अठैं रावजी कठैं छैं, औ थांहरौ वाप रजपूतां रैं भूल्न[3] माहै ऊभौ, मरैं तौ मारो। थांरी निलाडा मतैं राव मरैं नही। रावजी उठा सुं घरे पधारीया। पछै साथ करनैं, जायनै, सोनगरा सोह छुरी माहै काढीया[4]। छोकरो छोडियौ नही। एक डावड़ौ[5] थको लालौ जेसळमेर भाटीयां रैं भांणेज थौ तिको उवरीयो।

तठा पछै रावजी मडोर आया। कितरेक दिना भाटीयां रैं रावजी पधारीया हुता। उठैं सिकार रमतां लालैं सुवर नु बरछी वाही, तरैं रावजी पूछीयौ—जे औ जिसड़ौ सोनगरां री डील हुवै तिसड़ौ छैं, तिणरी बरछी वावतौ देखनैं कह्यौ। तरे उवा कह्यौ—बीजा तौ राज सोनगरा सोह मारीया नैं औ एक अठैं म्हारैं थौ सु उवरैं, म्हां नु राज बगसौ[6]। पछैं रावजी उण लाला नुं सुंदर जोधा री बेटी परणाई, गांव पाली दाईजे दीधी[7]। तिणरैं केड रा[8] रिणधीर नै अखैराजो हुवा। तिणरी साख रौ दूहौ—

> कोट चडी सुंदर कूकावैं, जोयउ जैसौ' आवैं।
> तिण'रा डर सू धान न भावैं, सुख सू नीद न आवैं॥

* * * *

राव चूडौ बूढा हुआ। मोहिलां रैं परणीया पछैं आप मोहिलणी रैं वस हुआ। पहलां भुजाई घी मण १२ लागतौ सुं मोहिलणी घी सेर २ तथा ३ मे भुजाई आणी। एक दिन राव नुं कह्यौ—म्हे थांहरैं इतरौ सवार कीधौ[9]। तरैं राव चूडैं कह्यौ—राड[1] मोनु भरायौ, म्हारैं माथै इतरा दुसमण नै वारैं आय देखै तौ रजपूत थोडा। तितरैं ऊपरैं पातिसाही फौजां आई। तरैं राव कह्यौ—हिमैं हु कठैं नीसरू नै मोचीडा रौ मोचीड़ौ कहाऊ। तरैं बेटा नुं कादण लागा, तरैं रिणमल लायक थौ। रिणमल नुं राव चूडैं कह्यौ—म्हारौ जीव तौ

---

[1]महल मे सोये [2]ढूढने लगे [3]समूह [4]मार डाले [5]लडका
[6]माफ करो [7]दहेज मे दी [8]पेट से उत्पन्न [9]बचत की।

मरतां जो सोहरो नीसरै[1] जो तु कांन्हदे मोहिलणी रा बेटा नु टीको द्यै । तरै रिणमल गळै हाथ वाह्यो[2] । अेक वर नीसरीया रिणमल कांन्है रै निलाड़ टीको काढ नै आप मेवाड जाय वसीया । दीवांण वसी नु[3] रिणमल नु धिणलो दीयो ।

वांसै[4] कान्हो निवळो सो ठाकुर हुवो । तरै सतै चूडावत कान्है कन्हा टीको उरो लीयो । तद रावत रिणधीर नै सतो एक था । पछै सतै रिणधीर ही नु रीसवाडीयो[5] । तरै रिणधीर ही मेवाड आयो । तरै रिणमल सतै कन्हां मडोवर खोस लीयो[6] नै ओ ही पटो रह्यो नै सोजत राणा री खाय नै मडोवर आपरी थकी खावै । इण विध चाकरी की । राणो मोकल रावजी रै भाणेज हुवो ।

* * * *

सवत १४८६ रा भादवा सुद १ सूता राव रिणमलजी सु राणै कुम्भे चीतोड ऊपरा चूक कियो तिण समीयै री वात ।

सूरा पूरा वतडी, सूरा कान सुहाय ।
भागल अदवा राजवी, सुणता ही टळ जाय ।।

मंडोवरगढ राव चूडोजी राज करै । तिणरै १४ कंवर । तिण में राजपाट टीकायत राव रिणमलजी । वाई राजकुंअर, तिका वरस १६ माहै हुवा तरै नाळेर देण रो विचार कीयो[7] । आज चीतोडगढ राणो श्रीखेतो राज करै । तिणरै पाटवी कवर चूंडो, तिणनै नाळेर द्यां । तरै व्यास प्रोहित दामोजी उमराव ४ साथे घोडा ४ देनै नाळेर मेलीयो । अठा सु सारो साथ नाळेर लेनै चीतोड पौहता[8] ।

कवर चूंडा सु मालम कीयो । मडोवर सु राठौडा नाळेर मेलीया छै । इसो कवर चूडो साभळ मन मे रळीयावत[9] हुवो । वधाई कीजै छै । वाजा वाजै छै । रळीरग होवै छै । तिण समै राणै खेतेजी खवास[10] नै पूछीयो । तरै खवास कह्यो—मडोवर सु राठौड़ा राव रिणमलजी री वहिन रो नाळेर कवर

---

[1] भामानी मे निकलेगा [2] गले के हाथ लगा कर कसम खाई [3] वसने के लिए [4] पीछे [5] नाराज कर दिया [6] छीन लिया [7] नालेर भेज कर सगाई करने का विचार किया [8] पहुँचे [9] प्रसन्न [10] पास मे रहने वाला नौकर ।

चूडाजी नै आयौ छै तिकौ आज वांदसी[1]। तिण ऊपरा हरख ओछाह[2] हुवै छै। इण भांति राणैजी सांभळि[3] नीसासौ नांखीयौ[4]। तिण वेळा राणैजी री पाखती उमरावा री साथ बैठो थो तिके जुहार कह, कवर चूडाजी सु जुहार करण नै आया। जुहार कीयो।

कवर घणौ आदर मान देनै पूछ्यौ—है ज्यौ श्रीदीवांण कांई करै छै नै थांसु कांई वात कीवी ? तरै ज्यु थी त्यु कही। वळै कह्यौ—श्री दीवाण जिका, नाळेर देसी, सुणनै फुरमायौ—म्हाकौ तौ परणीजणौ भव माथै पडीयौ नै मोटीयागं नै तौ घणा ही नाळेर आसी, मोटी-मोटी ठोडां परणसी। आ वात कवर चूडेजी सांभळि[5] मनमे विचार करि, उमरावां सु मिसलत[6] पूछी— ज्यौ नाळेर आयौ सो श्री दीवाण नै किसी तरैहीज दै तौ वडौ सकाम हुवै[7]। तरा उमरावां अरज कीधी—श्री कवरजी राजि राठौड़ां रै डेरै पधार नै घणौ आदर रीझ मोज थो, घणा दारू अमला मैं चाक करि[8], हाथ जोड़ि, बोल वांह लेस्यौ तौ श्री दीवाण नै नाळेर देसी। इमी मिसलत ठहराय बीजै दिन घणौ जलूस असवारी वणाय डेरै आया। प्रौहित, व्यास, उमराव राजी हुवा। अवै कवर चूडा सु श्री रावजी रै साथ अमल गळाया, बतीसा कसूवा कढाया। निपट अेराक दारू री तुगां[9] मगाई। गोठ रौ हुकम मांग्यौ तरै कंवर चूडोजी बोल्या—थे तौ अठै म्हाकै पांहणा[10] छौ सो थानै म्है खरच न लगावां। गोठ तौ म्हाकी दिसली[11] करस्या। तरै गोठ सारू बाकरा मगाया, झाड रै पंजर रा वाहण, सारही रा खाजरू मंगाया। उलटा रौ पलटौ इसौ दारू घडा, तुगां बतकां मगाई। पछै काकापुरी वासिग रा माथा री थोहर रा विडा री, भाखर रा गुडा री, भवर मार, ग्रिघ मार, लटीयाळ, चटीयाळ, कालू केकीद री नीपनी[12] भाग मगाई। तिण माहे गिरी केसर, दाळचीणी, जावत्री, जायफळ, इळायची, पान, मूग, डोडा, धतूरा रा बीज, मोहरौ, मिसरी घाल नै काढीजै छै नै तिण हीज भांति मनुहारि करि करि श्री कवरजी सूम[13] दे दे नै आपरै हाथ सु प्यालो उमरावा रा साथ नै पावै छै। उमरावा रौ माथ धरती हाथ

[1]नारियल को स्वीकार करने की रस्म पूरी करेंगे [2]उत्सव [3]सुन कर [4]निश्वास लिया [5]सुन कर [6]सलाह [7]कारगुजार हो [8]मस्त कर के [9]शराब रखने का बड़ा बर्तन [10]पाहुना [11]हमारी ओर से [12]पैदा हुई [13]गोरस।

लगायनै मुजरा करि करि लै छै। निपट आगराई नेस अमल काळीनाग रै रंग, तिको देवगिरी प्याली मांहे घाल अमल फेरीजै छै, तिको गाळीयो पावै छै। पचामां रुपयां सेर १ लाभै, केमर रै रंग इसो दारू, श्री दीवांण रै अरोगण रो मनुहारै[1] मनुहार करनै पाईजै छै।

पछै गोठ रा रसोडदारा नै हुकम हुवो छै, तिको भुंजाई वणावै छै। इतरै अमलां री नीव दे छै। तिण समै रसोड़दार अरज कराई—रसोड़ी तयार हुवो छै। तरै श्री कंवरजी री साथ नै अठी गै साथ पांतीयां बैठा[2]। भांति-भांति रा पकवांन मांस परसीया, हळवै-हळवै मुसतै सारो माथ अरोगे छै, दारू री पणगो[3] हुवै छै, तिको पाणी ज्युं ढोळीजै छै। इसी मुं भुजाई जीमीया। पछै गगाजळा मुं इळाइची, कपूर वासता जळ मुं मनुहारै मनुहार चळु किया। ऊपरा पांन, कपूर, फाल, कमतूरी, लू ग, मुं मूछण कराया।

पछै पहिलां तो प्रोहित व्यासजी नै बुलाइ, सोना री जनेउ, कड़ा-मोती नै सिरपाव[4] दिया। घोडो एकेकी दीयो। सोनै री सारवेत पछै उमरावां रा साथ नै कडा-मोती, किलगी, सिरपाव, घोडा दीया नै कह्यो—म्हांके तो राजि वडा सगा छो, राजि नाळेर ल्याया तिको म्हानै सगा जाण्या पिण एक मारवां[5] ठाकुरां सुं म्हांकी अरज छै, ज्यो हुकम हुवै तो अरज करा। प्रोहित व्यास हाथ जोडनै कह्यो—श्री दीवाण पाटवी एकलिंग रा औतार फुरमाईजै। तरै कवर कह्यो—जे बाह बोल द्यो[6] तो पाछै अरज करा। तरै व्यास प्रोहित कह्यो—श्री कवरजो राजी हुसो नै फुरमावस्यो तिको करस्या, म्हारा बाह बोल हीज छै। तिण समै कवरजी कह्यो— ज्यो थे नाळेर म्हांके वावन ल्याया छो तिको श्री दीवाण ने द्यो तो म्हे घणो सुख पावा। तरै प्रोहित व्यास उमरावा सु बोलणी लायो, हा कैहणी आवै नही। मांहोमाहे आलोच्यो[7]। घडी अरध वितीन अण-बोल रह्या, आलोचना, कवरजी बोल्या—इणको सोच आलोच वीजो कोई नही, म्हे थाके डेरे आया, म्हानै आंहीज सिरपाव निजर पेस करो। म्हा डेरै आया को कारण राख्यो चाहीजै नै थे मारवाड का थंभ सुणीया छो। उठै श्री रावजी का घर में थारो कीयो कबूल छै। तिणमु म्हांकी अरज कबूल कीधी हीज

---

[1] मनुहार करते हैं [2] भोजन करने के लिए पंक्ति में बैठे [3] शराब की पगोमगारी [4] सिर से पैर तक की पोशाक [5] मारवाड के [6] पक्का वचन दो [7] अंदर ही अंदर विचार किया।

जोईजे। तरै प्रोहित व्यास बोल्या—श्रीकंवरजी आगै म्हारो घणी घणो जूझे छै नै नाळेर तो राजि नै मेलीयो छै, तिणसूं राजि म्हानै नाळेर श्री दीवाण नै दिरावो, तो म्हे कहा तिकुं करो तो दीवांण नै नाळेर द्यां। कवर कह्यो—श्री इकलिंगजी री वाच बाह छै, ज्यों थे कहणवाळी[1] कहस्यो तो परमाण छै। थे निसक कहो, 'मैं कबूल कीधी। तरै वांह वचन लेनै उमराव बोलीया—श्री दीवांण नै म्है परणावस्या नै म्हारी बाई रै भागा[2] कदास कोई कवर होई तिको श्री दीवाण रै टीकै बैसे। नै राज बैसाणो तो नाळेर वदावां नै वळे कागद एक राजि रै दसखता इसो लिख द्यो—जे राठौड रै बेटो होइ तिको श्री दीवांण रै पाट बैससी[3], चीतोड़गढ़ रो धणी होसो। इणरो जो चूडो कदे ही टीका बेई बोलण पावै नही नै बोले तो श्री इकलिंग सूं विमुख जाई। इण भात लिख कागद म्हारै हाथ द्यो तो साच माना। तरै कवर चूडेजी कह्यो ज्यू सारो कियो। कागद लिख नै प्रोहितजी रै हाथै दियो।

कवरजी महला पधारिया। पाछा सू नाळेर घोडा ले श्री दीवांण रै तिलक कियो। मोरया सूं वडारण[4] निछरावळ[5] कीधी। लगन दे नै दीवांण सूं सीख माग नै मडोवर पाछा आया। अठै राव चूडाजी सूं, कवर रिणमलजी सूं मिळया। सगळी वात मनुहार री जीमणा री कही पिण श्री दीवांण नै नाळेर दियो तिण दिसा क्यू न कह्यो। लारां दीवाण जांन[6] रो घणो आडम्बर बणायो। हाथी घोड़ा रथां री जलूस कीधी। उमराव केसरिया वागा वणाया। मडोवर परणीजण नै पधारिया तरै बारह कोस सांम्है आया। घणी जलूस सामेळा[7] री देस मेवाडा हैरांन रह्या। तिण समय कवर रिणमलजी देखै तो सेहरो मौड श्री दीवाण रै माथै छै। तरै पुरोहितजी नै आघा ले'र[8] कांन मे पूछियो—थे नाळेर किणनै वंदायो ? म्हें थानै काहू कहि नै मेलिया था ? तरै उमरावा अर पुरोहितजी पाछली वात ज्यू हुई थी त्यू कही। कागद दिखायो। श्री रिणमलजी वेदल[9] हुवा। कह्यो—

लाख सयाणप कोडि बुधि, कर देखो सहुं कोइ।
अणहूणी व्हैणी नही, हूणी होइ सु होइ॥
क्यू जाणै क्यू निरवहै किणै न कहिजे कोइ।
मन चीन बहु तेरियां[10] करता करै स होइ॥

---

[1] कहने योग्य [2] भाग्य से [3] बैठेगा [4] दासी [5] वारफेर [6] बरात [7] बरात के स्वागतार्थ सामने आकर मिलना [8] ऐक ओर लेजा कर [9] दुखित हुए [10] कई तरह की।

तरै पुरोहितजी कहै—

> जो छठी सूंठी अछै, केसव चिंता कीह।
> जो छठी मठी अछै तौल हिवौ तोहि लीह ।।

इण भांत वात करतां भागै मन[1] सांमेळौ ले तोरण वादियौ । आरी कारौ कीधी । साय नै डेरौ दिरायौ । श्री दीवांण चंवरी मडप में पधारिया । राणा रौ पुरोहित पलीवाळ १ नै मिवड़ पुरोहित अठी सू और ४ ब्राह्मण जूना विद्यापात्र वेद पढ़ै छै । लागवाग दीजै छै । तठै परणिया, भात दिया, पिण मन किणही रौ राजी नही । दत्त दायजो देनै सीख दीन्ही[2] । तरै बाई चडकोळ विराजता वडारण चन्द्रावळी मेली । प्रोहित व्यास तेडाया[3] । बाई कह्यौ—

> विह[4] आणै विह मेळवै, विह मडै उपचार ।
> अळगौ ही नेडौ करै, ओ विह तणौ विचार ।।
> दोस न किणही दीजियै, कीजै किणनै रोम ।
> भलौ बुरौ जो ही हुवै, सो निज करम सूं दोम ।

इतरौ कहि कह्यौ—रावजी चित्तौड सिधाया जरै लेख माथै होणौ थौ सो हुवौ । पिण थे कागद लिखायौ छै तिको उरौ दिरावौ । तरै प्रोहितजी कागद दीधौ । अवै ववर रिणमलजी साथै पहोचावण[5] सारूं कोस दम गया । बाई सू मिळिया, सीख दीन्ही । रिणमलजी मडोवर आया । राणौजो चित्तौड गया ।

आगै श्री दीवाण रै खवास रा वेटा चाचोमेरौ आगै छै । वाई वस्तावर, तिणरै वरस एक दोय गयां आसा रही[6] । रिणमलजी नै वधाई मेली—बाई रै बेटौ हुवौ । तिणरौ नाम मोकल दीधौ । मडोवर खवर वधाई आई । तिणनै वधाई दे नाई नै कागद लिखियौ । तिणमै लिखियौ—कागद रा घणा जतन[7] करज्यौ ।

अवै माम आठ नव में हुवां रांणोजी देवलोक हुवा । तरै दुवादसौ[8] कर कवर चूंडोजी टीकै वैमण री तैयारी करै छै । वाजा वाजै छै । तिण समै वाई दोढी[9] पधार वडारण[10] साथै चूंडा नै बुलायौ । कागद हाथै दियौ । चूंडेजी

---

[1] टूटे हुए मन से [2] विदा किया [3] बुलाये [4] विधि [5] पहुंचाने के लिए [6] गर्भ रहा [7] यत्न [8] मृत्यु उपरांत १२ दिनों पर की जाने वाली रस्म [9] ड्योढ़ी दरवाजा [10] नाम दासी ।

कागद हाथ रौ लिखियौ दीठौ । मोचियौ—

रज पळटै दिन ही घटै, सूर पळट्टै छांह ।
सूरा हदा बोलिया, वैरा पळट्टै नाह ।।

वचन छळियौ बळराव, वचन कैरव कुळ खोयौ ,
वचन करण दीय कवच, वचन पंडव वन जोयौ ।
वचन काज श्रीराम लंक वभीषण थप्यौ ,
वचन काज हरचंद नीच घर नीर समप्यौ ।
श्रे मोहि वचन वैताळ कहि, कर गहि जीह सु कट्टियै ,
जळ जाउळ छवि कमनि सुण, बोल वचन क्यू पळट्टियै ।।

इसौ विचार कह्यौ—माजी, थे मांहै विराजौ । अवै राजपाट सौ मोकल रांणाजी रौ छै । हू जितरै मोकल रांणौ मोटौ हुई, घोड़े चढै, सावळ[1] झालै[2] इतरै परधान रौ काम देस रौ चलास्यू । इण भात कहि मोकल नै ले बारै आयौ । सिंघासण वैसाण टीकौ दीधौ । मेवाड माहे आण मोकल री फेरी[3] ।

तरै चूडेजी उमराव एक साख पवार में छै, नाम महपोजी छै, तिणनै परधांनगी दीधी । तिको परधान मोकलजी भेळौ अरोगै । एकण झारी पांणी पीवै । जोर घणा मे परधान चालै । पिण मोकल मन मे पायौ जाई[4] । पाण लागै नही । अवै आ बात मडोवर मे हुई । रिणमलजी अमल माठौ सुणियौ जरै रावजी चित्तोड साथ लेनै सिधाया । मोकल सू मिळिया । विराजिया छै ।

तिण समै जळ अरोगण सारू गगाजळी आई । मोकलजी जळ अरोगियौ, तिण हीज सू राव रिणमलजी अरोगिया । तरै पवार जळ पीवण नै झारी मांगी । तरै रावजी आपरी झारी पवार नै बगसी, कह्यौ—म्हैं थानै खवास[5] सूधी झारी बगसी नै एक बात साभळौ[6]—थे श्री दीवाण रा वडा उमराव, कांम रा कोट[7], पिण श्री दीवाण री गगाजळी अरोगण री सू थांनै जळ पीवणौ नही । तितरै भुजाई हुई[8] । तरै दीवाण नै रावजी तौ भेळा वैठा नै पंवार सारू जूग्रो[9] थाळ दीधौ । तरै पवार मन मे घणौ रिसाणौ[10] । मन माहै आवळी पीपळी चढै

---

[1]भाला विशेष [2]पकड़े [3]मोकल की हुकूमत का ऐलान किया [4]मन ही मन नाराज होता है [5]पास रहने वाला नौकर [6]सुनो [7]मुहावरा—प्रधान कार्यकर्ता [8]खाना तैयार हुआ [9]जुदा [10]नाराज हुआ ।

उतरै[1], पिण जोर चालै नही, मन मांहै रीसाणौ। तरै पंवार रात पड़ियां आपरौ साथ खजांनौ ले नै रिमाय नै निकळियौ। किण ही मनायौ नही। तिकौ उठा सूं छांडि दिल्ली गयौ। तठै राज सिकदर पातसाही करै, तिणरै चाकर रह्यौ।

अबै रिणमलजी मोकल रौ विवहार बांध[2] चाचामेरा नै प्रधांनगी सूप पाछा मंडोवर आया। अठै मोकल रै आगै चाचोमेरौ चलावै छै। श्री मोकल रै कंवर एक हुवौ। तिणरौ नांम कुंभौ दियौ। तिकौ वरस आठ में या नव में हुवौ छै। तिण समै दिल्ली वैठे पंवार अकल उठाई। लकड़ी एक आगै पाछै मुछाई[3], घणौ आछौ रंग दिरायौ। चीतोड मोकल नै मेली। कागद एक घणी मनुहार सूं लिखियौ। तिणमे लिखियौ—अठै पातसाहजी थांसू कोप मे छै। तिणसूं लकडी एक रगाइ राजि कन्है मेली छै, तिणरौ गोढ[4] कहि मेलावजो[5]। तरै बीजै दिन चाचोमेरौ आयौ। तरै मोकलजी कह्यौ—राजि हकीकत सुणी-हीज हुसी। पातसाह रौ कागद नै लाकडी एक मेली छै नै गोढ दिसा पूछायौ छै। सो राजि वडेरा पुखता छो, घणी दीठी छै, तिणसूं म्हानै तौ गोढ री खवर नही। राजि सूं खवर हुसी। तरै चाचेमेरै कह्यौ—इणकी निगेह म्हे देस्यां। तरै चाचेमेरै डेरै जाइ, पाणी माहै लाकडी नांख, गोढ री खवरि पाडी। तरै चीठी एक गोढ रै बाध पाछी मेली। तिका दिल्ली पोंहती[6]।

पंवार सुणियौ तरै पाछो चाचामेरा नै कागद लिखियौ, तिणमें घणी मनुहार लिख छेहडे लिखियौ—म्हे तौ राज रा रजपूत छा पिण लाकडी रा गोढ दिसा[7] अठै थांहरौ हासौ[8] जोर हुवौ। जे सानी रौ अंम जारा लकडी रा गोढ री खवर पडी। मीरा, उमरावा में मसकरी होय रही छै। नै राणंजी राज नै हीज पूछियौ, गाव रा खातिया नै पूछणौ थौ। पिण हू अळगो नै अठै राजि री मसकरी काने सुणा छा ज्यूं ज्यूं जीव मे दुख घणौ हो पावा छां। पिण लूण-पाणी सु जोर लागै न छै नै म्हानै तौ थे वैरी कर जाणौ छौ। पिण थाहरौ मोकलजी घणौ भूडो दिखायो, तिण सु भाई किणही रा नही। इण भांत कागद वाच चाचोमेरौ रीसाणौ[9]। तिण सु मोकल नै मारण री तेवड़ी[10]। तरै

---

[1]उल्टे-सीधे विचार आने लगे [2]राज्य-व्यवहार का प्रबंध कर [3]कटवाई [4]पेड का तना [5]भेजना [6]पहुंची [7]बाबत [8]हंसी [9]नाराज हुआ [10]मार डालने का निश्चय किया।

राणाजी सुं कह्यौ—कदेही सैंहलां नीकळौ[१] नही सो दीवांण पधारौ, काळीयैद्रह विराजज्यौ, म्हे पिण आवां छा। रांणोजी भोळा हुआ, या रौ तरदोज चूक जाण्यौ नही। तरै असवारी कर काळीयैद्रह सिधाया। रागरग हुवै छै, छडबडा खिलबत रा साथ सुं बैठा छै। तिण समै चाचोमेरौ आपरो साथ ले साजबाज सुं चढीया। राणाजी दिसा उनाळा, ऊभी माहे चालीया। तरै राणै मोकलजी देख कह्यौ—आज खातण वाळा विपरीत दीसै, मेळ मे तौ नही। तरै खवास उमरावां रा कंवरा नै कह्यौ—थे कुभा नै ले'र अळगा रहौ। जे चन मेळ देखौ तौ आणज्यौ नै क्युही क्हास[२] चूक देखौ तौ कुभा नै मडोवर ले जाज्यौ। इसी कह्यां सुं कुभा नै आघा[३] सारा ले गया नै आपरी खास खेल मे ऊभौ कुभौ रमै छै। तितरै मेरेचाचै आवतै ही बरछीया सुं पोय लीयौ[४]—मोकल नै।

कुभौ घोड़ै चढि नाठौ। पाछै चाचोमेरौ चढीया नै कह्यौ—जाण न पावै। आगै गूजरी एक, तिणरै सढौ सबळौ। माहे साळ ओरा घणा। परवार घणौ। तठै कुंभौ तिमीयौ[५] आयौ नै कह्यौ—डोकरी माता! दूध-पांणी पाय। तरै गूजरी कह्यौ—कुभा बेटा! माहे चालि, टओवा कौ दूध छै। इण वाटक मैं आंण दीधौ। बेटा कुभा! ओ ताठौ[६] पाणी पीवौ, इण मैं जळ छै। तिण मैं रुचै सु अरोगौ। तरै जळ पीधौ। सुसत जीव मे हुवौ। तरै पूछीयौ—थाहरा अै लवेस, कासुं अेडा? तरै कुभै कह्यौ—श्री दीवांण सुं चाचेमेरै पाट चूक हुवौ[७] नै अबै म्हारै वांसै साथ फौज चढी छै। न्हाठौ[८] आयो छुं। तितरै गूजरी बहूवा बेटीयां नै कहि पाणी रा माट[९] भराया, दही रा माट भराया। तितरै चाचोमेरौ फौज लीया सढा दोळा फेरीया[१०] कह्यौ—काकड़ी रौ चोर माहै छै। तरै गूजरी सामी जाय मिळी। चाचोमेरौ बोल्यौ—थारा सढा माहे चोर पैठौ। गूजरी कह्यौ—म्हे तौ पेसतौ[११] दीसौ न छै नै पेठौ छै नै माहै छै तौ राजि देस रा धणीया आगै कठै जायै? सढौ मोटौ छै नै च्यारूमेर सढा दोळां ऊतरौ, विराजौ ठहाई करौ। जळ सीतळ छै, दही रौ मठौ हाजर छै। तिणसुं उतरीजै। राजि पिण घणी दूर रा ताकीद मे खडीया उतावळा[१२] पधारिया छौ, घोड़ा रै परसेवौ गरमी सु सावण भाद्रवा दाईं मेह वरसै छै ज्यु गरमी वरसै छै। घोड़ां रा तंग

---

[१]घूमने-फिरने के लिये [२]झगडा [३]दूर [४]छेद दिया [५]प्यासा [६]बडा वर्तन [७]राणा को घात से मार डाला [८]भागता हुआ [९]बडा मटका [१०]मकान को चारो ओर से घेर लिया [११]घुसता हुआ [१२]घोडो को तेज दौडा कर।

ढीला करो । वागडाळ[1] करोजे, माहै थांहरो चोर छै तो अबै जाय कठै ही नही। इमी भांत गूजरी जजमाय घोडा सु' उतारीया । घोड़ा री बाग ढीली कीवी । रजपूता हथीयार छोटीया । माचा ऊपर हथीयार मेलीया छै, घोड़ा आगै घास नीरीयो छै । निण समं गूजरी माहे गई । कुभा सुं मिळ नै कह्यो—असवार किसो-एक छै ? कुभै कह्यो—घोडा राज, घोडा हीज मुदाइत, जिणरै घोडा रो अधि-कार हुमी तिण रो राज । रजपूत रो मिणगार घोडा रो असवार पाको[2] छुं । तरै गूजरी उवारणा ले बोली—म्हारा भुहारा माहे घोडो २ छै ज्यारो नांम जै नै विजै छै, तिकण ऊपरा थारा घोड़ा रो पिलाण मेल । एकै ऊपरा चढ नै बीजी घोडी रै फीचा मैं दे नं चढि । तोनै आगला पोंहचसी । तरां कुभै तिण रै कह्या माफक रयुंहीज कीयो । तरै घोडी एकै असवार हुवो नै बीजी रै फीचा मैं दोनी नं सड़ो टाक चालतो रह्यो । तितरै गूजरी बाहर-बाहर कर उठी[3]—जवगारो लीधो, वुळ रो खापण मो गरीवणी री जीवारी[4] गवाय जाय रे, जाय हो चाचामेरा, म्हारी घोडी हेकण नै वाढी, बीजी घोड़ी ले गयो, किथी[5] जाऊ। तिण समै चाचै कह्यो- हारे, जाण न पावै । जिकोई कुभा नै पकड़ै तिणनै लाख रो पटो दीजै । इमी सुण नै रजपूता रो साथ तयारी करै छै, चढण नै । तितरै गूजरी बोली—हो रावता ! घोडा कोई मती मारो, हेकण घोडी नै मारी, बीजी ऊपरा चढ न्हाठो तिणनै आगला पोहचसो पिण वासला[6] तो कदेही न पोंहचै । जिको था ऊभां, दोळा बैठा, विवाण दाई घोडी चढनै गयो तिको थाहरै हाथ कदेही आवै नही । तरै साथ तो चढीयो ही नहीं, चाचो पाछो चीतोड़ गयो ।

ढाकणीयै पहाड ऊपरै गढ करायो । चौफेर[7] कोस २ रै आंतरै[8] पहाड़ ऊपरा वले गढ कराय नै राजथान बांध्यो[9] । ऐकलिंगजी था कोस २ उरै ढाकणीयो गढ छै तठै चाचोमेरो राज करै ।

अबै कुभो जीव रो उबराळयो[10], ऐकल असवारो[11] मंडोवर गयो । तरा रिणमलजी माळीयै बैठा अळगा सुं कुभा नै आवतो ओळखीयो[12] । नितरै आयो रिणमलजी मुं मिळीयो । कुभो गळगळो हुवो[13] । तरा रिणमलजी पूछीयो—

---

[1]लगाम ढीली करो [2]पक्का [3]जोर-जोर से चिल्लाने लगी [4]जीविका का साधन [5]किधर [6]पीछे वाले [7]चारों ओर [8]दूरी पर [9]राज-धानी कायम की [10]बहुत घबराया हुआ [11]बिना किसी साथ के [12]पहिचाना [13]अत्यंत अधीर हो कर करुणा भाव मे गद्गद् हो गया ।

असवार एकलौ वेसलूक मो क्यु ? खातणी वाळां विगाडी दीसै छै[1] । तरै कुंभैजी ज्यु हुई थी त्यु सगळी कही । तरै रावजी दिलासा दीधी, छाती सु भीड़ीयौ नै कह्यौ—

कायरा विखो हालै नही विखो नरिंदा[2] नाहरा[3] ।
साफै भखा सोई करै परभात वळोवळ[4] ।
हाथऊ कून उपाडि मार ढाहै मोताहळ[5] ।
आरभीयौ सोई करै बाथ गिरमेर[6] उपाडै ।
आगै माल अबब करै धमचक दीहाडै ।
थरहरै थाट आगै थका वासै लागी वाहरा ।
कायरा विखो हालै नही विखो नरिंदा नाहरा ॥

इसो धीरप[7] देनै कह्यौ—विराजौ, श्री परमेसरजी म्हुं भला करसी । तरां कुंभौजी वैसै नही, तरै वळै कह्यौ—बाबा ! गादी आवौ, वैसौ । तरै कुंभैजो कह्यौ—नांनाजी ! बैसण नै तौ ठोड नही नै राजि म्हारी वांह संभावौ, चीतोड वैसाणी तौ वैस, नही तौ धरती भेल्यौ आकास नाख्यौ । मोनै राजि विना किण ही रौ आलब[8] नही । तरै रावजी बोल्या—जमा खातर राखौ[9], श्री परमेसरजी थाहरौ एकलिंगजी सोह भला करसी । या कहि, वांह सभाय नै गादो बैसाणीया, रसोडै आरोगीया ।

अबै रावजी रजपूता रौ साथ तेडीयौ[10] । असवार हजार बारै सु चढीया । साथै सामान लीयौ, सखरौ[11] महुरत साफ चालीया । दरमजलै गोढवाड़ पोहता[12] । सादडी अमल कीयौ । तरै रावजी मेवाड रा उमरावा नै कागद परवाना श्री दीवाण रा नाम मोहर सु मेलीया । जिण मे लिखीयौ—जिण ही नै कुंभा रा आटा रा पटा री चाहि होवै तिको वेगो आइ भेळौ होज्यौ नै निको चाचामेरा रा आटा री चाह करै तिको घरा बैठा रहज्यौ तथा चाचा कनै जावज्यौ, म्हे पिण चाचा सु मिळण आवा हीज छा । तरै मोटा मोटा मेवाड़ मे उमराव था तिके आप आपणो सांमान साथ लेनै कुंभाजी रै पगे लागा । रावजी सु मिळीया । तरै उमरावा नै घोड़ा, हाथी, सिरपाव दे दे नै कह्यौ—

[1]नुकसान पहुँचाया दिखना है [2]राजा [3]बहादुर व्यक्ति [4]चारो ओर [5]मुक्ताफल [6]सुमेरु पर्वत [7]धीरज [8]अवलम्ब, सहारा [9]पूरा विश्वास रखो [10]बुलाया [11]अच्छा [12]पहुँचा ।

थाहरै खोळे[1] घरती नै कुंभी छै। चाचोमेरो ढांकणीयें गढ सामान करनै[2] बैठो छै। आपरा साथ सुं श्री दीवांण तौ चीतोड नै सिधाया, मेवाड में कुंभा री आंण फेरी। किलाएक दिन रावजी नै कुंभोजी चीतोड रह्या। पछै सामान साथ लेनैं, मारवाड़ रौ, मेवाड रौ, ढांकणीयें गढ जाय लागा। चाचोमेरो लड़ं, इण भात मास १२ वितीत[3] हुवा, पिण गढ भिळण री वात काई नही। तिण समै 'लेख प्रमाणै लंक गढ लीजै, दईव करै अन दोस न दीजं।' तिण प्रस्तावै एक दिन गढ मे गोहरी[4] रीसाणो। तिवौ हेठो ऊतरीयौ। गढ था चाचेमेरै काढ दीयौ। तिको फोज मुं अळगो[5] नीसरै थौ, तरां रजपूता दीठौ। गोहरी नै पकड़ीयौ, तिको रावजी रै हजूर आण्यौ[6]। रावजी दिलासा देनै गोहरी नै कह्यौ—चाचौ जाणै नही, तुं तौ काम रौ आदमी दीसं छै, तो मे समझै नही। कह्यो छै—जाणपणौ जग दोहिलो, धन काळा ही होइ। सो तुं तौ आछौ ठिकाणा रौ आदमी छै। इण भात दिलासा कर पाघ वागौ दिरायौ, रसोडै जीमायौ। हजूर में चाकर रारयौ। एक दिन रावजी गोहरी नै पूछै—गढ रौ भेद तुं जाणै छै, तिको गढ तोसु आवै।

आळम विज पर्वाम विज गुणगार बेगवै।
लूण जळै धन जूवै नेह गढम गढ भेवै।
अदय धमळ ज्या विणज पर नारि गयौ मन।
सदेसं ओळग चढै विण हाथ करसन॥
जाळंधर विहर वम विम फळ गाळै विग मन जिम।
रिणधवळ वैण इम उच्चरै दान विमाऊ होइ तिम॥*

इण भात आलोच, गोहरी नै पूछीयौ। जरै गोहरी अरज कीधी, कह्यौ—रावजी सलामत! मोरचा तौ भुरज-भुरज टणका छै। तिणमै मामली भुरज दोमं निका नाहरी भुरज कहीजे छै। तठै नाहरी बाधी रहै छै। किण ही भाति नाहरी मारणी आवै तौ भुरज लगाय होई[7]। नहीतर तौ मामान माहै घणो जोर कोई लागै नही। तरै रावजी कह्यौ—नाहरी भुरज चढाव तौ पाधरौ छै। गोहरी बोल्यौ—रावजी सलामत! चढाव तौ पेट पमार छै, नै थेट गया आदमी रै वाधै पग देनै चढै, आगै ऊभौ होइ कांगरो पाकड़ै, इसो करै तौ गड पाकडै[8], भिळै, हाथ आवै।

---

[1] गोद [2] युद्ध का सामान जमा कर [3] व्यतीत [4] गायें चराने वाला
[5] दूर [6] लाये [7] बुर्ज के पास पहुँच सकते हो [8] गढ कब्जे में आवे।
* छप्पय अशुद्ध प्रतीत होता है।

तरा सगळां[1] साथ सांभळ[2] कांन ढेरीया[3] आसग[4] में आवै नही। तरै अमर बारहट बैठो थो तिण कह्यौ—मारवाछात्र ! मोनै हुकम करो, श्री रावजी रै तेज परताप करनै नाहरी साज सुं। जरै रावजी सु तौ हा ना कहणी नायौ। तरै बारहटजी टोप रत अधमण घात वणायौ। माथा ऊपर मेल गढ़ चढीया। आगै चढतां गढ सू काकरौ एक रडक्यौ नै नाहरी चमक नै आवतां रै माथा नै मूढौ घातै ज्यु टोप मूढा मैं आयौ। नै नीचा सु कटारी चलावी[5]। नाहरी रौ पेट फाड नांखीयौ। नाहरी रौ माथौ वाढि रावजी रै आगै नांख्यौ। रावजी गाव सांसण[6] रौ हुकम कीयौ। गांव वीलाड़ै कनै वडो तिका दीनी। तरां पछै रजपूता रौ साथ पाच हथीयार बांध चढीयौ। पेटपसारै चढ़ि नाहरी भुरज भेळा हुआ। रातोरात मांहे आदमी सौ पाच साथै बावीयौ ढोल ले भाख फाटती[7] सवा चाचा सूता ऊपरै तरवारीयां पडी। चाचामेरा नै मार लीयौ। बावीयौ ढोल घुरायौ। श्री दीवाणजी री नै रावजी री फतै हुई। गढ हाथ आयौ। तिण समीयै रौ गीत—

> वैर विमाउवा अनमूध कहै वर युही ताकौ अनडौ।
> सो कोसा घर आगण सिरखौ नैडौ रिणमल नीकडौ॥ १
> पर हस मार लीयै गिर पाधर भोळा साहिब भोरडा।
> अै तो वैर आपसू ऊना अै तो काढ़ै ऊडडा॥ २
> वे वीवास करौ गिर कंदर मरसौ साहिब मोरडा।
> मह पर चाड अभिनवौ मारू तंडल करसी तोरडा॥ ३
> मेरोचाचौ कह्यौ न मानै खूमाणा कर खीजडौ।
> चूडावति अरि नारि चमकै विण बरसाळै वीजळी॥ ४

तठा उपरांत रांणा खेताजी री बेटी रावजी वरछीया री चवरी वाध परणी। बीजा उमरावा री बेटी उमरावां नै परणाई। गढ ऊपरा वरस एक रह्या। तठा सु कूच करि चीतोडगढ आया। कुंभा राणा नै निहकटक[8] राज दीनौ।

रावजी रै साथ कवर जोधोजी तळहटी रै डेरा रहै नै रावजी चीतोड ऊपरै पूल महल, तठै रहै। धणी गुमीयाळी[9] मैं रागरंग गोठा करीजै। थाप-उथाप रावजी री टहुरी[10] सीसोदीया री गिणत काई रही नहीं। तिण समे

[1] सभी [2] सुन कर [3] चुपचाप बैठे रहे [4] हिम्मत [5] चलाई—चारणों को जागीर में दिये जाने वाले गांव के लिये प्रयुक्त शब्द [6] शासन, [7] सवेरा होते होते [8] निष्कटक [9] प्रसन्नता [10] राज्य को जमाना और उखाड़ना रावजी पर आधारित।

दिली बैठा पंवार सुण्यौ—जे राठोडां री हुकम मेवाड मांहे हुवौ। तरां कुंभाजी नैं छांनैं अरजदास्त री कागद मेल्यौ। तिणमें इसौ मचकूर वगाइ लिखीयौ—म्हे तौ थांहरा लूण पाणी सुं गळानळा सूधा भरीया छौ[1]। म्हारी परापत नही। तपस्या मे क्या दोखी दुसमणा रै कह्या सुं श्री दीवाण री निजर माफक छै। क्यां दोसियां म्हांनै हरांमखोर कहि मन माहै भ्रात नांखी[2]। सो अळगा ही बैठां कांई चीतोड री भूडी दीसै तरै जीव दोरौ[3] होइ। तिण सुं श्री दीवांण सीसोदीया किण ही रै माथै पाघ न रही छै। राणा री बेटी वरछीया री चंवरी बांध परणीया राठौड। नैं वळै पग पसार चौभग होइ नैं चीतोड ऊपरा पौढै छै। तिकै राजि राठोड कै वस हुवा छौ। तिको ऐ राठौड़ सगा छै। राज सुं दगो कोई करैला। धरती री वैध तरदार छै। तिण सुं राजवीयां रै देस रौ धणी होइ तिणरै सगौ कोई नही। आपको हुकम चाहै तिण सुं श्री दीवाण समझीया छौ। श्री दीवांण रै भलां हुवै ज्यु करज्यो पिण खानाजादां नै लिखीयौ छै। आगै तो धणीया री रजा।

ईसौ कागद वाच कुंभाजी रा मन मे आई—ज्यौं राठोडा को अमलो फैलो छै नै मोनैं पकड़े कै मारं तौ सीसोदीया किण ही सु उवेलो न होइ। जरां आपरा उमराव वतागरां नैं तेडीया[4]। पूछ्यौ—थानें तौ म्हाका राज की कांई चिंता फिकर नही अर नानौ मामोजी करै सौ हुवै छै। तरै उमरावा कह्यौ—दीवाणा री दादीजी को भाई अर मदत सुं चीतोड फतै कीधी। चाचोमेरौ मारीयौ। तिण सु अरज करा तिका फीको लागै, दुज्यु[5] मन माहे तौ घणा ही वेराजी थका दुख पावा छां। तिण सु श्री दीवाण दादीजी नैं पूछीजै, उवै कांई कहै। इतरी वात छानैं कर नैं उमराव आप आपणै डेरै पोंहता[6] नैं कुंभोजी रावळा में माहे गया। दादीजी सु मुजरो कीयो। एकांत बैस कुंभैजी हाथ जोड्या। कह्यौ—आज राठोडा सारीखा कोई नही, जिण मोनैं गयो राजि दिरायो, तिण सुं मोनैं तो नानोजी मामोजी गिणत मे राखै नही[7] नैं जे बोलां वहां तो मोनै पकडे, मारे। तिण ऊपरा आप मोनै कांई हुकम करौ छो ? तरै बाई बोल्या—बेटा कुंभा आगै यु कह्यौ—'राज पीयारा राजव्यां, भाई रपीया

---

[1]तुम्हारा नमक रग-रग मे रमा हुआ है [2]आपस मे भ्रांति उत्पन्न करदी [3]दुखी [4]दाम [5]बुलाये [6]वरना [7]पहुंचे [8]मान्यता नहीं देते।

ए अखियात सलखहर ओपम, सूधी किणही न सुर असुर ।
कर मेलीयो पोढीयै कटारी, इण हिज मेलीयो पिसुण उर[1] ।
अतपर जाय चूक आहाडां, अमहल हुवै हुवो उखेल ।
रिणमल तेम कीयो रायां गुर, मेळै भूबळ अरु जमदढ मेळ ।

तठै भाटी सतो लूणकरणोत चूक हुवो, काम आयो । तिणरा हाथ लोहा सुं झड़ गया[2] तरै पग रै अंगूठा सुं कटारी आछटी, राणो कुंभो झरोखे बैठो थो, तिकी कटारी उठै जाय नै छिवी । तिण समै रो गीत—

पूगी माळीयै मंडळीकै पूगी, आभ लगै उभारी ।
लूणकरणोत तणी थित लाबी, कलहण बार कटारी ।
पोहर एक रिणमला पहली, पायक रुहिर[3] पखाळी ।
लाग अमासा कुंभै लागी, मांडघणी[4] अतमाळी ।
बैठो चौकै मोयले बैठो, आहाडा रै आधो ।
तिण पर जाय सता ते खळा, बीजळ हुता वाधो ।
राणा चूक अत रिणमला, दैसोता[5] सीह दीठो ।
पग साखा पेलै अतमाळी, वाहुड हुता बयठी ।

रावजी रा कवित्त—

नर निहुड नह सिघ सिघ भुजाई भुवालह ।
अवि तपो मम पहर पहर राणा धरडाळह ।
जळ सिनान मम करस सार[6] सिनान करीजै ।
तीरथ वास मम वास सिवास बैरह रा वसीजै ।
गढ़ कोट अंबारत तोड़ि अरि मोडिम तुनधो भंजरा ।
रिणमल कहै चाडा गरू एह खत्री ध्रम ठकुरा । १
ओळै मम ओदको चरु बोह चाच चाचरवाहो ।
मम जी मोहै कला कटक पारवळि जीमाहो ।
करो हाट मोकळा करण करणां हु साधो ।
गीत कवित्त साभळो मरथ गाठडी म बाधो ।
रिणमल कहै हो राजीया हूवो तिके हेका घडी ।
.... । २
वाढ़ खग तिहारवे दैत दुममण दावटै ।
धरा रूप कोपीयो राण सूठी घर पटै ।

---

[1]दुश्मन [2]कट गये [3]रुधिर [4]जैसलमेर का रहने वाला [5]देश-पतियों [6]तलवार, शस्त्र ।

तेत तिहा वळि त्रिवळ सेन चतुरंग सवायो ।
मोरो मंडाइ महल तेज जाम की जणायो ।
अरि भूप रूप अंधार तिह फोड दह दिस कट्टीयो ।
रिणमल्ल वस दीपग रखा जोधा जोध प्रगट्टीयो । ३*

राव रिणमलजी री-वात सपूरण

*कवित्त छप्पय है ।

राव जोधाजी रै बेटां री बात

७

राव जोधो गयाजी री जात[1] पधारिया। उठै आगरा री पारवती नीमरीया। तरै राजा करण राठौड कनौज रा धणी नू राव जोधो मिळिया। तरै राजा करण पातसाहजी सुं गुदरायो[2]—राव जोधो मारवाड़ रो धणी वडो राजा छै। गुजरात रै मुहडै[3] इणरो मुलक छै नै हजरत गुजरात ऊपर मुहम करण मतै छो तो राव जोधा नू आपरो करो। हजरत तरै पातसाहजी राजा करण नू कह्यौ—राव जोधा नूं पर्ग लगावो[4]। तरै राव जोधो पातसाह सू मिळियो। पातसाहजी राव जोधा नू वात पूछी, तिणरो रावजी जवाव दीयो। पातसाहजी घणा राजी हुवा। मेघाडंवर[5] छत्र, हाथी, घोडा, घणो जवहर, घणो वस्त पातसाह दीन्ही नै कह्यौ—वळै चाहीजै सो मागो। सु तद गयाजी दांण[6] निपट घणो सिनान रो लागतो सु तिणरी रावजी अरज कर नै गया रो दाण छुडायो। पातसाहजी राव जोधा सु कह्यौ—बिचै दोय गढी भोमिया री छै सु थे मारजो। सो जाता तो जतनां रै वास्तै न मारी। वळतां थका विहू गढिया मारी।

> मिळता सवो वीर कुळ मारण, दीवाणो आयो दीवाण।
> जोई जाते तुहारी जोधा, मामी भेट करै सुरताण।

राव जोधो सवत् १५१५, जेठ सुद ११, चिडिया टूक रै भाखर माथै जोधपुर रो गढ माडियो। तद पाथरी सीं भीत थी। पछै पोळ एक राव गागे कराई। पछै राव मालदे सगळो गढ सवरायो। लोहा पोळ री जायगा पैहल वाम रो फळसो थो। राव मालदे पोळ करायी। झरणो राव मालदे करायो। पीरोजी[7]

---

[1] धार्मिक उद्देश्य से यात्रा करना [2] निवेदन करवाया [3] मुँह के सामने
[4] सलाम के लिए भुकाओ [5] एक प्रकार का बड़ा छत्र [6] कर
[7] एक प्रकार का सिक्का।

नव लाख लागी कहै छै। तद रुपिया एक पीगेजी चार लाभर्ता। संवत १४७२, वैसाख वद १४ जन्म, राव सवत १५५१ काळ कियौ।

जोधौ वडौ रजपूत हुवौ। राव रिणमल नू राणं कुंभै मारियौ। तिण वैर[1] जोधै घणा कुंभा मांहै हवाल किया[2]। साथ करनै गाडै वैस नै मेवाड ऊपर उदयपुर ग्रायौ। कुंभौ नास गयौ[3]। पीछोळै राव जोधै घोडां पांणी पाया। रांणा सूं वैर निपट भलौ वाळियौ, तिणरा घणा प्रवाड़ा छै। ग्रा वात जगत-प्रसिद्ध छै।

राव जोधौ हाडां रै परणियौ थौ। जसमांदे बडी रौ नांव घणा गुणा मांहै छै। राव जोधा रै टीकायत[4] कंवर नीबौ हुवौ। बडौ रजपूत हुवौ। नीबै सोजत रौ गढ करायौ। नीबौ सोजत घणौ रहतौ नै जेसौ सीवल तिण दिना सोजत रै जोधपुर दे घणौ विगाड[5] करतौ सु जेसौ सीधल नै नीबौ साङ्ग था। पछै राव जोधै ग्रोकर बोल वोलियौ। कह्यौ—ग्राज सासरै सगाई हुई, वाप नू कोले खळै नही। पछै सीवल जेसै पाली रा वेत[6] लिया। नीबौ सोजत रै जोड[7] सिकार रमतौ थौ। पछै उठै वाहरू ग्रायौ। उठारो चढियौ खीवाड़ा कन्है डोभड़ां रा वड़ छै जठै जेसा नू जाय पहोचौ। नीबौ कंवरपदै हीज मुवौ।

पछै राव जोधा रै पाट केइक दिन वरस दोय सातल पिण राव हुवौ। पछै सातल ही मुवौ। ग्रउत गयौ। एक मुगल सूं सातल कुसांणे कन्है ग्रठै वडो वेढ[8] कीधी। घणी मारवाड री बध छुडाई[9]। तिण थी ग्रौ गडुला रौ गीत गवाणौ। पछै सातल रै नावे सातलमेर रौ कोट करायौ। राव जोधै काळ कियां वांसे[10] राव सातल वरस तीन राव हुवौ। पछै मौत मुवौ। सवत १५४५ टीके वैठौ। सवत १५४८ मुवौ।

कवर वाघा रौ जनम सवत १५१४ पौस वद ग्रमावस। सवत १५७१ भाद्रवा सुद १४ रऊ दिने सेस घडी एक काळ कियौ। राव सूजौ गादी वैठौ।

पडती लिच्छमी रौ नाळेर[11] सूजा जोधाउत नूं मांणसा दोय रूडा साथे मेलण लागा तरै उण फेर कह्यौ—लायक तौ नीबौ छै तरै हरभू रै कह्यौ—नीवा रौ

---

[1]उसका वैर लेने के लिए [2]बहुत बुरी दशा की [3]भाग गया [4]राज्य का ग्रधिकारी [5]नुकसान [6]ऊंट ग्रादि [7]जंगल [8]युद्ध [9]दबी हुई सीमा को मुक्त कराया [10]मरने के पश्चात् [11]जाती हुई राज्य-लक्ष्मी का ग्रधिकार।

उदौ न छै। थे उठै जावौ, नाळेर वधाय लेसो[1]। तरै वाजा वाजसी, तरै नीवा नू खबर हुसी। तरै नीवौ थांनू हजूर तेडसी नै कहसी—सूजा नू हरभू नाळेर मेलियौ सो म्हांनू घरै न जांणिया। इसडो वचन कहै तौ थे आगली वात सांच जाणजो। पछै उण आदमी आय सूजा नू नाळेर दियौ, वधायौ। तरै नीवै इणानूं तेड़[2] नै यूंहीज पूछियौ। यूंहीज काळ कियौ। पछै वेगौ ही[3] राव सूजौ जोधपुर सेणो सो ठाकुर हुवौ। तद भीवोत बडा रजपूत था। कांम री मुदारवर........वेरसल भीवोत माथै थी। संवत् १४६६ माके १३६१ भाद्रवा वद ८ रौ जन्म अर संवत १५४८ टीके वैठो। सवत् १५७२ काळ कियो, काती वद ६।

नीवौ जोधावत टीकायत[4] हुवौ, राव जोधा रै। सु नीवै जेसौ मारियौ तद तीर लगायौ थौ तिणरौ पैंकाम[5] माहे रह्यौ थौ।

साम्वलो हरभू पीर थौ सु राणी लिखमी भाटी जेसा री बेटी हरभू री दोहित्री थी। सु हरभू नै हुणहार री खबर हुती।

सवत् १५८६ मिगसर सुद १, दौलतियौ राव गांगौ सेवकी भागौ। राव सेखौ सूजाउत मारियौ। इण वेढ़ थी अखैराजोता रौ कारण घणौ वधियौ[6]। सवत् १५७२ मिगसर सुद ३ गुरवार पाट वैठौ[7]।

राव गांगौ जोधपुर वडौ ठाकुर हुवौ। बडौ आखडसिध[8] रजपूत हुवौ। घणी आखड़िया वहतौ।

भाजणी परत एकर सू टीकै वीरमदे वैठौ थौ। तद राव गागौ ईडर थौ। पछै राठौड पचायण अखैराजोत भैरवदास चापावत ईडर सु राव गांगा नु तेड़ायौ[9]। वीरमदे नु उथाप[10] नै राव गांगा नू जोधपुर थापियौ। सवत् १५८६ मिगसर सुद १ वीरमदे न सोजत दिरायी। गांगै दौलतिया सु सेवकी वेढ कीधी। सेखौ मारियौ। राव गागै रांणा सागा सु अदावद[11] की। सारण थी रांणौ पाछौ गयौ। राव गागे मूनौ रायमल माराणौ। संवत् १५८८ सोजत

---

[1]गाने-वजाने के साथ रस्म अदा कर के नालेर स्वीकार करेंगे [2]बुला कर [3]जल्दी ही [4]राज्य-गद्दी का हकदार [5]तीर के आगे का हिस्सा [6]बहुत मान्यता मिली [7]गद्दी पर बैठा [8]युद्ध-निपुण [9]बुलाया [10]हटा कर [11]अनबन।

चैत सुद १० लो। संवत् १५६६ रा जेठ सुद ५ राम कह्यो। संवत् १५४० वैसाख सुद ११ जन्म राव गागा रो ।

राव गागा रो सती—भाली प्रेमलदे, पूल्ां भटियाणी, करमेती भटियाणी, सबीरां सोनगरी, चापावाई री मा, श्रै पाच महल सत कियो। श्रै पांच नही वळी—सांखली, माणकदे देवड़ी, लाडी भटियाणी, जेवाता देवड़ी, पद्मावती सीसोदणी ।

राव मालदे री वात

९
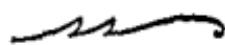
राव मालदे री वार माहे जेमी भैंरवदासोत भागेसर रैं थांणे झूंझीयो[1] । राव मालदे जोधपुर छांड नै विग्रा में सिवांणा रैं भाखर जाय रह्या । सुं जेतौ कूंपो तो वडी वेढ काम आया था, नै तद वडेरां ठाकुरां में रावजी कन्है जेसो भैंरवदासोत हुतौ, तरैं जेमैजी रावजी सुं कह्यो—जे हुं वडी वेढ में कांम न आय सकीयो छु । एकाएक हु धरती रो ·····। तद पातसाही भागेसुर सोजत रो सवळो थाणो थो तिणनु भू वण रो विचार कियो । सुं साथ थोड़ो, तरैं किसनो रांमावत आप पिण महेवचा रैं परणीया था नैं रावळ हापो पिण किसनाजी रो भाणेज थो, तिण किसना नुं राव महेवचा नु तेडो[2] मेलीयो । तरैं रावळ हापो पिण ऊगो, घणो साथ लेनैं आया । पाछैं जेसो भैंरवदासोत, भाटी किसनो रांमाउत, रावळ हापो, ऊगो, ऊरजन पंचायणोत, बीजो[3] ही घणो साथ रावजी विदा कीयो ।

ऐ ठाकुर भागेसर रैं थांणैं झूंझीया । घणा मुगल मारीया । सबळी वेढ हुई[4] । वेढ जेसैजी जीती । साथ रावजी रो घणो काम आयो । रावळ हापो निपट भलो हुवो । रावळ हापा रा रजपूत सो काम आया । ऊगो सिरदार काम आयो । ऊरजन पचायणोत रैं घोडा ५ असवारी रा काम आया । किसनो लोहा पडीयो[5] । वेढ जीप[6] जेसैजी रावजी री हजूर आया । उण धकैं सुं तुरक निवळा पडीया, पछैं वेगा ही रावजी जोधपुर पाछा आया । तिणरी साख रो कवित्त अलू कहै—

> असी लख तोखार[7] लख मैंगळ[8] मदमाता ।
> हाली असीमसद दयत राङग दोमंता ।
> भागेसुर वासु रहि जुडग रिणवड हि जोई ।
> पतसाह मारिसा म्लेछ भूप-इद मरोई ।

---

[1] युद्ध किया [2] बुलावा [3] दूसरा [4] जोरदार युद्ध हुआ [5] शस्त्रों के प्रहार से घायल हुआ [6] जीत कर [7] घोड़े [8] हाथी ।

आयुत पराक्रम आपरैं सतपुरखां राखि सरिण ।
माणो न मल्ल उभैं मयण मुर मुरधर वरतरिण ।

साथ रावजी रौ नांवजादीक[1] जेसौ भैरवदासोत, उरजन पंचायणोत, नगौ भारमलोत घावे उगरीयौ[2] । अभिग्रड देवराज कांम आयौ । रावळ हापौ महेवा रौ घणी घणा साथ सुं आयौ थौ, ऊगो सिरदार रजपूत सौ हापा रा कांम आया ।

वडी वेढ राव मालदे वाळी, मांहे सूर पातसाह रा वडा उमराव लिख्यते—१ जजाल जलूकौ, पाहडखान मयानौ, इभरांम ककड़, न्याजीय्याज हमाउ, हाजी खा, खवास खां, अदली ।

राव मालदे रा ।। सहसौ तेजसी वरसिंघ जोधाउत रौ पोत्रौ मेड़तीयौ वास राखीयौ थौ तिणनुं रीयां वसी नुं[3] दीनी थी । तठै इणरी वसी हुती नै राव वीरमदे दूदावत धरती बाहिरौ[4] काढीयौ थौ सुं सहसै नैं राठौड वेरसी रांणौ अखैराजोत रैं सुख हुतौ । सुं सहसा रैं देवीजी नुं पूजा हुती । सुं वैर-सीह नु तेड़ीयौ थौ सु वेरसीह रीयां आयौ थौ । तितरैं सहसा रैं खबर आई, कह्यौ—सवारैं[5] दिन ऊगतां पंहलो वीरमदे थां ऊपर आवै छै । सुं तद रांणौ अखैराजोत, कूंपौ महिराजोत, भादौ पचायणोत ऐ ठाकुर रडोद थांणे हुता । तठै इणा खबर मेली—दिन ऊगतां पहली वीरमदे म्हा ऊपर आवसी, राज रात थका म्हां माहे भेळा होज्यौ[6] । सुं ऐ ठाकुर तौ रात थका रीयां आया नै हेरू पहली आय गयौ थौ सुं सहसा नुं एकलौ देख नै हेरू वीरमदे नुं जाय कह्यौ थौ । एकलौ सहसौ गांव माहै थौ । तरैं वीरमदे चढ खडीया । रीयां थी नेडा[7] आया तरैं वीरमदे हेरू नुं कह्यौ—गांव तौ भारी लागै छै, एकलौ सहसौ नही । गांव आय लागा तरैं मांहै था ऐ नीसरीया । तठै वेढ हुई । वीरमदे घणुं भलो लडीयौ[8] । मात वरछी आपनुं वाही तिकै उरी खोस नै वाग भेळी, भालीया लडै छै । तठै भादाजी रैं मुहडै आयौ तरैं भादै कह्यौ—म्हारैं माथै सेरा रौ आगै ही घणौ ही आयौ छै । कहौ इण काळा मुहडा रा नैं जिकौ इणनु परो काढे । राव ज्यु त्युं इणरैं उभारै सेर हेक धान दे छै । तरैं क्युं इण ही टाळौ कियौ[9] । तरैं वीरमदे रा रजपूत नैं वीरमदे नीसरीया । भादा

---

[1] प्रसिद्ध [2] घायल होकर बचा [3] बसने के लिए दी [4] बिना जमीन
[5] कल [6] मिलना [7] नजदीक [8] बहुत अच्छा लड़ा [9] बचाव किया ।

पंचाइणोत री इण वेढ घणी भली हुवी ।

घड पिरोडू घात मुं,.सेसा गमिया सुजत ।
भदै आगै भाजता[1], मेल्लीया कुगमात ॥
भिडतै भादिज भंजीया[2], वीरत राइ विभाड ।
वीरडा वीमरमी नही, रीया वाळी राड ॥

राव रा प्रवाडा—सवत १५८८ सिधल वीरम मार नै भाद्राजण लीधी ।

सवत १५६५ राठौड वीदै भारमलोत साथे फौज मेल नै जाळोर लीयौ । संवत १५६२ माह वद २ राठौड कूपा साथे फौज मेल नै नागौर लीयौ । सांन जोधपुर आयी थौ सु सहर वध कीयौ ।

सवत १५६८ रा राठौड कूपा साथे फौजु मेल्ही[3], बीकानेर लीयौ । राव जैतसी मारीयौ । एकर सुं राव जैतसी कोट छांड नै[4] गयौ थौ । पछै कितरेक दिनै साथ भेळौ करनै[5] गाव साहुवं आय डेरौ कीयौ । तठै वेढ हुई[6] ।

सवत १६१८ असाढ वद ३, वळै बीजै फेरै[7] नीहारिया कन्हा जाळोर लीयौ । राठौड़ पत्तौ नगावत गढ चढीयौ । राणा डूगरसी सीवांणौ लीयौ ।

सवत १६०२ रै सावण माहै फलौदी राव मालदे लीधी ।

राव मालदे री वार मांहै राव मालदे राठौड़ अचळा पचाइणोत नु रडोद थांणै राखीयौ थौ । पछै नागौर रा खान नागौर सु ऊपर आय राठौड अचळा नु मारीयौ । पछै रिणमल वैर निपट घणूं दौडीयौ । तरै नागौर वस सकै नही । तरै इतरा गाव अचळा रै वैर माहै दीया । राव मालदे वैर भागीयौ[8] हरसाला ८०००) छिंकणवस, गारावासणी, रायमलवस, आम्बावर्गी, सीहू, टागौ, धिगावस, भाटेरगोहू ७०००) सोहाणौ ५०००) वेरावस भाटे रौ, अवडी, वोडबौ, पीलवणौ, चरवडौ १५००) भोउडा, धरणवाय, चीनडी, जायल ३०००) खजवाणौ १२००) मखवाय ७८००) ।

सवत १५६३ राव मालदे सीरवी गोयद भालीयौ[9] तरै सीरवी १२० टूटा।

सवत १६५३ राव मालदे रुमादे भटियाणी[10] नै जैसलमेर परणीया । संवत १५६५ रुसणौ हुवौ ।

---

[1]दौडते समय [2]विध्वंस किया [3]भेजी [4]छोड कर [5]शामिल कर के [6]युद्ध हुआ [7]दूसरी बार [8]वैर समाप्त किया [9]पकड़ा [10]जो रूठी रानी के नाम से प्रसिद्ध है ।

संवत १६०४ कंवर रामा नु देसोटौ[1] हुवौ। तरै रामा साथे मेवाड़ रै केलवे गई। संवत १६१६ काती सुद १५ राव वासै वळी[2]।

संवत १६६७ गढ कुम्भलमेर राव पैसारै घातीयो। राठौड़ पंचाइण करमसीयोत। राठौड़ बीदौ भारमलोत बीजौ साथ पछै आगलै जाणीयौ, गढ़ हाथ नायौ[3]।

वडी वेढ सवत १६०० पोस मास अमेल खापस विचै आय हुई। समेल आगै नदी छै। तिणरै गिररी बावरै साम्ही, तिणरै उलै कांनै[4] भाखरी दोय छै। तिण विचै हुय रावजी रौ साथ आयौ। उठै भाड छै। तठै सारी रिणोई[5] चौतरा था। हिमै तौ पड़ीया छै[6]। समेल री नदी रै पैलै काने मेड़तीया री छतरी छै। एकर सु वेढ़ कर नै जेतै कूपै वियू ही नदी री तीर सलांमत थकै पागडा छाडीया[7] नै नदी रा पांणी सुं अमल खाधौ, कुरळौ कीयौ। घोडा रा तग खाच नै वळै उपाड फौज माही नाखीया।

राव मालदे ऊपर सूर पातसाह पठाण अर राठौड़ वीरमदे दूदावत आया। वीरमदे दूदावत फौजा लायौ। तरै राव मालदे हरमाडे अजमेर रै सूधौ अस्सी हजार घोडा सु साम्हो गयौ। सु डेरा पातसाह रा नजीक आय हुवा। तरै दोय तीन कोस पाछा कीया। समेल पातसाह रौ डेरौ हुवौ। गिररी राव रौ डेरौ हुवौ। तरै अठै वळै[8] राव एक डेरौ पाछौ करण रौ विचार कीयौ। तरै राठोड जेतै पचाइणोत राठोड कूपा महिराजोत नु कहीयौ। तरै इणे कह्यौ—आगली धरती थे खाटी थी[9] नै अठा वासती[10] धरती थारै मायत नै म्हांरै मायत भेळी खाटी थी, म्हे अठा थी खिसा नही[11]। तरै वीरमदे दूदावत तोत करनै[12] राव नुं भरमायौ।

सांझ री वेळा छै। रात घडी च्यार गई छै। रावजी डेरै में ढोलिया ऊपर पोढीया छै। सूथण पैरोया छै। दुपटी आछी ओढी छै। राठौड़ पतौ कूपावत, राठोड उदयसिंह जैतावत बेऊ रावजी रै ढोलिया कन्है धरती सूता छै। तिसरै राठोड वीरमदे दूदावत रौ चारण आय ड्योढी मुजरौ करायौ। तरै रावजी कह्या—माहै आवो। तरं उण चारण कहाड़ीयो—जु अरज एक वीरमदे कहाडी छै[13] सु एकात कहाडी छै। राज बारै ड्योढी ऊभा रहो। तरै रावजी

[1]देस-निकाला [2]वापस आई [3]नही आया [4]उस ओर [5]अरण्य, जगल [6]टूट-फूट गये हैं [7]घोडे से नीचे उतरा [8]फिर [9]प्राप्त की थी [10]पीछे से [11]पीछे नही हटेंगे [12]कपट, ढोग [13]कहलवाई है।

सूथण पैंरोयां, दुपटो ओढीयां बारै पधारीया। उण चारण सं तणाव कन्है ऊभा रह ने वात कीधी। राठौड़ वीरमदे भूठ वणाय चारण साथे कहाड़ीयौ—ज्यू म्हांनू रावां परा काढीया तो पिण म्हे राज रा पाट[1] नै चावां छां। राज रा रजपूत सोह पातसाह सु मिळीया छै। तरै रावजी कह्यौ—क्यूं जांणीजे? तरै चारण कह्यौ—उमरावां नु पातसाह मोहरा दीनो छै। तरै रावजी कह्यौ—उमराव इसडा नही। तरै चारण कह्यौ—डेरा तौ जोया न जाय पिण साहूकार मेल नै उमरावां रा मोदिया सुं मोहरा मोल करावो। सु साहूकार नु रावजी मेलीयौ। सु आगै वीरमदे मोदिया नु सदवाय मोहरा आपरा मोदियां रा हाथ स राखी थी। सु आण रावजी सु कह्यौ—मोहरां चाहीजं जितरी तैयार छै। तरै रावजी रे मन मे आई सु पाछा आय ने तुरत वागो पहर, कटारी बांधी, तरवार बांधी नै किणही न पूछीयौ ही नही। चौकी री घोड़ी ऊभी थी तिण चढ़ नै आप खड़ीया[2]। कांमदारा नु कह्यौ—डेरो हसम ले नै वेगा[3] आवजो।

तरै डेरो-डाडौ पाडण लागा। आ खबर राठोड पत्ते कान्हावत नु राठोड उदयसिंह जेतावत, राठौड कूपोजी नै हुई। तरै अै ठाकुर मांनै नही। पछै खबर मगाई तरै बीजै ही आय कह्यौ—रावजी सिधाया[4]। तरै कूंपोजी जैतोजी एकण ठौड बेहू भाई आय बैठा। राव री हुसत छुडायो सु ढूढणो। राव रै पाट रौ हाथी थोरडियौ[5], क्यूंही कियां छूटे नही। तरै कूंपेजी, जैतेजी ढूढवाळा सु गोळीए मरायौ। पछै डेरै आदमी मेल खबर कराई। कितरोक साथ नीसरियौ। कितरोक साथ रह्यौ छै? तरै आदमी आय खबर दीन्ही—घणौ साथ राव साथे गयौ। बडा बडा ठाकुर छै नै अजेस[6] घणो ही साथ रह्यौ छै। घोडौ हजार बीस रह्यौ छै। तरै जैतोजी, कूपोजी बेहू ठाकुर जाजम बीछाय बैठा। आलोच[7] कीयौ—कासु कीयौ जोइजै[8]। तरै बडा ठाकुर सोह[9] तेडीया। पूछीयौ, सगळा औ विचार कीयौ। हिमे मारवाड गमाय नै कठै जावा? नै विचार दीठौ—राव मालदे गयौ, साथ वासै थोडौ, दीह रौ[10] वेढ तौ पोहच सका नही। तरै रातीवाह[11] देण नु चढीया। सु कोई दईव रौ फेर हुवौ। सारी रात फिरीया सु नवलाख घोडौ पातसाही लाभै नहीं। इतरै सवार हुवो. पातसाही नौबत वाजी। पातसाही नौबत वाजै, अै पिण फिरता-फिरता समेल

---

[1]राज्यगद्दी [2]घोड़े पर चढ़ कर रवाना हो गये [3]डेरे उठाने लगे [4]चले गये [5]बिगड़ गया [6]अभी तक [7]विचार-विमर्श किया [8]क्या करना चाहिये [9]सभी [10]दिन की [11]रात का अचानक हमला।

रो नदी रै किराड़े आया। राते लाभ नही सु पातसाह नुं वीरमदे कह्यौ—रजपूत डेरा ऊपर आवसी, डेरा उपाड़ौ। सु पातसाह डेरा उपाड़ परै जाय पाड़ीया। तरै समेल रो नदी रै किराड़े आया। पेली पिण चौकी रै साथ दीठा। पातसाहजी पिण तैयार हुवा। अठै वेऊ फौजा कठठ नै[1] भेळी हुई। नगारा वाजीया सु एक अणी[2] पातसाही फौज रौ वडौ एक हरोल[3] इणां ठाकुरा भाज नै कुसळे[4], जैतोजी, कूंपोजी, ऊभा रह्या। पछै जलाल जलूका सुं कांम हुवो। सु जलाल रै जैतेजी वरछी री छाती माहै दीधी। सु जलाल रै पूगी जीणसाल थी तिणसुं वरछी वारै तौ फूटी नही पिण जलाल रौ वरछी रा जाळ सुं पागड़ां माही थी पग नीसरीयौ सु घोडा रा वाळछा[5] ऊपर होय जलाल हेठौ पड़ीयौ, नै वरछो वावता जैतोजी रा घोड़ा रा वेऊ पग भागा—आगला। इतरौ जोर जैतेजी कीयौ। अै ठाकुर कांम आया। वीजो साथ कांम आयौ। राठौड़ जैतोजी वरसे साठ काम आयौ। कूंपोजी वरसे पैंतीस काम आया। राठौड़ पतौ कांनावत इसडौ लड़ीयौ जु पता रा डील[6] रौ लोही पातसाह रै डील लागो। पातसाह आप निपट भलै घोड़ै चढीयौ, वेढ माहीं थौ। वेढ जीतो। पछै पातसाहजी जैताजी, कूपाजी ऊपर आया अर जोया। जैताजी नुं ऊभा कर जोया। राठौड़ वीरमदे दूदावत नुं कह्यौ—दिल्ली री पातसाही गमाई थी, इतरौ इण रजपूते कीयौ। जे कदाचो[7] राव मालदे रह्यौ हून तौ म्हे वेढ हारी थी।

पाच हजार राठौड़ वीस हजार मांहे कांम आया। पन्द्रह हजार लोहड़ा भिळियां[8] पछै नीसरिया। राठौड़ जैतसी वाघोत, राठौड़ जसौ भैरवदासोत, राठौड़ महेस गडसियोत, अै तौ वडा ठाकुर नीसरिया। बीजा घणा नीसरिया। राव नीसर नै पीपण रै भाखरा सीवांणा रो तरफ आया। रिणमलां रा गुडा मगरै हुवा। कूंपाजी री सती सारण माहकाळ हुई।

पातसाह पिण एकर सुं जोधपुर आयौ। सहर री जायगां गांडी की। पोळ री जायगा नळाव करायनी थी तिको तळाव अधूरो रह्यौ। तिण री रांग मजेग[9] नीसरै छै।

---

[1]जोश में आकर [2]फौज की एक टुकड़ी (पलटन) [3]सेना का आगे का भाग [4][illegible] [5]घोड़े की पूंछ के बाल [6]शरीर [7]कदाचित [8]परास्त हुए [9]अभी तक।

पछै वरस दोय विखो[1] हुवो। पछै वळे राव मालदे वरस दोय पाछा जोधपुर पधारीया। इतरो साथ कांम आयो—

राठौड पचायण जेतो अखेराजोत रो, राठौड़ खीवो ऊदा सूजावत रो, राठौड जैतसी ऊदा सूजावत रो, सोनगरो अखैराज रिणधीरोत, राठौड़ पंचायण करमसीयोत, राठौड पतो, कान्हावत अखैराज, राठौड वैरसी, रांणावत अखैराज, राठौड़ जोगो, रावळोत अखैराज, राठौड़ उदयसिंह, अखैराज राठौड, भोजो पचायणोत, अखैराज राठौड़, भानीदास सूरावत, अखैराज राठौड़, हमीर सीहावत, अखैराज राठौड़, वीदो भारमलोत, अखैराज राठौड़, रायमल राठौड़, सुरतांण गांगावत डूगरोत, राठौड़ जयमल, वीदा पखतोत रो डूगरोत, भाटी नीवो अणंदोत।

इतरा नांवजादीक[2] नीसरिया—

राठौड जेसो भैरवदासोत, राठौड़ महेस गड़सीयोत, राठौड जैतसी वाघावत, राठौड उदयसिह कूपावत, ऊहड नेतसी काजावत कोढणा रो धणी, राव रांम जैतमाल फलौदी पोकरण रो धणी।

इतरो साथ गढ जोधपुर रै काम आयो तिण री विगतवार लिख्यते—राठौड़ अचळो सिवराजोत, सिवराज जोधावत रो, छत्री गढ ऊपर मसीत[3] कन्है वहै छै ममारख खान नुं मारीयो। साख 'खाधो अचळ ममारख खान'। राठौड़ अचळा री वहू वालीसी पहली वळी अगूठा माथे।

> अचळ जिका अखियात[4], अगूठी आपे अवळ[5]।
> सायर जा लग साख, साजोता[6] सिवराज उत॥

राठौड़ तिलोकसी वरजांगोत उदावत गढ में छत्री मसीत कन्है—

मालो जोधावत रामा रो भाई, राठौड सोघण खेतसीयोत, नायक जाजण, साकर सूराउत, छत्री पछै भाई कराई। राठौड पतो दुजणसालोत, घरहा रो अरड़कमल चूडो। साख—

> पातळ लग पतसाह, वात हुई विढवा[7] तणी।
> गढ महे गजगाह[8], रहियो दुजनसाल रो॥

---

[1] कष्ट [2] प्रसिद्ध [3] मस्जिद [4] प्रसिद्ध [5] स्त्री को देकर [6] ज्योति-सहित [7] वीर-गति प्राप्त करने की [8] युद्ध।

संवत १६०० सूर पातसाह री वेढ हुई। खवास खान ग्रवलियां नुं जोधपुर रै थाणै देस रै राखीयौ थौ, सु खवासखान ग्राय-जावै रहतौ। सेरसाह मूवौ, तरै जोधपुर रै गढ खवासखान रौ साथ थौ, सु सेरसाह मूवा खवासखान कन्है ग्रायौ। वासे गढ सूनौ थौ सु मंडोवर रा माळिया भेळा होय गढ़ लीयौ। किंवाड जड दीया। राव नुं पीपलण खबर मेल्ही। राव मालदे ग्राय जोधपुर वैठौ।

तरै जोधपुर, सोजत, सीवांणौ, फळोदी, जैतारण, पोकरण, इतरीहेक धरती हुती। पछै सम्वत १६०४ राव मालदे पाछा जोधपुर पधारीया। तद वडेरां ठाकुरां मांहे राठौड जेसौ भैरवदामोत पूछणै प्रधाने[1] हुता। राठौड़ जेसौ भले छोरू[2] ग्रां सु पाळी।

राठौड मांनसिंह जैतावत मुगलां सुं मिळ नै घरै बैस रह्यौ थौ। रावजी रा हीडा न कीया था। सु मानसिंह तौ तुरके तदहोज मारीयौ। चूहड बलोच नै राव जोधपुर ग्राया। सगळा रा पटा सरासरे पाछा दीजण लागा[3]। तरै राठौड प्रिथीराज जेतावत नुं रावजी मानसिंह जेतावत री रीस वगडी दै नही। तरै जेसै भैरवदासोत घणौ हठ कर नै बगड़ी दिराई। प्रिथीराज ही मोटियार था। पछै राणै उदयसिंह रावजी नुं जोधपुर ग्राया सुणीया। तरै ग्राप रौ दाव चितारीयौ[4]। जे राव कूंपै, जेतै, जीवतां म्हांरी धरती मोह खोस लीधी थी। ग्राज राव सचीता[5] छै। म्है कहस्यां त्यु करसी। तरै कटक री मारवाड ऊपर तैयारी कीन्ही। जोधपुर प्रधान सु रावजी तद सचीता छा, राठौड़ जैसौ भैरवदामोत पिण सूमतौ ठाकुर थौ। विचार दीठौ। ग्रांज राणौ उदयसिंह सवळौ[6], म्हे हिमार हीज[7] विसै था ग्राया छां। रजपूत सोह वडेरा वडी वेढ कांम ग्राया छै। ग्राज रै धके खावै[8] रावजी री ठकुराई निवळी पड जासी। ग्रापरौ दाव दीठौ। प्रधान रौ घणौ ग्रादर-भाव कीयौ। रावजी प्रधान रौ घणौ ग्रादर-भाव कीयौ। रावजी री रांणा नुं बेटी परणावणी थापी[9]। नावजादीक हाथी घोडा जुहार देणा कीया नै गाव पचास सोजत रा गोडवाड रा तलक[10] रा देणा कीया। कागळ देणा कीया। लिखणा मांडीयां

---

[1]सलाह देने वाला प्रमुख व्यक्ति [2]सन्तान [3]दिये जाने लगे [4]याद किया [5]चिंतित [6]शक्तिशाली [7]अभी-अभी [8]टक्कर लेने पर [9]निश्चित की [10]तिलक, टीका।

आदमी हालण लागा। तरै राठौड़ प्रिथीराज जेतावत नुं खबर हुई। तरै प्रिथीराज बात उथापी[1]। पछै रांणौ कटक कर आयौ। तरै ग्रेही धिणलै साम्हा गया। रावजी रौ सवोल हुवौ। राठौड़ प्रिथीराज रौ भलौ बोलवाला हुवौ। तठा पैहली कोटडा बाहड़मेर मुं रावजी सिधाया[2] था। साथे राठौड प्रिथीराज जैतावत भीवा था बाहड़मेरा रै बरछी लगाई। सु तद राव मालदे फळोधी घेरी थी। नरा रै राव जैतमाल थौ। सु जैसळमेर रा धणी लूणकरण रावळ री बेटी परणियौ हुतौ सु नरा जाय जैसळमेर मिळीया था। सु रावळ इण री मदद कंवर मालदे नै मारौ साथ भीर मेलीयौ थौ। कटक तौ भाटियां रौ पोकरण उतरियौ थौ नै असवार हजार फिर नै उलटिया। राठौड आप पड़िया सु पोकरण डेरा सूधा आया। भाटी डेरा छाड नास गया[3]। उठै कटक रा ऊठ उछरीया था[4] सु बाहड़मेर रै रावत भीवै लीया तरै राव रौ साथ जेसौ भैरवदासोत नै बाहर चढीया[5]। तरै राठौड़ प्रिथीराज जैतावत ही बाहर चढीया था। सु आगै काम हुवौ[6] तठै प्रिथीराज रावत भीवा रै बरछी लगाई नै पछै आगी[7] री चाल सु लूही—लोही परी कीयौ। पछ साथ डेरै आयौ तरै घणा ठाकुर रातो बरछीया कीयो आया। प्रिथीराज तौ उजळी बरछी लीया आया न समभै तिणै क्युं गिलौ[8] कीयौ। पछै भीवा नु बरछी लागी तिण री खबर नही। तरै मिकी प्रवाडा वहण लागा। पछै भीवौ उबरीयौ। पछै आय मिळीयौ। तरै राव पूछीयौ, तरै भीवै कह्यौ—भूरी मूछ, रौगे डीघौ, ठाकुर, घोडा कमेत रौ असवार मोनु बरछी लगाई। घोडा नै थाप लीयौ[9] तरै कह्यौ—भाई सिर-मोड। तरै प्रिथीराज री खबर हुई। बाहडमेर कोटडा रा धणी पिण रावजी रै चाकर हुआ। तठा पछै प्रिथीराजजी री कारण[10] रावजी रै घणो हुवौ। सेना-पति तठा पछै प्रिथीराज हुवौ। जैसळमेर ऊपर पिण रावजी फौजा मेली थी सु सहर री तळहटी ताईं देस प्रिथीराज मारीयौ[11]। जैसळमेर री वाडीया प्रिथोराज डेरौ जैतसमद तळाव कीयौ थौ। भाट बाग रा बाडीया। तठै प्रिथीराज रौ डेरौ एकण पीपळ हेठै थौ, तिकौ वाढण न दीयौ। तिकौ हिमैं प्रिथीराज रौ पीपळ कहीजै छै। उठै वेढ हुई, तठै प्रिथीराज रौ घणौ भलौ हुवौ।

---

[1]घस्तीकार करदी [2]रवाना हुये [3]भाग गये [4]चरने के लिए निकले थे [5]ढूंढने के लिए निकले [6]युद्ध हुआ [7]चुन्नटदार घेर का एक प्रकार का पहनावा, जामा [8]बुराई [9]थपथपाया [10]इज्जत [11]जीता।

रावळ गढ जड़ नें[1] बैस रह्यो। तिण री साख रो दूहो—

> गा भाटी भाजेह, गोधे गोरहरा तणो।
> तप न सहीयो नेह, जोध तुमीणो जैतउत ॥ १

तठा पछे राव मालदे वळे मेड़तीयां सु ँ रोष चितारीयो[2]। तरै सं० १६१० मेड़ता ऊपर रावजी पधारीया। तद प्रिथीराज जैतावत, चंदो वीरमदेउत, रतनसी खीवावत, नगो भारमलोत, प्रिथीराज कूपाउत अर मांनसिंघ ऐ तो वडा ठाकुर साथै हुतो। बीजो ही घणो साथ हुतो। इड़ावड़ आय डेरो कीयो। जैमल प्रिथीराज नु ँ आदमी मेल कहाडीयो—म्हे रावजी रा रजपूत छां। म्हा कन्हां हीडा करावो[3], कांय म्हानु मारो[4]। इण पिण पांचे ठाकुरे रावजी सु ँ बीणती कीवी, पिण राव चितखंच[5] सु ँ मांनै नहीं। पछै सं० १६१० वैसाख वद २ ढोवो[6] कीयो। राव मालदे आप नै प्रिथीराज नगो भारमलोत ऐ जोधपुर रै फिळसे। इण तरफ श्रो वडो अणी थो। चंदो वीरमदेओत वेढ री वेळा भेळा न हुता। वडागांव उतरीया था, वयूं टाळो[7] कीयो। मातरावसक नै आय भेळा हुआ। रतनसी खीवावत, जगमाल बीजो ही घणो साथ ओ एक अणी बेजपा दिसी हुय कह्यो थो—कोठड़ी आवो। जैमल श्री चुत्रभुजजी री घणी सेवा करता। सु ठाकुर प्रसन्न हुवा। आग्या हुई—तु ँ वेढ[8] कर, थारी जय हुसी। सु जैमल आप वडा अणी रै मूहणे आय आकां मांहे रह्या था। रावळै माथ घणी सो खबर ती ही नही नै जैमल रा आदमी विचाळै[9] फिरता था। तिणे आय जैमल नु ँ कह्यो—प्रिथीराज अणी एकलो बाटै छे। रिणमलां री अणी अळगी छै। माथ ढीलो छै। हिमार तूट पड़ो तो घात छै। प्रिथीराज पिण हमार अणी वांटण थाहरै मुहणे आवसी। तरै इणे अजाणचक री[10] उठावणी कीधी[11]। प्रिथीराज इणा नु ँ दीठा तरै आप पागड़ो छाडीयो[12], आपरी अणी अळगी रही। अठै कांम हुवो। जैमल री सहाय श्री चुतरभुजजी हुआ। प्रिथीराज जैतावत सु ँ वेढ होण लागी। प्रिथीराज वडो पराक्रम कीयो। चवदे जिणा आपरै हाथ पड़ीया[13]। आपरै चाकर हींगाला पीपाडा री तरवार तूटी। तरै हींगाला नु सुरताण जैमलोत री तरवार कड़ीया सु साफ रेसमी थो तिण सूधी लेनै तेड़ नै लेदी। नगो भारमलोत कांम आयो।

---

[1]बन्द कर के [2]शत्रुता याद की [3]काम लो [4]क्यो हमे मारते हो [5]मनमुटाव [6]हमला [7]बचाव, टालना [8]युद्ध [9]बीच मे [10]अचानक हो [11]हमला कर दिया [12]घोड़े से नीचे उतरा [13]हाथ से घायल हो कर गिरे।

चत्रभुजजी आप घोड़े चढ जैमलजी री भीर[1] सार्थ हुवा । रावजी री साथ अणी भागी । रावजी उठा थी खिस नै पाछै ऊभा रह्या । जैमल वेढ़ जीप नै[2] उतावळी हीज पाछौ वळीयौ[3] । कोटडी कनै नजीक पौळ रै मुंहडै आयौ । तिंतरै बीजी अणी इण वेजपा रै फिळसै, गाव भेळ, सहर लूट नै आवतो थो सु जैमल नु पाछै आवतौ दीठौ तरै जाणीयो—उठी था हार नै आयो छै सु इण अणी[4] ने जैमल मामळौ हुवौ । तठै देईदास जैतावत जैमल रै वरछी री देतौ थौ, तितरै रतनसी खीवावत रै मुहडै माहै नीकळ गयौ—राव उबरै । सु उण ठाकुर वरछी वाही नही । जैमल डायल थौ, जाणीयौ—म्है सवळौ बोल बांसै नाखीयो छै । तरै पौळ माहै पैसगौ[5], तिण री दूहो रतनसी खीवावत री साख—

जिण जैमल जुधवार, देम मंडोवर डोहीयो ।
लो आगळ खेमाल, हारवायौ हर्यावार ॥

पौळ आडी देनै जैमल वैठ रह्यौ । ऐ वळै चोहटौ नै सेहर लूट वाहिर आया । आगै खबर हुई—मालदे भागो । तरै उण वात नु हाथ घणा ही घामीया । रावजी मु साथ सातलवस कन्है आय भेळौ हुवौ । तरै राठोड चादौ वीरमदेउत राव मालदे नु घणो ही कह्यौ—अठै हीज डेरौ करो । सवारे ढोवौ[6] करस्या । जैमल नु मार लेस्यां । पिण रावजो रै विचार वात आई नही । तरै डेरौ पाछौ गागारडै कीयौ । तिण वेढ इतरो साथ राव मालदे रो काम आयो । तिण री विगत—प्रिथीराज जैतावत कांम आयो, भलौ लडीयौ, तिण री साख—

त्रिभड वाथा माह, भड बारै बरछी ममूह ।
पीथल विरद गमाह, समहर[7] एता साजिया ॥
कुळ कमध तैयाह, हुवा नर केई भळैह ।
नहो गहीर झुगैह[8], पै सारीखो पीथला[9] ॥

इतरो साथ राव मालदे री वडो वेढ काम आयौ—राठोड प्रिथीराज जैतावत वरस तीस, राठोड नगौ भारमलोत, धनो भारमलोत वेऊ भाई, राठोड जगमाल उदैकरणोत, राठोड धनराज, डूगरसी, मेघो, अभो, रतो, सोहट, पीथो जैतावत, सूजो तेजसीयोत, राठोड प्रिथीराजजी, नगो भारमलोत पडीया।

---

[1] मदद के लिए [2] जीत कर [3] पीछे लौटा [4] फौज [5] घुस गया
[6] हमला [7] समर, युद्ध [8] कोई इतना गंभीर दुर्गों वाला नहीं हुआ
[9] पर तेरे समान हे प्रथ्वीसिंह ।

तरै राव नीसरिया। तरै जयमल रौ चाकर सीसोदियौ मेघौ रावजी नु लोह वाहण नु[1] नजीक आयौ। तरै राठौड किसनदास गागावत, राठौड डूगरसी उदावत जांणीयौ—राव रै बरछी लगावै। तरै उण नु मारीयौ।

पछै आ वात जयमल कितरेक सुणी, तरै राठौड़ किसनदास रावां रै वास आयौ। जयमल रिसाणौ[2]। तठा पछै रावजी जोधपुर पधारीया। तद तिसडौ रजपूत कोई नही, तिण रावजी घणू सचीता[3]। वगडी तौ रावजी प्रिथीराज रा बेटा पूरणमल नु दीन्ही। राठौड देईदास जैतावत तद राठौड रतनसिंह खीवावत रै साथ थौ। वांझाकूडी पट्टै थी। देईदास उठा सू छांड नै रावजी कन्है आयौ। रावजी आदरभाव देईदास रौ घणौ कीयौ। रावजी नू देईदास घणौ वळ वधायौ[4]। रावजी ही जांणीयौ—म्हारै प्रिथीराज री गरज सारसी। रावजी कन्है देईदास हुकम मागीयौ। हुकम करै तौ प्रीथीराज रै वैर एकर मु खड भाजा[5]। तरै घरै आय नै असवार हजार विदा रिडमला रा करनै आय रीयां भ्रत कीधी[6]। सारौ दिन रह्या जयमल नु खवर हुई तरै मेडतीयां रौ चोलावट सोह तैयार हुय चढण नु आयौ। तरै जयमल वरजीया। कह्यौ—आ थानु धणी ही फबी छै। सवारे नगारौ दीरावौ तौ सै जोतारियां रै गाडे भार भरीया देईदासजी मेडता रै नजीक नीसरिया। तोई कोई आडौ आयौ नही। पछै तितरै हाजीखान पातसाह रौ उमराव गुजरात नु नीसरतौ थौ। तिण राणै उदयसिंह अदावद[7] हुई तरै हाजीखान रावजी नु कहाडीयौ—थे म्हारी मदत साथ मेलहौ तौ हु थानु अजमेर दयू। तरै रावजी रै विचार घणौ हुवौ। किण नु मेलस्या ? कुण जासी ? तरै राठौड देईदास जेतावत रावजी नु कह्यौ—हु जायस[8]। राज कामु सोच करौ[9] ? तरै रावजी घणौ ही खुमियाळ[10] हुवा। घणा वखाण कीया। कह्यौ—म्हारै तौ थेइज छौ, पहली मैं पछै सदा मारवाड री लाज थाहरै खंवै छै[11]। तरै राठौड देईदास नु रावजी कह्यौ—जाणौ मु साथ थाहरै साथ त्यौ नै थे विदा हुवौ। तरै १५०० असवार देईदास जाणीया सु टाळमा[12] नाव परनाव मडाया। रावजी घोड़ौ सिरपाव दे देईदास नु विदा कीयौ। इतरा तौ वडा ठाकुर साथै था—

---

[1]प्रहार करने के लिए [2]नाराज हुआ [3]चिंतित [4]सत्कार दिखाई [5]वैर लें [6]युद्ध किया [7]अनबन [8]मैं जाउंगा [9]चिंता क्यों करते हो [10]प्रसन्न [11]तुम्हारे कंधो पर है [12]छंटे हुये।

राठोड़ देईदास जैतावत, राठोड़ जगमाल वीरमदेउत, रावळ मेघराज हापावत, राठोड प्रिथीराज कूपावत, राठौड महेस घड़सीयोत, राठौड लखमण भादावत, राठोड़ जैतमल जेसावत ।

राठोड महेस कूपावत पेलै साथ माहे। तद राणा रा चाकर थका हुता। थोडो विभो[1] जद महेस रै हुतो। गाव एक नीपरड़ पटै मेवाड रो हुतो। तिण वेढ हाथी खोसीजता[2] महेसजी राणा रा राखीया। ले आया तिण सु महेस रो आघ हुवो। पछै गांव सतरह मु राणैजी महेसजी नु वाली दी।

अठा थी राव्रजी रो साथ आयो, तठी थी हाजीखांन आयो। राणो पिण हरमाडै आयो। अठै वेढ री मजाई हुण लागी[3]। तरै राठौड तेजसी डूगरसियोत राणाजी री पैनी फौज माहै थो। मु भाया नु मिळण आयो थो। पछै राणैजी उली फौज रा समाचार तेजसी नु पूछीया—कहो समाचार ? तरै कह्यो—राज पूछो मु कहा। तरै राणैजो कह्यो—पैनी फौज भाजै तो किनरोहेक साथ काम आवै ? तरै तेजसी कह्यो—पाच सै तो राठोड़ काम आवै। नै राणैजो कह्यो—आपणी फौज भाजै तो किनरोहेक साथ काम आव ? तरै तेजसी कह्यो—आदमी पाच सात काम आवै। तरै राणैजी कह्यो—आपरा भाया रो निपट पूरो बोलो छो। तरै कह्यो—तेजसी ! आ वेगो निवडसी। पछै वेगीहीज वेढ हुई[4]। राठोड तेजसी डूगरसीयोत बदीग्रेवाद[5] जगत-प्रसिद्ध हू हाजीखान सिरदार नु मारू।

पछै हाजीखान पिण हाथी ऊपर लोह री कोठी माहै बैठो। घणा जतन कीया[6]। तौही तेजसी आय हाजीखान नु लोह कीयो[7]। राठोड देईदास जैतावत वाळीसा सूजा नु मारीयो। वेढ हाजीखान राव्रजी रै साथ जीती। राणो हारीयो, नीसरियो। तद राणा री फौज माहै इतरा बीजा देसोत[8] था।—

राव कल्याणमल बीकानेरियो, राव रामचद सोलंकी तोडा, राव दुरगो रामपुरा रो, रावळ तेजो देवळिया रो, राव रामसेराडो जाजपुर रो, राव नारायण ईडर रो, राव सुरजन बूदो रो धणो, राठोड जयमल वीरमदेओत, रावळ आसकरण वासवाळा रो, रावळ प्रतापसिघ डूगरपुर रो, रिणधीर देदो बोसावत काम आया।

---

[1]वैभव [2]छिनते हुए [3]तैयारी होने लगी [4]युद्ध हुआ [5]जिद्द करके [6]बहुत प्रयत्न किया [7]प्रहार किया [8]देशपति।

आ वेढ[1] संवत १६१३ फागण वद ९ हुई, रविवार। रावजी रा साथ री घणी भती दीठी। रावजी री तरफ रो सिंधल देदो रिणधीर काम आया। पछै हाजीखान इणां ठाकरा नुं सीख दीन्ही। रावजी राठौड देईदास सुं घणो भलो मांनीयो। चौरासी गांवा मुं खेरवा देण रो विचार कीयो थो। पछै हुजदारे रावजी नु कह्यो—इणा री घर एकण भांत री छै, एकर सुं पूछै। तरै देईदास नुं हुजदोर पूछीयो—रावजी कहै छै थे वडो काम कीयो। थे चाहो'स[2] थांनुं खेत दा। तरै देईदास कह्यो—म्हांनुं मया[3] करै तो बगडी म्हानुं दिराइजे। तद बगडी गाव असी सुं देईदास नुं दीन्ही। बारह गावा सुं पचीआक पूरणमल प्रिथीराजोत नुं दीन्हो।

तठा पछै कितरेक दिने वेगीहीज मेड़ता ऊपर कटक कीयो[4], राव मालदे। जयमल मेड़तो ऊभो मेल नै[5] नीसर गयो। राव मालदे मेड़तो लीयो। रावजी जैतारण रा डेरा सुं चढीया हुता। वेढ हुई तरै जयमल नीसर गयो। मेड़तो राव लीयो। जयमल रै घरा री जायगा कोटडी पडाई। घर पाडीया। घरा री जायगा मूळा वाडीया[6]। संवत १६१३ मेडतो लीयो।

फागण सुद १२ संवत १६१४ राव मालदे मालगढ़ मडावणो मांडीयो। नै राठौड देईदास नै पूछीयो तरै देईदासजी वरजीया[7]। कह्यो—मैदान रो गांव छै। मेडतीया इणरा लागू छै। सामता[8] मेड़ता ऊपरां कटक आणै छै। कोट हुसी तरै च्यार माणस अठै रहसी। तिणनुं मुवो जोईजसी[9]। नहीतर बुलावसो तरै उरा आवसी। पिण राव मालदे देईदास रो कह्यो मांनीयो नही। तरै संवत १६१४ मालगढ मडायो। संवत १६१६ पूरो हुवो।

गढ कराय नै राठौड देईदास जेतावत नुं कह्यो—थे मालगढ थाणै रहो। तरै देईदास कह्यो—सवारे मेडतीया फौजा ले आवसी। तरै थे मोनुं कहस्यो—हिमै उरो आव[10], तरै हु नही आवसू। तिण वास्तै थे बीजा नु राखो। तरै रावजी कहण लागा—मेडतो पातसाही कटकां रै धका रै मुंहडे, मेडतीया मवळा[11] लागू छै। बीजो इसड़ो कुण छै जिको रहै? रावजी घणो हट कर नै देईदास नु मेडतै थाणै राखीया।

---

[1]युद्ध [2]जो भी चाहो [3]कृपा [4]फौज भेजी [5]ज्यों का त्यों छोड़ कर [6]मूली आदि बोये [7]मना किया [8]लगातार [9]मरना ही पड़ेगा [10]वापिस आ जाओ [11]सशक्त।

सवत १६१६ मेड़तीयो जयमल दरबार जाय नै सफरदीन सिरदार पातसाही फौज दरबार सु विदा हुई । तरै राव मालदे नु खबर हुई । तरै कवर चन्द्रसेन साथे राठौड़ प्रिथीराज कूपावत, मांनसिघ अखैराजोत, सांवळदास वरसिघोत मेड़तीयो, बीजो घणो साथ दे'नै फौज मेड़तै मदत मेल्हो । देईदासजी नु चंद्रसेन साथे कह्यो—गम आवै तो वेढ करज्यो, नहीतर[1] देईदास नु उरो ले आवज्यो । चंद्रसेन मेड़तै आया । पैली फौजा पिण नजीक आई तरै चंद्रसेन विचार कीयो—जे वेढ़ री गम नही । फौज पातसाही सबळी । तरै देईदास नु कवर चन्द्रसेन कह्यो—हालो, आपे रावजी री हजूर जावां । तरै देईदास कह्यो—म्हे तो रावजी सु तद हीज अरज कीधी हुती—कोट मत करावो नै मो नै थाणै मत राखो । काले प्रिथीराज इण भात मेड़तै कांम आयो छै । हुं मेड़तो ऊभो मेल्ह आवतो भलो न दीसू । चंद्रसेन तो देईदास नु घणो ही समभायो पिण देईदास मुरड नै[2] मालगट पैठो[3] । तरै राठौड़ सांवळदास वरसिघोत देईदासजी सु कहाव राते हुओ । तरै आपरो वसो[4] कठैक नजीक थो तठै गया था । चद्रसेन पाछो डेरो सातळवस इदावड़ कीयो । तठै राठौड़ सावळदास वरसिघोत आयो ।

मेड़तै पिण राठौड़ जयमल पातसाही फौज ले नै आयो । तरै वळै चंद्रसेन सगळौ[5] साथ भेळो कर नै विचार कीयो । तरै राठौड़ सावळदास वरसिघोत डधकबोलो[6] ठाकुर थो । तिण कह्यो—हिमै किसो विचार हुवै ? एक रजपूत सगैरो रजपूत देईदास थो—तिण बिचार कीयो—था कन्है कुण रजपूत छै ? एक कांणीयो, एक वाणीयो छै, सु काणो मानसिघ सोनगरो थो नै राठौड़ प्रिथीराज कपावत छिल्लगो[7] थो तिणनु सावळदास वाणीयो कह्यो । पछै बात तिनवादी हुई । सकोपरा[8] ऊठिया । वासे राठौड़ प्रिथीराज कूपावत, सोनगरा मानसिघ । राठौड़ माडण कूपावत वाळो काम री सावळदासजी माहै खामी थी, तिण वात रो गिलो कीयो[9] ।

तरै सावळदास रो कोई चाकर केवागोण उभो थो तिण सांभळीयो[10] । तिको जाय सावळदास सु डेरो कीयो थो तठै विढीयो । जे तू इमड़ी वात

---

[1]वरना [2]जिद् कर के [3]मालगढ़ में ही रहा [4]रहने का स्थान [5]पूर्ण
[6]बढ़-बढ़ कर बातें करने वाला [7]ढीला-ढाला सुस्त [8]क्रुद्ध हो कर
[9]बुराई की [10]सुना ।

हळवी[1] उण ठाकुर नुं क्युं कहै ? तरै सावळदास कहण नै कह्यौ—उवै पिण कहै छै, सांवळदास सारिखो खांमी म्हां माहै अजेस इसडो कांई न छै। आ बात साभळ सावळदास रै डील आग लागी। डेरा थी ऊठ नैं दरबार आयौ। प्रिथोराज मांनसिंघ नु सावळदास कह्यौ—थे म्हांरी गिलौ कीयौ सु भलौ की। एक उवा तथा मोनुं लागी मु जगत जाणै। हु तद ही नीसरुं तिसड़ौ रजपूत न थौ पिण कूपा रै धरम मोनु ठेल काढीयौ। नहीतर माडण नुं भाईवध रौ प्रायचित[2] लागत नैं अजेस क्युं गयौ न छै।

राव री दरबार जुड़ीयौ छै। माहै वडा वडा रजपूत छै। देईदास घणा रिणमला सुं कोट माहै छै। दोळी मुगला री फौज छै। आपे चाल सुं चाल बाध कोट जावा। कै तौ मुगला नुं मारनैं देईदास भेळा हुवा। म्हारी ही मीढ करै[3] सु उरौ आवै। हुं साथळ मुं साथळ बाधू। सुं चद्रसेन तौ कूच कर नै जोधपुर गयौ। सावळदास आपरौ साथ दिन दोय तीन माहै भेळौ कर नै पातसाह री फौज नु भूवणौ[4] विचार कीयौ। तरै राठौड़ देईदास नु पिण सांवळदास कहाड़ीयौ[5]—हु आय सकू छुं तौ राज कन्है आऊ छुं। पौळ रा किंवाड़[6] खोल रखावज्यौ। सु सावळदास पातसाही फौज ऊपरा रातीवाह दीयौ[7]। तठै घणौ साथ पातसाह रौ लोग मारीयौ। चवदह सिरदार मारीया। चवदह सिरदारा रौ डेरौ उपाडीयौ। चवदह सिरदार घणौ लोग मारीयौ। तठै राठौड़ सांवळदास रै पिण पग रै झटकौ सबळौ लागौ। बीजौ ही साथ घणौ घायल हुवौ। तरै रजपूत सावळदास नुं समझाय नै चाकर ले नीसरिया। सवारै[8] जयमल आय सफरदीन नु पुकारीयौ—जे इण वात माथै राठौड आया तौ सामता वारीयां नायसी[9] तौ आपे अठै टिक सक्सा नही। कै आवौ वांसे चढ़नै सावळदास नै मारा। तरै जयमल सफरदीन नुं लेनै रीया सांवळदास नै आय पोंहतो। उठै काम हुवौ[10]। सावळदास निपट भलौ लड़ीयौ। सावळदास रीया कांम आयौ। राठौड़ देईदास तौ मेडता रौ कोट झालीयौ। पछै राव मालदे रा मागता देईदास नु आदमी आवै। जे तूं थाहरौ नाव करै छै पिण म्हारौ सोह वध आज वीगड़ै छै। आज तौ मुवा म्हारौ राज पातळौ पड़ै छै[11]। नै राठौड़ देईदासजी जैतावत

---

[1] हल्की [2] प्रायश्चित्त [3] मेरी तरह करे [4] युद्ध करना [5] कहलवाया [6] दरवाजा [7] रात को हमला किया [8] सुबह [9] लगातार बारी-बारी से आयेंगे [10] युद्ध हुआ [11] शक्तिहीन होना है।

मेड़तो मालकोट भालीयो। तद तुरके भुरज पिण एक मोवड़ो[1] लगाय उडायो। तिण पछै वात हुई। आ वात राठौड़ गोपाळदासजी कही। मुगलां देईदासजी सुं बात कीवी। मुगलां कह्यो—थे थांहरो हुवै सु ले नीसरो[2]। नै वासलो[3] सचो[4] मत वाळो। इण भात वात कीधी। सु देईदास वांमलो संचो बाळ दीयो। मफरदीन न जयमल आय पोळ बैठा। देईदास मगळा साथ सु चढ नीसरियो। बदूक एक रावजी रा हाथ री देईदासजी रा मूंहडा आगै एक चाकर लीयां जातो थो सु मफरदीन जयमल पौळ बैठा था। देईदास नीसरिया तरै किणही मुगल रै चाकर उण रावजी री बदूक नु हाथ घालीयो नै तिनरै किणही ठाकुर रै घोड़ै लात वाही सु देईदासजी रै पग री नळी रै लागी। पग भागो। तरै किणहीक कह्यो—ठाकुरा री पग भागो। तरै देईदासजी कह्यो—ओ तो एक भागो छै। हु मेड़तो यु मेल नीसरू तरै परमेसर रै घरै न्याव हुवै तो म्हारा बेऊ पग भागै। तिनरै बदूक नुं तुरके हाथ घालीयो। नै उण मोर कीयो। तरै देईदासजी दीठो—बदूक खोसो। तरै गेडी[5] एक हाथ मांवी थी तिणरी तुरक रै माथै में दीवी। सु भेजी नाक माहै नीसरण लागी। देईदास नौ कोट बारै नीसरियो। तरै जयमल मफरदीन नु कह्यो—दीठो देईदास घरम दुवार नीसरै छै। इमडो रजपूत नो न छै, जे कोट छोट नै नीसरै। पिण राव मालदे वार-वार देईदास नु लिखे—म्हारी ठकुराई काय पातळी पाड़, तरै ओ नीसरियो छै। पिण थे देरजो हिमे राव मालदे रिनरो वेगो[6] आवै छै। आपां ऊपरै देईदास ले आवै छै। तरै मफरदीन कह्यो—हिमार[7] हीज मारस्यां[8]। तरै मफरदीन जयमल चढीया। नगारो हुवो। तरै देईदास साभळीयो[9]। मुरड नै[10] वळे ऊभो रह्यो। मातलवम मेड़ता विचै वेढ[11] हुई। फागण वद अमावस मेड़ता रो कोट ग्रहियो, सवत १६१६। केई कहै छै—चैत सुद २, चेत सुद पूनम लड़ाई हुई।

तठै इतरा साथ सु देईदासजी काम आयो, तिणरी विगतवार लिखते—राठौड़ देईदास जैतावत वरस ३५, राठौड़ भाकरसी जैतावत, राठौड़ पूरणमल प्रिथीराज जैतावत रो, राठौड़ तेजसी उरजन पचाइणोत रो, राठौड़ गोयद राणा अखैराजोत रो, राठौड़ पतो कूपो महिराजोत रो, राठौड़ भाग भोजराज सादा

---

[1] बारूद रखने का पात्र [2] निकल जाओ [3] निवास [4] सचय की हुई वस्तुएं [5] लकड़ी [6] शीघ्र [7] अभी [8] मारेंगे [9] सुना [10] क्रुद्ध होकर [11] युद्ध।

रूपावत रौ, राठौड़ ग्रमरौ रामावत, राठौड सैहसौ रांमावत, राठौड़ नेतसी सीहावत, राठौड़ जयमल तेजसियोत, राठौड़ रांमौ भैंरवदासोत, राठौड भाकरसी डूंगरसियोत, राठौड ग्रचळौ भाणेत, राठौड़ महेस पंचायणोत, राठौड जयमल पंचायणोत, पंचाइण दूदावत मेडतियौ, राठौड रिणधीर रायसिंघोत, राठौड महेस घडसियोत, राठौड सांगौ रिणधीरोत, राठौड राजसिंघ घड़सियोत, राठौड़ ईसर घड़सियोत, मागळियौ वीरम, राठौड़ राणौ जगनाथोत, पिराग भारमलोत, तेजसी, तिलोकसी, देदौ, पीथौ, तुरक हमजो, सुत्रहार भवानीदास, जीवौ बारहठ, जालप, चोलौ ग्रासासी—इतरा काम ग्राया ।

पछै राव मालदे मेडता माथै कटक कोई न कीयौ[1] । संवत् १६१८ ग्रासाढ़ वद ग्रमावस राव मालदे बिहारीयां कन्है गढ जाळोर लीयौ । राठौड पतौ नगावत गढ चढीयौ । कवर चद्रसेन ग्राय गढ पैठौ । रावजी तौ गढ देख न सकीया । पछै सवत् १६१६ पोस सुद ६ राव चद्रसेन रै चाकर ग्रकबर पातसाह रै उमराव मिरजा जहन नुं कूची दे गढ री उरा ग्राया । सवत् १६१६ काती सुद १२ सनिसचरवार रावजी मध्यांन काळ कीयौ[2] । तरै चद्रसेन ग्रठै न हुतौ, सिवांणै हुतौ । काती सुद १३ ग्ररुणोदय चंद्रसेन ग्रायौ । काती सुद १३ दाग[3] मडोवर हुवौ । राणी ग्राठ सती हुई । मरूपदे झाली नुं झाल राखी[4] । मिगसर वद २ पाणी त्रिगर पीधां सती हुई । सतिया हुई राव मालदे लारै—झाली नौरंगदे, कसुभा सोढी, इद्रादे चहुवाण, पूरा सोनगरी, जोमा टांकणी, राजबाई जादव, कल्याणदे हाडी, उमा भटियाणी, सरूपदे झाली, जसहड ।

पातरा सती हुई—टीवू गुडी, जीजी, रतनमाळा, चद्रकळा, मदनकळा, रूपमजरी, उळगण, सुदरी, कविराय, जीवू लालड़ी ।

× × ×

राठौड प्रिथीराज जैतावत नुं फौज दे राव मालदे ग्रजमेर ऊपर मेलीयौ थौ । सु गढ ढोवौ कीयौ[5] थौ । पहली ग्रजमेर राठौड़ महेस घडसियोत नुं हुतौ । सु महेस घणा साथ सुं इण फौज माहे पिण हुतौ । गढ माहै तुरक हुता सु ग रै ग्राधीफरै[6] माथ हुतौ । राव उरड़ नै[7] चढीयौ, नै गढ लीयौ हुत[8]

---

[1] फौज भेज कर युद्ध न किया [2] मृत्यु को प्राप्त हुए [3] दाह क्रिया [4] पकड कर रखी [5] हमला किया [6] बीच का हिस्सा [7] जोश के साथ जबरदस्ती घुसा [8] ले लिया होता ।

तितरै किणहेक महेस रै चाकर ऊंचै चढतां महेसजी री आगए कह्यौ। तठै रिणमल पाछमना[1] सा हुवा। कह्यौ—मरा म्हें नै आण महेसजी री, सु किण वासतै ? लिगार हेकज जमीया तित ऊपर घणौ जोर कीयौ। तरै तिण दिन तौ रात पडण लागी। तरै सगळै[2] ठाकुरे प्रिथीराजजी नु कह्यौ—हिमे तौ आथमण[3] हुवौ, सवारे ढौबौ करस्यां, तरै प्रिथीराजजी साथ उरौ तेड़ीयौ[4]। सु मुगले राव मालदे री फौज आह दीठी। तरै राणा उदयसिह नु आदमी मेलीयौ—थे म्हारी मदत करज्यौ, म्हे था नु गढ देस्यां। सु रांणौ उदयसिह आयौ। तरै राठौड़ प्रिथीराज कहण लागौ—हू राणा सु वेढ करीस[5]। तरै बीजे सगळै ठाकुरे प्रिथीराज नु समभायौ। रांणा कन्है साथ घणौ, वेढ़ करीस तौ सगळौ साथ राव रौ मरावसी। आज राव रै तौ ओहीज माथै माड छै। इण साथ मुवै राव.री ठकुराई घणी पातळी पड़सी[6]। रांणौ अजमेर कितराएक दिन रहसी। सवारै सोह साथ वांसै छै, तिकै भेळा कर नै आय अजमेर लेस्या। मु माथ रै ठाकुरे नीठ[7] यू कर नै पाछा आणिया[8]। सु प्रिथीराजजी तौ घणा सरमिदा हुवा। राव री हजूर गया ही नही। वगडी माहै ही गया नही। तळाव डेरौ कीयौ। नितरै राव मालदे मेडता माथै कटक कीया[9]। तरै प्रिथीराजजी घणु ही अजमेर ऊपरा जाण दिसा कह्यौ, पिण रावजी वात मानी नही। तरै राठौड प्रिथीराज मेडतै काम आया।

राव मालदे री वार मांहे[10] मारवाड़ मांहे वडा-वडा रजपूत माख-साख रा हूता। कारणीभूत वात थी। वडा ठाकुर नावजादीक हुता।

जैतौ पचायणोत वडौ टाकुर, वडी पर[11] रौ पाळणहार[12] थौ। राव मालदे नु इधकी ओछी[13] काई करण देतौ नही। राव मालदे जरै गडगडीयौ[14] तरै पाखती बीकानेर, मेडतौ, सिवाणौ, सोजत मु लेण रौ मन कीयौ। तरै जैतेजी नु कहण लागा, तरै जैतेजी कह्यौ—मो थी गोतवदम[15] उपाधां[16] हुवै नही। तरै रावजी मन माहे दलगीर हूण लागा। तरै जैतेजी कह्यौ—थे दलगीर

---

[1]आगे बढने का मन नहीं हुआ [2]सभी [3]सध्या [4]बुलाया [5]युद्ध करूंगा [6]कमजोर हो जायेगी [7]मुश्किल से [8]वापिस लाये [9]फौजें भेजी [10]समय में [11]प्रण [12]निभाने वाला [13]अनुचित [14]जोश के साथ हमला किया [15]गोत्र के व्यक्ति को मारने का अपराध [16]बुरे कार्य।

मत हुवौ, थे कहस्यौ तिकुं कांम करस्या। इसडौ हुं थांनु ''जोड देईस। तरै जैतेजी कूपा महिराजोत नु तेड नै रावजी नु बांह झलाई। रावजी नु कह्यौ—राज कूपा री घणी लाज कायदौ राखजौ, नै कूपा नु कह्यौ—तो नु राव कहै सु काम करे।

वीरमदे दूदावत नै राव मालदे मूळ हीज नाडी विरोध[1] हुवौ। दोलतीया री वेढ हाथी १ नाठौ थौ तिण वासै कंवर थकौ मालदे ग्रायौ थौ। इणे हाथी न दीयौ थौ। ग्रौकर बोलीया[2] था। पछै राव गांगै वेगौ हीज काळ कीयौ। राव मालदे टीकै बैठौ तरै वीरमदे सु तुरत ग्रदावद[3] मांडी। तरै जैतेजी नु वीरमदे कहाडीयौ— राव सु वीणती करौ नै म्हां कन्हां राव रा हीड़ा[4] करावौ। ज्यु थे चाकरी करौ छौ त्यु म्हे ही राव री चाकरी करा। तरै जैतेजी रावजी सु घणौ ही कह्यौ पिण राव मानै नही। पछै एक री वेळा वीरमदे रावजी री घात मे ग्रायौ थौ पिण जैतेजी मारण दीयौ नही। साख—

जग वदीतो[5] राखीयो, जैते वीरमदे केतिहि वार।

राठौड कूपौ महिराजोत बडौ दातार, जुंझार, ग्राखाड़सिध[6] रजपूत, श्री वैजनाथ महादेव रौ ग्रवतार, वरस ३५ मे काम ग्रायौ। इतरा प्रवाडा तौ प्रसिद्ध कूपाजी रा छै—

प्रथम तौ राठौड वीरमदे रा चाकर मेड़ते हुता। मुंगदडौ पटै थौ जद वीरमदे पाली जाय सोनगरां सु झूबिया तद कह्यौ—उघाडै माथै महिराज रौ वेढ वाळौ म्हारै। तद थाणौ विसेस कूपाजो रौ हुवौ।

पछै वीरमदे कन्हा छाड नै[7] वीरमदे वाघावत कन्है वसीया। तिण दिन राव गागै नै वीरमदे रै घणी ग्रदावद[8] थी। तद जोधपुर रा विगाड[9] कूपेजी कीया। घणा गाव मारीया[10]। घणै थांणे झूझीया। कटका नु रातीवाह[11] दीया। सोजत राव मालदे रै हाथ ग्रावै नही। तरै राव गांगै राठौड जैताजी नु कह नै कूपाजी नु रावजी वसाया। पछै वळै रावजी रै कूपोजी सेनाधिपत[12] हुवा। राठौड महिराजजी नु मेरां भारमल भोपतवजी रै धणी माडा कन्है भोजावस छै तठै मारीया। तिण भारमल नु तौ रायमल पखतोत मारीयौ नै

---

[1]ग्रत्यधिक वैर [2]चुभते हुए शब्द कहे [3]विरोध [4]सेवा-कार्य [5]विदित [6]युद्ध-निपुण [7]छोड कर [8]ग्रनबन, शत्रुता [9]नुकसान [10]जीते, कब्जे में किये [11]रात का हमला [12]सेनापति।

कूपेजी मेरा माहै घणा हवाल कीया[1]। घणुं वैर दौड़ीया। घणा मेर मारीया। पछै इतरा गढ कूंपेजी फतै कीधा। नागौर लीयौ। खांन नास गयौ[2]।

रांणा उदैसिंघ सांगाउत नुं राणा सागा रौ बेटौ, पूतळ छोकरी रा पेट रौ वणवीर घणौ साथ लेनै आय घेरीयौ। तद मेवाड रै मदारियै कूंपोजी नै थाणै राव मालदेजी राखीया था। जेसौ भैरवदासोत तद मेवाड चाकर राणा उदैसिंघ रै था। उठै रांणा नुं राठौड जेसा भैरवदासोत नुं कुंभलमेर गढ माहै घेरीया। जोर दवाया। तरै राणेजी जेसाजी नुं कह्यौ—कोई उगरण रौ[3] उपाव[4] ? तरै जेसैजी कह्यौ—कूंपौ मदारियै थांणै छै। कूंपा नु खवर मेल्हौ तौ कूपौ आवै। कूपै आया आंपणौ उवेल[5] हुवै। तरै राणेजी कह्यौ—राव मालदे आपणी धरती नुं राह[6] हुय लागौ छै, नै कूपौ राव मालदे रौ चाकर छै। आंपणी भीर तेडीयौ क्यूं कर आवसी ? तरै जेसैजी कह्यौ—म्हारौ भतीज छै, म्हारै आदमी गया ढील नही करै। तरै ओठी[7] दोय तथा असवार दोय चाढ़ नै मदारियै मेलीया। कूपोजी तुरत चढीया सु रात थका असवार पांचसौ सुं पौहर दोय कुंभलमेर आया। राणाजी रा कटक आडौ सडौ[8] कीयौ थौ, तिकौ कूपोजी दीठौ। तरै जेसाजी नुं कूपेजी पूछीयौ—औ सडौ क्युं ? तरै जेसैजी हकीकत कूपाजी नुं कही। कूपेजी सड़ौ परौ तोडाय नाखीयौ। सवार हुवै[9], वणवीर ही जाणीयौ, दीठौ—जे सडौ तोडीयौ ! तरै उणे खवर कीधी। तरै उणां जाणीयौ—कूपौ आयौ। तरै उवै ही कूच कर नै परा गया।

राव मालदे रै कूपोजी सिरै चौकी हुवा[10]। बीकानेर डीडवाणा सरीखा तखत पटै हुवा। तौही तद रिणमलां रै घरै इसडी वडावड हुती। लवायचौ मिस्राळ जैताजी रौ मेलीयौ पहरता। वडी वेढ सूरपात री काम आया सवत् १६००।

राठोड खीवौ उदावत वडौ ठाकुर हुवौ। भांजणी परत वहतौ थौ[11]। वडी वेढ काम आयौ। गिररी थमी थी।

गिररी ऊपर वसं गढ़, खीवौ साल सळाह।
कमधज वेवा काढिया[12], डाकण धवी डळांह[13]॥

---

[1] बहुत बुरी दशा की [2] भाग गया [3] उबरने का [4] उपाय [5] रक्षा, सहायता [6] राहु [7] सुतर सवार [8] रहने का कच्चा स्थान [9] सवेरा होने पर [10] श्रेष्ठ रक्षक—मु [11] दूसरों की प्रतिज्ञा को तोड़ता था [12] युद्ध किये [13] रणचडी को मांस-पिंडों से तृप्त किया।

दीवाण री वागद किण ही वागड़िया रजपूत नु थी, सु खोवै दवाय लीधी। व्यावर लीया पछै वागड़ियौ वधनौर गयौ। वधनौर लोयौ। पछै रावजी वधनौर गावा ७०० सु खीवा जैतसी नु पटै दीधी।

राठौड जैतसी उदावत वडौ रजपूत थौ। घणी आखड़ी वहतौ[1]। पारकी छठी रौ जागणहार[2], पारकी चाडा[3] रौ मारणहार[4]। राठौडा वडा-वडा दावा वाळीया। कोसोथळ मेवाड रै थाणै राव मालदे राठौड जैतसीजी नु राखीया था। सु रांणौ ऊपर आयौ। सु राणौ भागौ। राठौड सेखौ सूजावत सेवकी री वेढ राव गागै मारीयौ। तद सूराचद रा चहुआणा रै माथै राठौडा रौ वैर थौ, सु सेखै मरतै कह्यौ थौ—राठौड जैतसी उदावत नु कहज्यौ, तेजसी डूगरसियोत नु कहज्यौ, ओ दावौ वाळज्यौ[5]। पछै १५९१ राठौड जैतसीजी सूराचद भूवीया। तेजसीजी चहुण री तैयारी कीधी थी, ता पहली जैतसीजी भूवीया।

सोनगरौ अखैराज रिणधीरोत वडौ रजपूत। पाली पटै। वालीसा सीधलां सू वडा-वडा कांम जीतीया। वडौ दातार, वडौ जुभार, रोटे राव[6] वडो चडा री खाटणहार। सवत् १६०० डी वेढ काम आयौ।

राठौड तेजसी डूगरसियोत वडौ रजपूत, असाक प्रवाडे जेतवादी[7] राव मालदे रै घणौ कायदौ, राठौड डूगरसी वडौ रजपूत ठाकुर थौ। पिण तेजसी वडौ रजपूत, तिण रा घणा प्रवाडा। राठौड तेजसी डूगरसियोत कठैक मेरा सु मामलौ हुवौ[8]। तठै नीसरिया हुता। पहिला हीज पवारा नु चाटसू भूवीया हुता। पवार करमचद मेवाड चाटसू रौ धणी किण ही काम गयौ थौ। पछै वळतै जैतारण री नीमाज करमचद डेरौ कीयौ। तिण दिन नीमाज रौ लोग धापतौ थौ[9]। घर-घर सोना रूपा रा घेहणा[10] था। पछै उण किणहीक नु धरती री हकीकत पूछी। तरै कह्यौ—डूगरसी जैतारण छै। धणी छै। सूंसतौ[11] ठाकुर छै। नै इण कन्है साथ घणौ थौ, तरै पवारे नीमाज लूटो। सोनै सितौ हुवौ[12]। डूगरसी कन्है पुवार गई। तरै डूगरसी वेम रह्यौ। वाहर काई की नहो। तरै पवारे दोटो—अठै तौ खाली मैदान। तरै पवारे जैतारण माथ

---

[1] कई प्रतिज्ञायें रखता था [2] शत्रुओं की मौत को जगाने वाला—सु. [3] पुकार [4] सुनने वाला [5] वैर लेना [6] रोटी खूब खिलाने वाला [7] विजयी [8] युद्ध हुआ [9] सम्पन्न था [10] गहने [11] सामर्थ, जिसकी आज्ञा चलती थी [12] अत्यधिक सोना लूटा गया।

दवाजा कीया, नै परवान दोय मेलीया—म्हानुं बेटी परणावौ, कै म्है जैतारण भूवस्यां। तरै डूगरसी, कहै छै, बेटी पिए परणाई। तद तेजसी जसवंत डूगरसी रै बेटा नाना[1] था। पछै तेजसी मोटौ हुवौ तरै पवारां री वात सांभळी[2], तरै इए वात रौ दरद मन माहे घणु राखण लागा, जे म्हांसु पंवारां घणी बुरी कीवी। परमेसरजी करै तौ ग्रौ वोल वाळु[3]। सु तेजसीजी नै राठौड प्रिथीराज जैतावत रै घणौ सुख थौ। किनरेक दिने चाटसू पवारां नुं भूवणौ विचार मनै-गन[4] कीयौ। एक राठौड प्रिथीराज नुं तेडीया। बीजौ उदावतां रौ साथ कीयौ, कह्यौ—म्है परणीजण जावा छा। सु ग्रठा थी खड़ीया[5]। नागोर रै ताऊसर जाय उतरीया।

एक बुरहान पठाण वडो रजपूत पेहली राव मालदे रै वास थौ[6]। पछै छाड नै नागोर रा धणी रै वास वसीयौ थौ सु बुरहान नै प्रियीराजजी घणौ सुख थौ। सु बुरहान कठी जातौ थौ। सु ताऊसर री पाळ हेठै घणौ साथ[7] उतरीयौ दीठौ। तरै चाकर ऐक नु कह्यौ—खबर करि, जिमडा राठौड मारू हुव तिमडा दीसै छै। तरै चाकर ग्राय खबर की। राठौड प्रियीराज जैतावत छै। तरै चाकर जाय बुरहान इबरास पठाण नु जाय कह्यौ—ऐ ठाकुर छै। तरै बुरहान ग्राय नै इया नू मिळीयौ। तरै इणा ठाकुरा नुं बुरहान पूछीयौ, कह्यौ—थे कठी नु पधारो छो? तरै इणा ठाकुरा भूठौ मिस कर नै कह्यौ—तेजसीजी कछवाही परणीजण[8] जाय छै। राठौड प्रियीराजजी कह्यौ—हु साथे छु। बुरहान पिए राहवेधी[9] रजपूत थौ। इणा रौ सूल ग्रटकळियौ[10]। सिलह-दगलिया[11] पहरिया, बरछीया रा भूल भार, तोरडं रौ डाडो साथे कोई नही। इए भात परणीजण तौ जायं नही। निराहीक नु भूवरा[12] जाय छै नै मोनु न कहै छै। तरै पठाण बुरहान राठौड प्रियीराज नु एकात पूछीयौ। कह्यौ—मोनु काय भूठ कहो, हू तौ थाहरो चाकर छु। तरै बुरहान ही चढ साथे हुवौ। चाटसू गया। फिळसौ भिळै नही[13]। पवारा रौ साथ ही फिळसै ग्रायौ। तरै पठाण बुरहान घोडो नाखीयौ। तिए सु फिळसौ भागौ। बुरहान

---

[1] छोटा [2] सुना [3] बदला लू [4] ग्रापस ही मे [5] घोडों पर सवार हो कर चले [6] मालदे की सेवा मे रहता था [7] जन-समूह [8] शादी करने के लिए [9] योद्धा, राह रोकने वाला [10] इनका उद्देश्य भाप गया [11] छोटे कवच [12] युद्ध के लिए [13] फाटक टूट नही रहा है।

लोहडे पडीयौ[1] । उपाडीयौ । इणे ठाकुरे घणो साथ पवारां रौ—सिरदार, रजपूत मारीया । राव जगमाल तौ नीसरियौ । कोटड़ी भेळी । सहर लूटीयौ । हाथी नव आया । कुसळे खेमे पाछा आया । हाथी राव मालदे नु मेलीया । साख—

सार पंमार सघार[2], तैं आणीया तेजसी ।
दीपै मात दुवार, सिंधुर[3] डूगरसीह उत ॥
निहम सजि नीबाज, करमचद कीधा हुता ।
ऊह विराकज आज, उहस तेजल आवीयौ ।।
गाया जु वैर गडत, ऊदा ही वरअगि ।
ताय निहसे निभ्रत, तें भागेवा तेजसी ॥

पछै वळै मास च्यार नै तेजसी चाटसू ऊपर कटक कीया । तरै पवारा रा परधांन जैतारण आया, कह्यौ—म्हे जिसड़ी गैर कीधी थी[4] तिसडी सजा पाई । हिमे परणीजौ नै वेर भाजौ[5] । तरै तेजसी डूंगरसीजी नु वैर भागण दिसा पूछता था, तरै क्युं डूगरसीजी रौ मन परणीजण सुं तेजसा दीठौ । तरै डूगरसीजी नु परणीजण दिसा पूछायौ । तरै कहण लागा—तुं परणावै तौ म्है काय न परणीजा ? तेजसी पवारा रै परधान सुं कहाव कीयौ[6]—जु थे तद गैर डूगरसीजी सु कीधी थी, तिणसुं थे हिमै डूगरसीजी नुं परणावौ तौ म्हे वैर भाजा । तरै उणा परधाना कह्यौ—डूगरसीजी ८० वरस रा हुवा, सुथण रौ नाडौ ही चाकर बाधै छै । थे इसडी बात काई कहौ ? तरै तेजसी कह्यौ—वैर इण भात भांजसी । तरै परधान पाछा गया । जाय पवारा नु हकीकत कही, तरै पवारां इण बात रौ बिचार कीयौ, ग्रे वैर भाजीजै, जाणसा एक बेटी मुई[7] । तरै परधाना पाछा आय नै कह्यौ—जाणौ तिण नुं नाळेर झलावौ[8] । पछै डूगरसीजी रै नावे नाळेर झलीयौ । वधायौ[9] । पछै तेजसी साथे जाय नै डूगरसीजी नु परणाया । इण भात वैर भागीयौ । राठौड तेजसी पवारा नु नीवाज रै दावे भूवीयौ तद पवार राव जगमाल चाटसू किणही सूल[10] छोडनै आबेर कन्है खोह वसीयौ हुतौ । तठै भूवीया । राव जगमाल घरै न हुता ।

---

[1]घायल हो कर गिरा [2]तलवार से पवारो का सहार कर के [3]हाथी
[4]अनुचित बात की थी [5]बैर समाप्त करो [6]बातचीत की [7]मर गई
[8]शादी का नालेर पकडाओ [9]नालेर स्वीकार करने की रस्म पूरी की
[10]कारण ।

धरती मांहे दुकाळ[1] पडीयौ। तरै राठौड़ तेजसीजी रै खरची री भीड़ घणी[2]। हुजदार ओजा उधारा नु फिरीया। तरै कठै ही क्युं जुड़ै नहीं। तरै हुजदारे वसी मांहे वाणीया लोग मालदार था तिणा रौ माल कागळ मांड नै[3] तेजसीजी नुं कागळ आंण दीखायौ। जे ओजौ उधारौ तौ कठै ही क्युं जुड़ै नही नै रावळी वसी मांहै इतरा मालदार वाणीयां छै तिणरौ आधौ माल रावळै ल्यौ। आधौ माल रहण देज्यौ। माम रौ वळै पिण आधौ नीमरसी[4]। आधौ छोडतां उवै ही नीसरसी, पडपमी[5]। तरै तेजसी कह्यौ—न करै श्री परमेस्वर म्हांरा वसी ना[6] लोगां नु सतावुं। तितरै सीवांणा ऊपर फौज आई। सीवाणौ विग्रहीयौ[7]। तरै राव मालदे कह्यौ—दरबार बैठां कोई सीवाणे चढ़ै तौ आज म्हारी गरज छै। तरै तेजसी कह्यौ—लाख फदिया[8] म्हानुं दौ, म्हे चढस्यां। तरै तेजसी नु कह्यौ—थे गढ़ चढौ। हुजदार[9] थाहरौ अठै राख जावौ। गढ चढ़ीया थाहरी खबर आवसी। तरै लाख फदिया हुजदारा थाहरा नु देस्या। तरै तेजसी तौ गढ चढीया। पीरोजी[10]लाख कोठार रावळा थी तेजसी रा हुजदारा नु सुहालासा गिण दीया। सीवाणौ विग्रहीयौ।

कितराहेक दिन तेजसीजी माहै था। पातसाही फौजा वारै थी। मुगलां रै वासां थी[11] समाचार आयौ—पातसाह मुऔ। उण रात रा वजीया[12]सु उणा नुं दिन मेड़ता री सीव माहै ऊगौ। रावजी रौ साथ सवारे ऊठीयौ, देखै तौ मुगला रा डेरा दीसै नही। तरै दिन एक तौ अचभा में रह्या। तितरै रावजी रौ ही समाचार आयौ—पातसाह मुवौ छै, फौजा मेडतौ लोपीयौ छै[13]। थे उरा आवज्यौ। तेजसीजी आपरी वसी आया। तरै हालती हालती उणां फदिया री वात हाली। तरै हुजदारे चाकरे कह्यौ—फदिया राज घणा ही मेलीया। दुकाळ भूट काढीयौ[14]। पिण फदिया कोठार रा मुहाला गाढा पांच दुगाणी फदियौ हालीयौ। तेजसी दुठ ठाकुर थौ। मन में आ बात रागो—जे म्हारी लाख दुगाणी राव रा हुजदार कन्है लेहणी[15] छै।

---

[1]अकाल [2]खर्चे की बहुत कठिनाई थी [3]दस्त लिख कर [4]समय निकलेगा [5]जैसेतैसे निर्वाह करेंगे [6]मेरे राज्य में रहने वाले [7]टूटा [8]प्राचीन सिक्का जो बादशाह अकबर के समय में मेवाड़ में प्रचलित था [9]कर्मचारी विशेष [10]सिक्का विशेष [11]पीछे से [12]तेजी से रवाना हुए। [13]मेड़ते से आगे निकल गई हैं [14]दुकाल का समय निकाल दिया [15]लेनी।

पछै कितरेहेक दिने तेजसो दरबार आया। पछै एक दिन राव अरोगता था[1]। तद रावजी रै कांम रो मुदार अभा माथै थो। सु रावजी अभा नुं तेडायो[2] थो। तेजसी बारै बैठा था। अभोजी रावजी कन्है जाता था। नितरै तेजसी अभा नुं कह्यो—म्हारी लाख दुगाणी इण विध री लेहणी छै सु देता जावो। सु अभै तो ललोपतो[3] घणी कीधी। कह्यो—थां नुं समझ नै जवाब देस्यां। सु तेजसी कह्यो—दे नै निसज्यो[4]। रावजी वळै अभा नुं चितारीयो[5]। तरै किणहीक कह्यो—अभो पिण तेजसी आवण दै न छै। तरै रावजी पूछीयो—किसै वास्तै[6]? तरै हकीकत मालूम हुई। तरै रावजी कह्यो—तेजसी नुं उरो तेडो। तरै तेजसी रावजी री हजूर आयो। तरै रावजी कह्यो—तु हुजदारां नुं कांय रोकै? क्युं देणो छै तो म्हे देस्यां। हुजदारां नै तो क्यु देणो न छै। तरै तेजसी कह्यो—तो लाख दुगाणी थे दो। तरै रावजी अरोगता रिसाय नै[7] सोना री तासळी[8] नांखी। जांणीयो थो—तेजसी तासळी लेण रह्यो। तेजसी तासळी ले नै डेरै आयो। रावजी बुरो मांनीयो। वास छूटो। बटाव मांहे लोग कहै छै—थाळी तेजसी ली, सु इण भांत लीधी।

वात राठौड तेजसी वीदो विसल मारीया तिणरी—

धरती माहै विखो थो[9]। सगळा ठाकुरां रा गुढा[10] भाद्राजण था। उठै राठौड तेजसी डूगरसियोत रो हो गुढो थो। सु मास च्यार तथा पाच हुवा था। राठौड तेजसी री आंख गाढी दूखती थो, सु हेरू[11] आय देख गयो थो। तठा पछै सिंधल वीदै विसल आय तेजसीजी रा गुढा रो चौपो लीयो[12]। तरै तेजसीजी कन्है कूकाऊ[13] आयो। तरै तेजसीजी असवारा सात तथा आठ सुं वाहर चढीया[14]। सु तुरत आंपडीया। आपडत सवा[15] ऊफोड़ नै भेळा कीया[16]। सु पांच दिन तेजसी एकण आपरा रजपूत नुं आपरा पहरण रो वागो दीयो थो, तिण रजपूत नुं सीधले कूट पाडीयो[17]। तरै उणां जाणीयो म्हे तेजसी नु पाडीयो। तरै उणे उण रजपूत नुं पाड़ नै किरली[18] कीधी।

---

[1]भोजन कर रहे थे [2]बुलाया [3]इधर-उधर की बातें [4]दे कर जाना [5]याद किया [6]किसलिए [7]नाराज हो कर [8]खाना खाने का सोने का बर्तन [9]कष्ट और अशांति थी [10]डेरे [11]जासूस [12]गायें वगैरह ले गये [13]पुकार करने वाला [14]चोरों के पीछे रवाना हुये [15]नजदीक पहुँचते ही [16]मुठभेड हो गई [17]घायल कर के गिराया [18]चिल्लाहट।

कह्यो—म्है तेजसी नुं पाड़ीयो। तितरै तेजसी नुं पिण घोड़ै पाडीयो। सु तेजसी पडीयै थकै साभळीयो[1] तरै तेजसी कह्यो—हुं अठै छुं। अो म्हारो रजपूत छै। हू तेजसी डूगरसियोत। तरै सीधल वीदो तेजसी ऊपर आयो। तितरै तेजसी पिण घोडा हेठा सुं पग काढ नै ऊठीयो। सु उठत समा[2] वीदा री छाती मांहै तेजसी बरछी री दीधी। सु करक[3] मांहै नीसरी। तरै बीजे भाई वीसळ जांणियो, हुं वांमां थी झटको वाहमु[4]। वीसल आगो घसीयो। तेजसी वीदा री छाती मांहै बरछी री दीधी थी सु आछट नै[5] काढता था सु वीसल री नीलाड़[6] माहै लागी। सु वीसल री नीलाड़ फूट नै भेजे नीसरी। वासा नुं वीसल पडीयो नै आगा नुं वीदो पड़ीयो। तरै दोना ही नुं चाकर घीस नै लीया। ले नै नीसरीया। वीदो घरै आया मुवो, वीसल नै उठै पाडीयो।

तठा पछै राठोड़ तेजसीजी नै जाळोर मिलक बुढण के अलीसेर भायेला[7] था। भाई पागडीवदल था। गांव वारह सुं सेणो बोड़ां वाळो कोईक दिन रहण नुं दीयो हुतो। सो उठै रहता था। तठा पछै राव मालदे उठा ही सुं तेजसीजी नुं धरती मांही थी परा काढीया। तरै सिरोही रो लास मुणाद गाव छै तठै जाय नै रह्या था। पछै सिरोही माथै गुजरात रै पातसाह महमद री फौज आई। तरै राव नीसरै गयो। तेजसी आय सिरोही झाली[8]। फौज तेजसी आयो सुणीयो[9], तरै परी गई। तेजसी री भलो बोलवाला रह्यो तिण री साख। इण साख री नीसांणी—

माडां राखी महमदे, मरणे[10] सीरोही।

तठा पछै राव मालदे भाद्राजूण मु ही तेजसीजी नु वाढीयो।

तरै सयाणे जाळोर रै गाडा छूटा था। राते चोर च्यार पैस नै पेई[11] एक तेजसीजी रै ढोलिया हेठै सोना री ईटां वाळी रहती सु लीधी। आप नीद माहै था। वहू जागती हुती। चोर आगेरा गया[12] तरै वहू जगाय नै कह्यो—पेई चोर ले गया। तरै आप तरवार, गेडी झाल नै वासे हुवा[13]। घाटी री गम थी[14]। तठै पहला जाय बैठा, छाना। तितरै चोर आया। सो तीन तो तरवार

---

[1]सुना [2]उठते समय [3]रीढ की हड्डी [4]पीछे से तलवार चलाऊंगा [5]झटका देकर [6]ललाट [7]मित्र [8]सिरोही पहुँचा [9]तेजसी के आने का सुना [10]शरण में [11]पेटी [12]दूर गये [13]पीछे गये [14]इल्म।

सु पाड़ीया नै इण भांत लोह वायौ[1], आगलै जाणीयौ नही। पछै चौथौ पेई वाळौ नाठौ[2], तिण नु छूटी गेडो वाही सु कडिया[3] माहै भागौ। गेडी दोळौ विटाणौ[4]। च्यारा नु मार नै पेई एक झाड माहै घाल नै आप आय सूय रह्या।

सवारे गुढा माहै सोर हुवौ। आप ही वाहर साथे हुवा। पगे पगे गया। देखै तौ चोर च्यार मारीया पड़ीया छै। गेडी पडी छै। तरै सगळै जाणीयौ—अै तेजसी मारीया।

गुजरात रै पातसाह रै तेजसी चाकर थौ। उठै ही कामे अरथे तेजसी रौ घणौ विसेस हुवौ। पछै अहमद पातसाह नु बुरहानदी गुलांम मारीयौ। पछै उण उमराव पिण आठ दस मारीया। पछै उणनु तेजसी मारीयौ। पातसाह मुवौ तरै उणरौ माल उमराव तीन विहच लेता था[5]। तिण समय माहै तेजसी उठै गयौ। तरै उण तीने ही उमरावे आपथा हीज विचार नै उण वित्त रा च्यार हिस्सा कीया। एक हिस्सौ ले तेजसी नु दीयौ। तेजसी उरौ लीयौ[6], नै ऊठता थका एक सोना रौ मूसखौ नै एक पागौ रुपा रौ ढोलीया रौ इधकौ[7] लेता ही ऊठीया। तौही उण उमरावे आघौ काढीयौ[8]।

पछै कितराहेक दिने राठौड तेजसी राणा उदयसिंघ रै वास वसीया। तिण टांणै[9] राठौड प्रिथीराज जैतावत मेड़तै काम आया। सु प्रिथीराजजी चवदह आदमी आपरै हाथ पाडीया। तरै दीवाण रै दरबार प्रिथीराज रा घणा वखांण हुवा[10]। कह्यौ—जैता रै वेटै घणा रजपूता नै चाणक लगाई। कुण हिमै चवदह आपरै हाथ पाडै, जिकौ प्रिथीराज मरीखौ कहीजसी? तरै सगळै ठाकुर कह्यौ—आ वात यु हीज।

राठौड तेजसीजी नै रांणैजी पटौ दीयौ। तद गोठ मांहै गाव घुलोप पटै हुतौ। तठै तेजसीजी री वसी[11] रासी थी नै राणाजी री हजूर आया था। आप वैठा था, रांणाजी रै दरबार जुडीयौ थौ[12]। तठै प्रिथीराज री वात चाली। तरै तेजसीजी कह्यौ—एक गिरदार मारीयौ न छै। इतरी गळौ रासी

---

[1]शस्त्र चलाया [2]भागा [3]कटि कमर [4]लकडी के साथ लिपट गया [5]आपस मे बाट कर ले रहे थे [6]ले लिया [7]बढिया, असाधारण [8]जाने दिया [9]उस समय [10]बहुत तारीफ हुई [11]रहने का स्थान [12]दरबार लगा हुआ था।

छै[1]। तरै मेवाड़े ठाकुरे किणही दो मुंहडा जोड़ीया[2] नैं कह्यौ—तेजसीजी सिरदार नुं मारसी।

पछै वेगोहीज रांणाजी ऊपर हाजीखांन आयौ। राठौड देईदास जैतावत राव मालदे री फौज वडी साथ ले' नै हाजीखान री भीर आया था। राव मालदे मेलीया था। रांणा उदयसिंह रै पिण घणौ साथ भेळौ थौ। इतरा तौ बीजा देसोत[3] राणाजी री भीर था, भेळा था। राव कल्यांणमल बीकानेरियौ, राव सुरजन बूंदी रौ धणी, वासवाळा डूंगरपुर रा धणी वेऊ[4] रावळ था। राठौड जयमल मेडतियौ थौ। पछै हरमाडा नजीक वेऊ तरफा सु वेऊ फौजां आई। तठै हरमाड़े खेत वुहारीयौ[5]। परधांन राणेजी हाजीखांन विचै फेरीया। वात क्युं वणी नही। तरै राठौड तेजसी डूंगरसियोत कह्यौ—दीवाण रा दरवार माहै जिण दिन प्रिथीराज री वात हाली थी नैं म्हैं कह्यौ थौ—प्रिथीराजजी सिरदार न मारीयौ थौ, नैं इतरी वात एक रही छै। तद मेवाड रै साथ म्हारौ गिलो[6] कीयौ थौ। पिण इण वेढ वादियेवाद[7] हाजीखांन नैं मारुं तौ डूंगरसी रौ वेटौ। नैं हरमाड रै खेत डूंगरसी रा वेटा रा महल हुसी। तरै सूजै बालीसै कह्यौ—खोलडी[8] एक पासती म्हेई करावस्या सु आ वात तेजसी कही सु वेऊ कटका माहै उड गई[9]। आ वात हाजीखान ही सामळी। तरै हाजीखान राठौड़ देईदास नुं पूछीयौ—राठौड तेजसी डूंगरसीयोत किसडौ-सौ रजपूत छै, जिकौ इसडी वात कहै छै? तर देईदासजी कह्यौ—मारणौ मरणौ दईव[10] हाथ छै। बीजू तेजसी म्हारै देसैं वडौ रजपूत छै। तरै वेढ री वेळा हाजीखान आपरा घणा जतन कीया। जीनसाल[11]पहर नैं हाथी ऊपर लोह री कोठी हुवै छै तिण माहै बैठौ। आपरा जतना नु माणस ५०१ जवान गुरज[12] भलाय नैं पाळा[13] हाथी री च्यारू तरफ राखीया। बीजा ही आपरा असवार था सु नेडा[14] राखीया। घणी जापताई[15] कीधी। राठौडा नु हरोळ[16]आगै कीया। बीजी फौज गोळ[17] चन्दोळ[18] कीया वेढ माडी। आरावा[19] छूटा। तरै राठौड़ तेजसी

---

[1]इतनी गुंजाइश रखी है [2]मुंह नजदीक ला कर कानाफूसी करने लगे [3]देशपति, बड़े जागीरदार [4]दोनों [5]रण-क्षेत्र मे सफाया कर दिया [6]मजाक, बुराई [7]जिद् पर आ कर [8]झोंपड़ी [9]फैल गई [10]विधाता के [11]एक प्रकार का कवच [12]एक प्रकार की गदा [13]पैदल [14]नजदीक [15]जाब्ता [16]फौज का आगे का हिस्सा [17]फौज के बीच का हिस्सा [18]फौज के पीछे का हिस्सा [19]तोप।

पूरी जीनसाल आप पहरीया। घोडो पिण पाखर मीरी-नख-सख सूधो[1], उघाडो नही, इसडो रूप। राठौड हरोळ था, इणां रै मुंहडै आया। तरै इणां ही वरछीयां उपाड़ो। तरै इण सुं तेजसी कह्यो—हुं थाहरो भाई छुं। म्हारी प्रत्यग्या पूरी न होसी, सीसोदिया हुंसमी। तरै राठौड़ां तो टाळो कीयो[2]। तरै घोडा री खुरी कराय नै[3] मुगलां री फौज माहै घोड़ो नांखीयो। ऊपर लोह री घणी भीख[4] पड़ी। पिण वाढीजतो कूटीजतो तेजसीजो हाजीखांन थो तठै गयो। उठै जाय नै कहण लागो—कठै सिधुड़ो? तरै हाजीखान सांभळीयो[5]। तेजसीजी नुं दीठो। तरै हाजीखान आपरा साथ नुं वरजीया[6]—हिमैं कोई लोह तेजसी नुं वाहज्यो मती। हाजीखान तेजसी नुं कह्यो—सावास तोनुं, भली भांत आयो, हिमैं हु ई आऊ छुं, बुरो मत बोल। तरां पछै हाजीखांन पिण हाथी थी उतरीयो नै घोडै चढीयो। हाजीखान तेजसी नुं वाही सु टोप माथै लागी, नै कितरीहेक निलाड मे लागी। दोय दांत पाडीया। हाजी-खान तो वचीयो। पाखती रा तेजसी नुं कूट पाड़ीयो[7]। तेजसी ही घणी हीं हथवाह कोधी[8]। तेजसी काम आयो। दीवांण रै साथ माहै वळै सूजो वालीसो काम आयो। दीवाण वेढ[9] हारी। हाजीखांन वेढ़……। राठौड देईदासजी रो घणो बोलवालो हुवो।

× × ×

वात एक राठौड जमवत डूगरमियोत री--राठौड जसवंत भूखो थको थोडैमा मे वामवाळै चाकरी नुं गया था। सु उठै तद रावळ प्रताप पाट थो[10]। गाव छ पटै खावतो थो। नितरै राव मालदे नरवदा री तरफ था हाथी मगाया था। सो राणा उदयसिघ नुं खबर हुई थी। सु राणे वांमावाळा रा धणी नु लिग्व मेलीयो—राव रा आदमी हाथीयां नुं गया छै, पाछा वळता इण पड़ै[11] आवसी। थे हाथी उरा लेज्यो। रावजी रा आदमी हाथी लेनै वामवाळै आया। रावळ नु खबर हुई। तरै रावळ हाथीया दोळो[12] आपरो साथ वमाणीयो। तरै आदमीया खबर कीधो, कह्यो—अठै कोई राठोड़ छै? तरै किणही कह्यो—अठै जमवन डूगरमियोत छै। तरै राव रै आदमियै

[1]पूरे शरीर का कवच [2]टालमटोल की [3]चचमायमान कर के [4]शस्त्रों के अत्यधिक प्रहार [5]सुना [6]मना किया [7]घायल कर के गिराया। [8]खूब हाथ बताया [9]युद्ध [10]राज्य करता था [11]रास्ते [12]चारों तरफ।

जसवंत नु कही—इसड़ीक वात छै। तरै जसवत कह्यौ—हु हिमारू भूखौ थकौ अठै आयौ छु। म्हारी पटौ ही नीवडीयौ न छै[1] पिण कासु करूं[2] ? थे कहौ छौ तौ हाथी अठा तांईं ले आवौ, परमेस्वर भलां करमी। तरै राव रै आदमीये पांणी रै मिस कर हाथी छोडीया। तरै ऊपरठांईं[3] कह्यौ—हाथी कठी ले जावौ छौ ? तरै उणां कह्यौ—नाठा तौ भुंय अगली[4], पाणी पाय ल्यावां छा। यु कर नै पाणी पाय नै हाथी जसवंतजी रै डेरै आण बाधीया। रावळ नु खबर हुई। रावळ जसवंतजी नु उठै तेड़ीया[5]। जसवंत उठै गयौ। रावळ वात चलाई—राव मालदे वुरी कीवी जु राठौड़ डूगरसी कन्है जंतारण उरी लीधी, जसवत सरीखा बेटा थकां। तरै जसवंतजी कह्यौ—उण मां रावजी रौ दोस कोई नही। औ तेजसी रौ दोस। जैतारण रौ धणी लाख दुगांणी[6] रै वास्तै रावजी रा हुजदार अभा सरीखा नै क्यु रोकै ? थाळी राव री क्यु लै ? सारी वात कही।

तरै जसवनजी कह्यौ—उण मे राव रौ दोस नही। तरै रावळ दीठौ, इण वात माह क्यु नही। तरै जसवतजी नु रावळ सूधौ कह्यौ[7]—हाथी रांणेजी मगाया, हु रांणा रौ चाकर, हाथी उरा दै। तरै जमवतजी कह्यौ—हुं कोई लेटण गयौ थौ ? वैठा थका आया, क्युकर देणी आवै। हिमे जिकै लेसो, तिके मोनु मार नै लेमी। तरै रावळ कह्यौ—थे डेरै पधारौ। मरण री सामग्री करौ, म्है मार नै लेस्या। जसवतजी डेरै आया। मिनान कीधो। सेवा पूजा कोधी। जीनसाल[8] पहर तैयार हुवा। तितरै रावळ साथ आपरौ परधान साये दे नै आगै मेलीया। जसवतजी हाथीया रा पग, पा'र-चा'र[9] धरती मे गडाय नै च्यार-च्यार रजपूत ऊपर चाढ नै वासे[10] राखीया। कह्यौ—म्हासु काम[11] हुवै तरै थे हाथी-हाथी नु च्यार च्यार वरछी पहरावज्यौ। औ वधेज कर[12] जीनसाल पहर साथ मुंहडै आया। सु जसवनजी रै माथा रा केस ऊभा हुवै तिण सु टोप उपडै। वळै जमवतजी पाछौ दावै। जमवतजी नु निपट सूरातन[13] चटीयो। सु रावळ रै परधान देख नै रावळ नै कहाडीयो—

---

[1]पक्का नही हुआ है [2]क्या करू [3]बीच ही मे [4]अगर भाग गये तब तो आगे की जमीन जाने [5]बुलाये [6]प्राचीन छोटा सिक्का [7]साफ-साफ कह दिया [8]एक प्रकार का कवच [9]खिलापिला कर [10]पीछे [11]युद्ध [12]व्यवस्त कर के [13]बहादुरी का जोश।

जु म्हैं तो जसवंत नुं मारां छा पिण आज रो डूगरसी रो वेटो देखण सारीखो छै[1]। तरे रावळ आयो। आयनै रावळ जसवंतजी रो रूप दीठो। पागडो छांट नै[2] रावळ आय जसवतजी रै गळै लाग मिळीयो। राणो जाणै मु करो, हु तोनूं मारू नही। पछै जसवतजी हायो सिरोही चापावाई नुं मेलीया। रावळ जसवतजी नु विदणो[3] पटो दीयो। घणो कायदो कायो[4]। पछै जसवतजी केइक दिन उठै रह्या। पछै ईडर रै राव घणो आदर कर तेड़ाया। रावळ साम्हो आय नै ले गयो। चौवीस गांव मुं वडो पटो दीयो।

पछै ईडर माथै घोडो हजार दस ले नै अस्तियारखान आयो, तरै ईडर रो राव वेढ रो विचार न करै। तरै जसवतजी कह्यो– वेढ म्है करस्या। पिण म्हांनै घोडो एक काढो चडण नै द्यो। म्हानुं लड़ता देखो। तोही राव मानै नही। तरै जसवतजी वळै कह्यो—तो थे एक भाखरी माथै ऊभा रहो नै म्हां नुं लड़ता देखो। वेट विचै म्है मरां तरै थे नीसरज्यो[5]। युं ही राव करै नही। तरै जसवतजी दलगीर हुवा। देख, म्हांरो इसड़ो धणी जिको म्हानुं मरतांई नुं देखै नही। पछै जसवतजी आपरा साथ सुं असवारा ७०० तथा ८०० सुं नेटविया[6]। पैली कानी सुं अस्तियारखांन री फौज आई। जसवतजी उपाड़ नाखीया[7]। वेढ़ जीती। साथ पैलो घणो कांम आयो। असवार १२० सुं वेढ जीप नै[8] खेत मांहै एक वड थो तठै ऊभा रह्या। आगै जाता मुगलां दीठो, साथ थोडो। तरै नगारो दे नै मुगल वळीया[9]। तरै जसवतजी १२० असवारां सुं वळै माहै नाखीया। तरै एक पैला साथ माही सुं वध नै[10] आयो, उला[11] साथ माहै। जसवतजी ही वध नै गया। उण पहली जसवंतजी नुं नेजो[12] वायो। तिको जसवतजी रै गळा माहै हुय नै गुदडी रै पाखती उकसीयो नै जसवतजी उण रै छाती मांहै वरछी री दीधी सु उणरै चौक मां[13] हाथ एक जाती वाहिर फूटी। पछै उणां ही चलाया। तरै वळै जसवंत असवार १२० सु नाखीया। वळै मुगल भागा। उठै ६० आदमी जसवतजी रा कांम आया। ६० आदमी रह्या। तिण सुं वळै उण वड आय ऊभा रह्या। तरै

---

[1]देखे जैसा है [2]घोड़े की रकाब छोड कर, पैदल हो कर [3]दुगना [4]इज्जत दी [5]निकल भागना [6]ठहरे, इन्तजार किया [7]युद्ध मे प्रविष्ट हुये [8]जीत कर [9]वापिस लौटे [10]आगे बढ़ कर [11]इधर के [12]भाला [13]पीठ मे।

वळे मुगल नगारो दे नै वळिया[1]। जसवंत वळे उपाड़ माहे नागीया[2]। तरै अखियारखां हाथी रै चहवचे[3] बैठो थो। उण एक तीर वाहीयो सु जसवंतजी रै गळै लागो। जोर जांणीयो। तरै डेडरियै रजपूत कह्यो—थे ही क्यु वाहो। तरै जसवंतजी खुरी कर नै[4] छूटी बरछी वाही। सु जाय नै अखियारखा रै छाती माहै लागी। अखियारखा उण सुं मुवो। उवै साथी उण नुं हाथी माह घाल नै नास गया[5]। वेढ जसवतजी जीती। घाअै उगरीया[6] पछै उठा सुं छांड नै मारवाड़ आया। तरै राव जैतारण दीन्ही।

पछै कितरेहेक दिने जसवतजी बोराड वसीया। पछै मेरां नुं निपट दबाया। सु चाग रो धणी जसवतजी रा होड़ा करतो[7]। नै जसवतजी रै राठोड मांनो करमसोत चाकर थो, सु पातळो काळजो थो[8]। सु उण आगै जसवनजी कह्यो—राठोड माना! आपे चाग रा धणी नुं मारां। हु चोट करण नै जाइस। तरै हाथ झारो देइस। तरै हु लोह वाहूं छुं[9], थे पिण लोह वाहज्यो। पछै मानै उण चांग रा धणी नु कह्यो— तो नुं जसवतजो मारसी। उण कह्यो— नही। तरै कह्यो—आवखानै[10] पधारै तरै थांहरै हाथ झारो दै तो तुं जांणे तो नुं मारसी। तरै जसवतजी उण मेर नु कह्यो—तु झारो ले आव। तरै ओ झारो ले आयो। पाछा जसवतजी आया। तरै मेर अळगो[11] जाय ऊभो रह्यो। जसवंतजी कह्यो—झारो ले आवो। पण आवै नही। खिसीयो जाये[12]। तरै औ चाग नुं जाण लागो[13]। आप वासे हीज हुवा[14]। कहता जाय—न मारुं, तुं ऊभो रहि। युं करता करता मेर वासे हुवा। जसवनजी ही चाग गया। आगै मेर मांणस ३०० तथा ४०० हथाई वैठा था[15]। उठै जाय जस-वतजी ही ऊभा रह्या। मेर ही आय कन्है ऊभा रह्या। जसवनजी नुं ढेगो दीयो, नवा लडा[16] रो जोडो १ आण दीयो। जसवनजी थाका मारग सु आटा हुय गया[17]। नीद आई। बीजा मेर जोवण लागा। इण रा मन में क्यु बुरी हुसी तो सूसी नही[18]। जसवंनजी तणा रो डर कासुं आणै। परभात हुवै

---

[1]वापिस आये [2]मुठभेड़ की [3]हाथी का हौदा (अम्मारी) [4]जोश में उद्यत होकर [5]भाग गये [6]बचने पर [7]कामकाज करता था [8]कमजोर दिल वाला था [9]वार करूं [10]पानी रखने का स्थान [11]दूर [12]दूर-दूर खिसकता जाता था [13]जाने लगा [14]पीछे हो लिया [15]बातें कर रहे थे [16]भेंट [17]सो गये [18]सोयेगा नहीं।

वांसा थी जसवंतजी रौ साथ आयौ । जसवंतजी वोराड़ गया ।

पछै किण ही मेर जसवंतजी रा रजपूत री गाय एक मारी थी । तरै उण रजपूत कह्यौ—हुं जसवंतजी नै कहोस[१] । तरै मेर कह्यौ—तुं मत कही, हुं तो नुं गाय रौ मोल देस्युं । आज पांच टका लाभै छै, तो नुं देईस[२] । तरै रजपूत कह्यौ—हुं कहस्युं । तरै मेर कह्यौ—हु दस टका देस्युं । युं करतां मेर पच्चीस टका धांमीया । तरै रजपूत लीया । पिण फुकार जसवंतजी तांई जाण दीधी नही, डर रा घालीया[३] ।

आ वात मेरा सांभळी[४] तरै विचार कीयौ—आपा थी धरती गई । तरै मेर नागौर जाय आगै पुकारीया, नै कह्यौ—थे आवौ तरै म्हे थारै साथे हुइ जसवंत मरावा । तरै नागौर री फौज असवार हजार ७००० आया । जसवंतजी घाटा रौ मुंहडो झालीयौ[५] । अवै अठै जमवंतजी सवारा होज सेवा पूजा कर जीम कर नै जीनसाल पहर नै घाटा रै मुंहडै आवै । उठी या पातसाही फौज चढ़ नै आवै । अठै पोहर ३ टींच हुवै[६] । आथमण हुवा मुगल ही परा जावै । ऐ ही उरा आवै । युं कितराएक दिन टीच हुई । पछै एक दिन जसवंतजी नुं ग्रह भारी आयौ । तरै कोई एक वसी मे जोसी व्यास थौ तिण कह्यौ डूंगरसीजी नुं—जमवंत नुं आज रौ दिन निपट भूंडौ छै[७], कठै ही जाण मत द्यौ । आज रौ दिन च्यार पोहर जीवतौ रहै तौ वरस ५ तथा १० जीवसी । तरै डूंगरसी कह्यौ—आज हु जमवंत तो नुं कठै ही जाण द्युं नही । तरै घाटा रै मुंहडै साथ मेलीयौ थौ, सु मेरा नै माना रै सुख थौ[८] सु मांना नुं मेरा कह्यौ—थारा मांणस काढ । भैंसडा रा घाटा नुं परा काढ । सु मेरां सुं मिळ नै मांनै मांणस काढ़ीया । सु मेर अठै इण नुं कहि नै मांणस कढायनै उठै मुगला नुं वांसै चढ़ाय नै मांना रा माणस झलाया[९] । तरै मानौ आय कूकण लागौ । जसवंतजी चढ़ण लागा । डूंगरसीजी तरै कह्यौ—आज भावै सु व्हौ[१०] हुं चढण कोइ न द्युं । मांनौ घणौ ही मोसै दोसै आयौ[११] । ओकर बोलीया[१२] । पिण डूंगरसीजी कह्यौ—हुं आज चढण द्यु नही । युं करता तीजौ पहर आयौ तरै जसवंतजी डूंगरसीजो

---

[१]कहूंगा [२]तुझे दूंगा [३]डर के मारे [४]सुनी [५]घाटी के रास्ते के आगे का भाग कब्जे मे किया [६]साधारण लडाई [७]बहुत बुरा है [८]अच्छा मेलजोल था [९]पकडाये [१०]चाहे जो कुछ हो [११]उल्टी-सीधी आलोचना करने लगा [१२]बुरे शब्द कहे ।

नु कह्यो—माथ दलगीर हुसी, कहो तो हुं आघेरो जाय गुघरी छोंतरा री सबर ल्युं। तरै जसवंत नु डूगरसीजी कह्यो—तु जाय नै वेढ करै तो गळै हाथ वाहो[1], कहो—हुं आज वेढ न करूं। यु कर नै आप जीनसाल पैहर घोड़ै चढ नै चलाया। सु गांव मांहि थी नीसरतां जसवंतजी बोलीया, सु जांगै भाखर[2] गाजीयो। तरै डूंगरसी कह्यो—म्हारो वडो अभाग, जसवंत पाछो ना'वै[3]। जसवंत घाटा रै मूहडै जाय नै साथ हलकारीयो[4]। अठै वेढ हुई। तठै साथ उलो पैलो[5] घणो काम आयो। मुगल भागा। जसवंतजी वांसो कीयो। तरै मांना करमसीयोत नु एकण भाखरी[6] माथै नगारो दे नै राखीयो थो। नै इण पलीत नु कह्यो थो—मो नु पाछो[7] आयो देख नै अठै हुं कहुं तरै नगारो देजै। यु कह नै आप वांसो कीयो। तरै मांनो बैठो छै। अठै साथ घणो काम आयो। पैलो पांचायर पाड़ीया, नै उणै मांनै साथ वेढ जीती देख नै नगारो दीयो[7]। साथ जुदो जुदो फूटो थो सु नगारा री हर कर नै[8] नगारा री तरफ गयो। आगै जातां जसवतजी ऊभा रह्या। तठै असवार सात कनै रह्या। तरै किण ही ठाकुर कह्यो—आंपे बीजी घाटी होय साथ भेळा हुवा। तरै जसवतजी कह्यो न करै। गोविंद हुं बीजै मारग आऊ। पाछो उण हीज मारग सातां असवार आवता था, सु उण कटक रो माथ सिरदार असवार ३०० सुं मु जाळा[9] माहे छिप रह्यो थो। सु मेर भाखरे चढीयै चढीयै जसवतजी नुं आवता दीठा। तरै डूव आपरा नु मेरा कह्यो—तु जसवतजी सुं सुभराज कर ज्युं आगलै कानै ३०० असवार छिपीया बैठा छै सु जाणै ज्युं जमवतजी साता असवारां सुं आवै छै। पछै आपे इण आगै छुटसा नही[10]। तरै डूव कह्यो—भली वात। जसवतजी आया तरै डूंब कह्यो—अवडी[11] पातसाही फौजा भाज नै सातै असवारे इणा पहाडा मे इण हीज मारग आवै। आ वात मुगल छिपीया था त्या साभळी। नीसर नै जसवतजी ऊपर आया। अठै काम हुवो[12]। जसवतजी काम आया। पडीया। लोही मास रा पिंड सारीया[13]।

× × ×

---

[1]गले के हाथ लगा कर कसम लो [2]पहाड [3]वापिस नहीं आवेगा [4]ललकारा [5]दोनों ओर का [6]पहाडी [7]नगारा बजाया [8]नगारे की ओर आकर्षित हो कर [9]मूंज के पौधे [10]छुटकारा नहीं पा सकेंगे [11]ऐसी [12]युद्ध हुआ [13]योद्धा जब घायल हो कर गिरता था तो मृत्यु के पहले अपने खून से मिट्टी के पिंड बना कर पितरों को तर्पण करता था। इसे वह अपना अहोभाग्य मानता था।

राव मालदे पातसाह कहाणो[1]। अस्सी हजार घोड़ो आपरो हुवो। पातसाह रा वांना सोह हुवा[2]। जग हथ वाधो[3]। सवत् १६१६ काती सुद १२ काळ कीयो।

इतरी धरती हुई—पाट श्री जोधपुर गढ। सोह[4] राव मालदे संवरायो[5]। पहली गढ महल थो। भरणो, लोहड़ा री पोळ रांणोसर दोळो कोट, सहर कोट, रामपोळ दोळो कोट, राव मालदे करायो। ५०००००)। मेड़तो मेड़तियां कन्है वेळा २ लीयो। ३५०००००)। नागोर कूंपे महिराजोत फतह कीधी। साथ रावळो, सवत् १५६१ ली। ४५००००)। सोजत तो राव रिड़मल री साटी[7] छै। थापना कदीम छै[8]। राजा अवसेन री सोजलि कंवरी रै नांवे सोजत, कोट नीवा जोधावत रो करायो नै नीचलो कोट अकवर पातसाह रै उमराव कीलचग्गा करायो। २०००००)। वाहिरली वीजी पोळ सदहासम कराई।

बीकानेर राव जैतसी नु मार नै लीधी। कूंपे महिराजोत फतह कीधी। संवत् १५६८ चैत वद १। ५०००००)।

जैतारण तो कदीम छै। आगे सहर कदीम आगेवो थो। पछै तद जैतारण री जायगा जेनाई मान्नण री वाड़ी थी। तठै पछै उण जायगा[8] सहर मांडीयो। तरै जैनू मान्नण रै नांवे[9] जैतारण कहाणो। कोट उदय सूजावत करायो। २०००००)।

अजमेर राजा अज रो करायो, निको लीयो। रा॥ महेस गड़गियोत रै पटै थो। सैठो नाव अराई महल ५ तथा ७ सलेमाबाद। ५०००००)।

सांभर—६०००००), डिडवाणो रा० कूंपा नुं पटै थो। १२५०००)। मालपुरो—माला पंचायणोत पवार रो बागोयो[10]। ३०००००)।

जाळोर वेळा दोय लीयो। संवत् १६१८ आसोज वद अमावस। बीजी वेळा लीयो, राठोड़ पतो नगावत।

फळोधी राव हमीर वागी, पता वांमण रा गोवळ रो टोए। संवत् १६०७ सावण मांहे डूंगरसी नु भाल नै लीधी। ७००००)।

[1]बादशाह कहलाया [2]बादशाहों के से सभी ठाट-बाट हुए [3]दुनिया को वश में किया [4]जहां [5]सजाया [6]जीर्ण हुई [7]पीढ़ियों से अधिकार है [8]जगह [9]नाम पर [10]बनाया हुआ।

पोकरण रौ कोट संवत् १६०८ मंडायो। संवत् १६०७ सातलमेर लीयो, गाव जैतमाल कन्है, जोधपुर भेळो। ७००००) । साचोर ६००००) । राजपुरो, खाटू, चाटसू ३०००००), जाजपुर १०००००), नारायणो १४००००), बधनोर १५००००), भिणाय ११००००), सीवांणो, राज वीरनारायण पवार रो करायो। संवत १०७७ गढ मांडीयो। पछे गढ़ चहुवाणां रै आयो। संवत् १३६४ सातलसोम नु मार नै अलावदी पातसाह लीयो। पछे रावळ माला रै हुवो। रावळ माले रावत जैतमाल भाई नु दीयो थो। सु घणा दिन जैतमाल रै रह्यो। पछै डूगरसी कन्हा[1] राव मालदे लीयो। ७००००)।

गोडवाड रांणा री मदारियै, मानपुरै कूपो महिराजोत थाणै थो। कोसीथळ जैतसी उदावत थाणै थो। नाडुल रा पचायण करमसीयोत थाणै थो। २०००००) रुपिया आवदान[2] छै। ५३०००००) लास वडा १००००००००) ठिकाणै रा हुवा।

मालदे कन्है बारहठ आसो चारण भाद्रेसो[3] आयो हुतो सु आसा न गाव दोय नागोर रा सान रा दीया था, सासण[4]। तिण रै वास्तै राव मालदे नागोर लीधी। तरै आसो आयो, गाव री कहाव कीयो। सु रावजी कह्यो— म्है थान री दत्त पाळां नहो[5], नै म्है थानु म्हारो उदक[6] करा द्या। वेहोज गाव दोय दा द्यां। सु यु आसो वरै नही। तरै अदावत हुई। पछै बारहठ आसै गळै घानी[7]। उमादे भटियाणी उपाड़ पाटा बधाया। आसो उवरीयो।

राव मालदे रा थाणा--गोडवाड माहे मदारियै रा कूपो महिराजोत। कोसीथळ जैतसी उदावत। जाजपुर गटसी भारमलोत। कुभो खराड़ा जाजपुर रो धणी वध आणीयो. बीजापुर बालीसा रै तिलोकसी वरजांगोत, कोट पोळ बीजापुर करायो छै। नाडुल पचायण करमसी।

कवित्त राव मालदे रा बारहठ आसा रा कह्या--

कवण रिमन पनि सबळ काळ पनि कवण भग जिन,

---

[1]पास से [2]आमदनी [3]भाद्रेस का निवास [4]चारणों को दिया गया जागीर या गाव जहा शरण मे पहुँच जाने पर राजा लोग भी दुश्मन का पीछा नहीं करते थे [5]दान को दिया हुआ दान मैं रहने नही दूगा [6]दान मे जमीन देना [7]गल मे छुरी लगा कर आत्महत्या करने का प्रयत्न किया।

प्रिथीपति कुण वाण पत सुरपति कवण सतेजति,
कवण नायपति जति कवण केसवपति दाता,
सीतापति कुण सति कवण लखमण प्रति भ्राता,
सबळ को अवर मुझै नही[1] जाचि गजं पेम यळ जण,
हिंदुआ मांहि श्रो हिंदवो मालपति मोटो कवण ।। १

माल काळ मछराळ, माल जमजाळ निभैंमन[2],
माल जाण महिराण[3] प्रेन-जळि माल सपूरण,
सबळ माल अरिसाल माल भजण मेवासा[4],
गज घाटा गाहणो गिलण[5] गढ कोटा ग्रासा,
सुरताण राण सकोडिया सभि लीधा दे राहि सहि,
मालदे सीस छत्र मंडियो, माल हुवो मडळीक महि ।। २

कवित्त ३३ पडगना रा—

महि मोजत ली माल, माल लियो मेडतो,
माल लियो अजमेर सीम साभर सहेतो,
वाको गढ बदनोर माल लीधो दळ मेळै,
राइ माल रायपुर लियो, भाद्रजण भेळै;
नागोर निहबै चढि न ले, खाटू लीधो जडखणी,
तप प्राण हुवो गागा तणो, धीग[6] मालदे सेंधणी ।। ३

लोड[7] लियो लाडनु', दुरग लीधो डिडवाणो,
नयर फतैपुर नाम, आप वसि कियो अपाणो,
कमधज लई कोमली रूकबळ[8] लियो रेवासो,
चाप लई चाटसू, मूक्यो वीर माण मेवासो,
जडलग[9] पाण जाजपुर लीयो, गढ़ छाडे कु'भो गयो,
मालदे लियो मदारपुर, लियो टूंक तोडो लियो ।। ४

चित्रकोट चापियो, पालीवण वीर लियो पुर,
अनल दुरग अनखळै ढो लीधा करि सिधर,
लोहा वळ लोहगढ जेसल नाडुल जोजावर,
रहल उदैसी राण नयर ले कीधा निजर,

---

[1]कोई भी व्यक्ति अधिक सबल दिखाई नही देता [2]निर्भय मन वाला [3]सागर [4]डाकुओ (शत्रुओ) का सुरक्षित स्थान [5]निगलने वाला [6]जबरदस्त [7]छीन कर [8]तलवार के बल से [9]कटारी ।

धुणली राई कुम्भमेर घर हाथी माल ज वस हुवै,
एक हुवो छत्र वाघाहरो[1], भोग माल सहि भोगवै ॥ ५

जुड़ लीघो जाळोर पाण सांचोर पजाए,
भीनमाळ भजियो विरद मोटा बुलाए,
बीकानेर विघूस लीध पोहकरण फळोधी,
करी माल कोपियो सीम समद्रा सही सुधि,
धाण फेर लगे उमर नयर, पारकर सर पघरै,
मालदे देस मालां तणा, वस कीधा वाघाहरै ॥ ६

कमंध[2] लियो कोटड़ो, काढ पह कोटड़ केरा,
गा दुरंग गाहटै मालदे वाहड़मेरा,
छहटण ही छरळाई, खुंद खावड खुरताळ,
साज सीघ सामई हाथ दिखाळ बगाळं[3],
धाण फिर लगै उमर नयर, पारकर कर पघरै,
माल देस मालां तणा, वस कीधा वाघाहरै ॥ ७

वात राव मालदे री संपूरण

[1]वाघा का वंशज [2]बहादुर [3]मुसलमान ।

राव चंद्रसेन री बात

७

संवत् १५६८ सावण सुद ८ जनम । राव चंद्रसेन राव मालदे वासै टीकै बैठौ । बडे वळाक्रम[1] रौ धणी । पिण भाग तिसडौ तो जोरावर न हुवौ। सवत् १६१६ पोह सुद ६ टीकै बैठौ । संवत् १६३७ माह सुद ७ सचीग्राय री गाळ गुडौ[2] थौ तठै काळ कीयौ । इतरी धरती टीकै बैठा तद थी—

१ पाय तखत जोधपुर, सवत् १६२१ मिगसर सुद ४ गढ़ छूटौ । राव भाद्राजण गया ।

२ सोजत सवत् १६२० आसाढ वद २ रांमा नु दीन्ही । फळोधी मोटा राजा नु दीधी ।

जैतारण गाव ६५ । पोहकरण संवत् १६३१ भाटिया रै अडाणी घाती[3] । जाळोर सवत् १६१६ मुगला नु दीयौ । सीवाणौ सवत् १६३२ गढ मुगला नु दीयो ।

सवत १६१६ वैसाख वद १३ राव मालदे जीवता चद्रसेन चित्तौड परणीयौ—राणा उदयसिंह री वेटी, चादा सीसोदणी । आसकरण री मां ।

राव चद्रसेन राज करै छै । एक दिन रावजी एकण पडव नु रिमाणा। तरै पडव बीहतौ[4] राठौड जैतमाल जेसावत रै डेरै नास नै[5] जाय पैठौ । रावजी नु खवर हुई, तरै खधर मेल नै पांडव झलाय नै[6] गरदन मारीयौ[7] । तरै राठौड जैतमाल जेसावत जाय राठौड प्रिथीराज कूपावत, राठौड़ महेम कूपावत आगे रोयौ । तरै राठौड प्रिथीराज कूपावत जैतमाल जेसावत नु कह्यौ—तु मत रोवै । परमेस्वर कीयौ तौ हु कूपा रै पेट रौ, जो यु चद्रसेन नु रोवाड़ू । तु दुख किणही वात रौ मत करे । पछै तिण दिन रांम मेवाड़ौ राणा उदयसिंह

---

[1]पराक्रम [2]रहने का सुरक्षित स्थान [3]गिरवे रखी [4]डर के मारे
[5]भाग कर [6]पकडवा कर [7]मरवा डाला ।

कन्है थो । नै उदयसिंह फळोधी हुतो । रिणमल एक समाचार राव रामां नुं दीयो । एक समाचार उदयसिंह नुं दीयो । कह्यो—थे यु ही बैठा काईं करो ? तरै गांगाणी उदयसिंह आय मारी[1] । लूणी उला गांव राव रामै मारीया । मालदे नुं मुवां थोडा दिन हुवा था । सु चद्रसेन कन्है साग साख रा मवळा[2] रजपूत था । सु पहिलां रामा री खबर आई । सु रांमा नुं………नै घाटो लोपायो[3] । नीठ[4] रामो कुमळे गयो । तितरै उदयसिंह गांव मारीयां री खबर आई । तरै राव चद्रसेन उदयसिंह वासे चढीया । सु लोहियावाट जाता आपडीया[5] । उठै वेढ हुई । राव चद्रसेन नुं इतरै साथ वन्है थका उदयसिंह आय, आप लोह लगायो[6] । उदयसिंह नुं ही एकर मुं जीनसाल थकां ही कूट नै घरती पाडीयो । पछै हदे खीचो चाकर घोडै आपरै चाढ काढीयो[7] । राठौड़ जोगो मादाउत उदयसिंह रो चाकर काम आयो । बीजो ही साथ कांम आयो । वेढ चद्रसेन जीती । तरै रिणमल दीठो—आ ही वात तो वणी नही । चंद्रसेन रो तो इणां दोनां ही मामलां विगडीयो क्यु नही । तरै राठौड़ प्रिथीराज कूपावत, राठौड आसकरण जैतावत देवीदासोत नै दोनूं ही भेळा[8] होय नै पीरोजी[9] २०००० राव रांमा नुं खरची मेल्ही । कह्यो—तुं बैठो कांई करे, जाय नै पातसाही फोजां ले आवो । तरै रामो कटक ले जोधपुर आयो । तरै ऐ हीज ठाकुर वीचै फिर नै[10] राव चद्रसेन नु समभाय नै रामा नुं सोजत दिराई । सवत् १६२० जेठ सुद १२ हसनकुली माथे रामवावडी उतरीया । आसाढ वद २ बात हुई । राम नु सोजत दिराई नै कटक परा गया । रामो जाय सोजत बैठो । तरै रिणमल ठाकुर विगर सीख नाम नै घरै गया । रामा रो पटो लीयो नै राव चद्रसेन नै मुगला नु लगाय दीया । जेठ सुद १२ रांमो मुगल रामवावड़ी उतरीया । दिन १८ नगर वीट रह्या[11] । गाव वाली आखो दीयो । आसाढ सुद ३ कटक उपडीयो[12] । दिन दोय मडोवर रह्या । उठा रा ऊठीया दिन एक बोहरावस रह्या । आसाढ सुद ५ दिन दोय विमलपुर रह्या । आसाढ सुद ७ विमलपुर थी उपडीया । वळै जोधपुर रै गड राणीसर दिसी जाय लागा ।

---

[1] जीत ली [2] बहादुर, समर्थ [3] घराववी पर्वत के पार खदेड़ दिया [4] मुश्किल से [5] पकड़ा [6] प्रहार किया [7] घोड़े पर चढ़ा कर रणक्षेत्र से बाहर निकाला [8] शामिल [9] एक प्रकार का सिक्का [10] बीचबचाव कर के [11] घेरा दे कर रहे [12] रवाना हुआ ।

रांणीसर री भुरज भिळतां[1] राठौड़ वेरमल पातलोत, मुहतौ दूदौ काम आया। तरै गढ में साथ थी। मानसिंह, पतौ गागावत, तिलोकसी कूपावत, पतौ नागावत इयां मचकूर कीयौ[2]। जे मुगल आया, गढ़ लागा।

संवत् १६२१ चैत वद ४ आ फौज पाली आई। मांनसिंह नीसरियौ[3]। सवत् १६२१ चैत सुद १२ जोधपुर वळै मासां दस सु आया मुगल, सो काई विचार? तरै चद्रसेन विचार कीयौ—साथ सगळौ वेड़ौ[4] दीठौ। तरै तुरका सु बात कीवी। नै गढ तुरकां नु सूपीयौ[5]। सवत् १६२२ मिगसर सुद १० रविवार गढ दीयौ। मोहरत जोय राव रामौ नै मुगल गढ चढीया। राव रांमौ दिन पाच तथा सात रह नै सोजत गयौ। हसनकुली गढ रह्यौ। पछै धान-पाणी खूटा, मद हुई। तरै गढ हसनकुली नु दीयौ। राव भाद्राजण गया। सवत् १६२२ सु बरस नव पूरा मारवाड़ राज कीयौ।

सवत् १६२७ रै टाणै राव काणूजे······चद्रसेन भाद्राजण सु सवत् १६२७ मिगसर वद ८ पातसाह सु मिळण नै चढीया। अकबर पातिसाह ख्वाजा री जात आयौ थौ तरै मिळीया। पोस वद १ नागौर मिळीया। तठा पैली १६२६ पोस सुद १ राव चद्रसेन राणा उदयसिंह नु बेटी परणाई—करमेती। राणौ जैसलमेर राव चंद्रसेन नु साथे ले गयौ हुतौ। तरै भाटियां परणायौ नही। तरै भाद्राजण अपूठा[6] आया। तठा पछै कला खान सु बात कीधी। तद कला-खान मिणहारियौ धरती माथै दंड कीयौ—लाख दस। लाख फदिया भरीया। बाकी रा माहै सारण धनोजी ओळ दीया[7]। सवत् १६२६ मिगसर सुद ३ रांणौ उदयसिंह जेसळमेर नु जातां नवसरा माहै नीसरियौ[8]। सवत् १६२८ राव कांणू जे वसीयौ। रावत पचायण घणा हीडा कीया[9]। अठै राठौड गोपाळदास, कल्यांण-दास, राम नरहरदास रतनसियोते, गुडा ऊपर मुगल आणीया। गुडौ लुटायौ। वेढ़ हुई, तठै देरासरी तिलोक कांन्हावत, ठाकुरसी रिणधीरोत कांणूजे काम आया। राव नीसरिया। बीकानेरियौ राजा रायसिंह तुरका साथे थौ। देरासरी तिलोक रै हजार मेयी थी। रामसिह कल्याणमलोत जांणीयौ—राव मारीयौ। लोही जेतसी रै वैर रै आटै चाटीयौ। पछै जीनो ई बखतर उतार नीसरियौ। पछै राव मुडाई मेवाड रै गाव स० १६३१ गया। वरस··· उठै रह्या। तठा

---

[1]बुर्ज में प्रवेश होने पर [2]जिक्र [3]भाग निकला [4]युद्ध-तत्पर [5]सौंपा [6]पीछे [7]जमानत के रूप में रखा [8]निकले [9]बहुत से कार्य किये।

पछै मिरोही गया। केई दिन सिरोही रै गांव कोरटे रह्या—वरस एक। पछै डूगरपुर वासवाळै गलिय कोट कहीजे छै, तठै रह्या। पातसाह अकबर राव चंद्रसेन सु जोधपुर छूटां पछै राजा रायसिघ कल्याणमलोत नु दीधी[1]। रायसिघ रौ वटो कवर दळपत काच रा माळीया[2] मु पड़ नं मुवौ[3]। राव चद्रसेन मु कांणूजे मांमलौ हुवौ, तठै राजा रायसिघ भेळौ थौ[4]। वरस दोय कहै छै जोधपुर रह्यौ।

संवत् १६३४ पोहकरण राव रै थी। मु राव सु मारवाड़ छूटी तरै गढ माथै साथ थौ तिण भाटिया सु वात कर नै वगु ले नै कवर भीवा नै मानै मागळियै भोजे संवत् १६३४ फागण वद १४ वासे लाख पिरोजियां माहै पोहकरण अडाणी[5] रावळ हरराज नु दे नै उरा आया। भेळा हुवा। सवत् १६३१ गढ सीवांणै राज चद्रसेन रौ माथ हुतौ। गढ अकवर पातमाह री फौज, साह कुलीमदरम महवाजखा राव रायसिंह भुगटियौ थो। माहै रावजी रा इतरा चाकर था—राठौड किसनदास गांगावत, पतौ उरजणोत, राठौड भाजण, भाटी वीरमदे। गढ विग्रह वरस दोय हुवौ। तु'' '' ही पछै पता रै रात दीवा रै चानणै गढ रै भुरज सवरावता[6] गोळी लागी। पतौ उरजणोत, मुहतौ कांम आयौ। तटा पछै माम एक माहिलौ साथ तुरका सु वात कर नै नीसरीयौ। गढ तुरका नु दीयौ। साथ रात्र चद्रसेन कन्है मुडाडै आयौ। जोधपुर तो तुरका रो थाणौ थौ। सोजत रामा नु थी। पछै रामा नै तुरका रै वणी नही[7]। तरै रामो ही मारी सोजत कर नै मिरियारी जाय वसीयौ। पछै रामा रै जोगीया सु वयु मामलौ हुवौ। तरै पतर भाजीयौ[8]। लखणनाथ स्राप[9] दीयौ। तिण था रामौ तुरत मुवौ। रामा नु दाग मिरियारी हुवौ छै। सवत् १६२६ जेठ सुद ३ राव रामौ मुवौ।

सवत् १६२७ महवाजखान मारवाड़ ऊपर आयौ। राव चद्रसेन सिवाणै हुतौ। तद राठौड दामौ पातलोत साथै साथ में कटक नु रातीवाहौ[10] मागले दिरायौ। पछै कटक आगौ नायौ। लूणी नदी हद हुई। पछै महवाजखान राठौड जैतसी नगावत नु भालीयौ। जुहर हुवौ[11]।

---

[1] दी [2] महल [3] गिर कर मरा [4] शामिल था [5] गिरवी [6] बुर्ज की मरम्मत करवाते समय [7] मेल नहीं रहा [8] पात्र, भिक्षा रखने का खप्पर [9] शाप [10] रात का हमला [11] युद्ध हुआ।

राव रामा रै वडो वेटो करण थौ नै छोटो वेटो कलौ थौ, सु करण ही निपट लायक थौ। दातार, भूजार बडौ रजपूत थौ। पिण तद धरती माहै बडा रजपूत रिणमला मांहै राठौड महेस कूपावत नै राठौड़ आसकरण देवीदासोत हुता। सु इणा नै करण रै किण ही वात दिसा खुणस[1] हुई। तरै राठौड आसकरण कला री भीड हुवा[2]। राठौड सूरजमल प्रिथीराजोत केई वळ हुवा। पछै पातसाहजी कन्है गया। तरै पातसाहजी कन्है राठौड प्रिथीराज कूपावत थौ सु महेमजी प्रिथीराज रै डेरै जाय मन में दलगीर[3] रहै। जाणै क्यु ही हुमो ? तरै प्रिथीराज कह्यौ—दलगीर क्यु ? तरै कह्यौ—इण आटै[4] छु ? तरै प्रिथीराज कह्यौ—रावाई कला नु दिरावस्या पिण म्हारी वमी नु खेरवौ गाव देज्यौ। इणे क्बूल कीयौ।

पछै पातसाह प्रिथीराज नु पूछीयौ। तरै प्रिथीराज वात वणाय कही—जे रजपूत मारवाड रा थम्भ कला दिसी छै। पछै पातसाह महेस आसकरण नु पिण माइतरा रै नावै जाणतौ थौ[5]। इणां नु पिण तेड़ पूछीयौ। राठौड़ सूरजमल प्रिथीराजोत घणा ही खळखट[6] कीया, पिण सोजत रावाई[7] पातसाह कला नु दीधी। करण नु वमी नु सूरायतां गाव ६० मु दीयौ। वीजी जागीरी दी। राठौड सूरजमल प्रिथीराजोत नु अकवर पातसाह आपरै वास राखीया। मुनसब पातसाह रौ खाअै, पिण चाकर करण रा हुता, रहिता।

पछै करण तौ गुजरात रा पातसाह रै काम आयौ। सवत् १६२६ राव कलौ पाट वैठौ। पातसाह सीख दी तरै राठौड प्रिथीराज नु महेसजी मिळीया ही नही। जाणीयौ—खेरवौ दीयौ जोइजसी। नै खेरवौ महेसजी आपरी वमी नु लीयौ। पछै प्रिथीराज वासे पातसाहजी कन्है घात घाली[8]। कह्यौ—खेरवौ जोधपुर रौ छै। पछै पातसाहजी सैदा नु लिख मेलीयौ। तठा थी खेरवौ जोधपुर दाखल हुवौ। पछै के दिन कलौ सोजत रह्यौ। पछै पातसाही माहै हजूर गयौ। तरै कठै ही मोहल पातसाही माहै काई एक वात बिगड़ी। पछै सोजत आयौ। सहर मांज मैं मिरियारी डीयोढ गुडौ कीयौ। तिण टांणै[9] राठौड देईदास पिण पाछौ आयौ। मुगला सु वात कर नै वगड़ी रह्यौ। पछै देईदास गु उगलिया रै द्रहा ऊपरै मुगले चूक कीयौ[10]। राठौड सेखौ उदयसिघोत

---

[1]खटपट [2]मदद मे हुये [3]दुखित [4]इसलिए [5]माता-पिता से जानता था [6]प्रपच [7]राव का पद [8]चुगली की [9]अवसर [10]षडयन्त्र किया।

काम आयौ । पछै राठौड देईदास जैतावत रातीबाह दीयौ[1] । तठै राठौड़ जयसिंघदे कान्हावत काम आयौ । तिण नु मुगलां हाथी रै पगै वाघ नै घोमीयौ । घोर माहै दीयौ[2] । सु राठौड देईदास वगडी भाज नै भाकर पैठा । नै दिन ५ तथा ७ साथ कर नै आय द्रविया था । तिसडै राव क्लौ ही आय भेळौ हुवौ ।

पछै किही सु वेढ हुई । मिरजौ माणसां ६० मु मारीयौ मु फौज पातसाही बीजौ भागो । आ खबर जलाल सिरदार माडीया रै जोड मांहै दारू पीया सिकार रमतौ थौ तिण नु आई—मिरजौ मारीयौ, पातिसाही फौज भागो । सु उण उठा थी हीज वाग उपाड़ी[3] । सु फौज राव क्ला री ऊभी थो तिण माहै सातां असवारा सु आय पडीयौ । इणां मार लीयौ । सूळी दीयौ । तरै मुगला रा परधान आय वरस दिन रा मील कौल कीया[4] । लोथ जलाल री परी दी । तठा पछै वळै मुगला मु उसेलो हुवौ[5] । तुरका रौ थाणौ १ कटाळीयै रा गेता माहै सैदा दीयौ । तिको हिमैं सैदपुरी कहीजै छै । एक थाणौ भाडै दीयौ । राव क्लौ माहिलै खेडै डीघोड रै सारी सोजत ले उठै गुढौ दीयौ । मुगला रौ साथ सासतौ[6] चढ आवै । अठै पिण साथ राव कला रौ घाटा रै मुहडै टीच[7] करै । तिण दिन महेस कूंपावत वडौ रजपूत कनै रहै । महेसजी री वसी तौ मेवाड़ रै गांव थी मोटीयारा[8] रो साथ थौ । सासती वेढ[9] करै । तरै गुटा रौ लोग महाजन, छोकरी, हीडागर, घाची-मोची मिको[10] महेसजी रौ गिलौ करै[11]—जे बीजौ साथ रावजी रा तौ घाची मोची हीडागर वस करै छै । इतरौ महेसजी वस करै तो मुगल तरै हीं भाजे । तरै महेसजी नु पिण सबौ आय आप रो साथ क्है—थाहरौ गिलौ हुवै छै । तरै एक दिन फौज आई । राव क्लौ पिण तयार हुय भाखरी री जड[12] वैठा था । मुगला री फौज आई, टीच माडी । त्युं मुगले पाछी धरती दी । जाणीयौ—इणा नु मंदान आवण दा । महेसजी इण साथ माहै था सु महेसजी तौ साथ नु घणौ ही पानीयौ[13] पिण साथ उरड नै मंदान गयौ । मुगला पाछा वळीया[14] नै वीजौ साथ भागो । महेसजी रा घाडा नु हाथी दावीयौ । महेसजी नु घोडै पाडीया । वठा था, ऊपर हाथी महावत

---

[1] रात को हमला किया [2] कब्र में दे दिया [3] घोड़े को तेज दौड़ाया
[4] वचन दिये [5] झगड़ा हुआ [6] निरन्तर [7] साधारण युद्ध [8] जवानों का
[9] युद्ध [10] सब कोई [11] बुराई करते हैं [12] पहाड़ी के नीचे [13] मना किया [14] पीछे मुड़े ।

आयो मु आघे पगे कीये बैठां ही बरछी हाथी नु वाही सु खुमर[1] सूधी हाथी रै कपोलां बिचै बैठी। महेसजी अठै काम आया। साथ भागो। मुगल गुढा ऊपर आया। राव कलो गुढो छोड नीसरीयो। देईदास जैतावत तद राव कन्है था। सु देईदास ही गुढो लूटता मर सकीया नही। तठा थी देईदास रो गिलो हुवो। गुढो भार भरथ[2] लूटाणो[3]। पछै कितरेहेक दिने राव कलै मुगला सु बात कीवी। पछै पातसाहजी सेख इभरांम नु लिखीयो थो के कला नु उरो मेलै। के म्हारै पाछै सेख कहाड़[4]। कला नु मेलीयो मु पातसाह कनै जाये। पछै कलो नाडुल वहल[5] बैस नै गयो। तठै सेख कला नु मारीयो। तठै इतरा काम आया—समत १६३४ राव कलो मारीयो। फागुण माहे सादुल रायसलोत, हीगोलो, गैहलटो नादो, चोखो धायभाई, साहणी रांमदास, डुंगावत, ढोलो, उदा रो बेटो।

अबै अठै धरती माहै धणी कोई नही। तरै तिण दिन धरती मांहै सादूळ महेसोत आसकरण देईदासोत वडा रजपूत था। इणे ठाकुरे राव चद्रसेन नु लिख मेलीयो—धरती खाली छै, म्हे रावळा रजपूत छां। तरै वासवाळा डूंगरपुर थी सोजत री गडासंध[6] आया, आगली खबर लीधी। जांणीयो, हिमार तुरक निबळा छै। नै सादुळा आमकरण नु तेड नै आगे करा तो इतरो कुण किरीयावर करै। तरै आप साथे असवार ५०० तथा ६०० हुता। देवड़ा विजा नै सीरोही सु आवता साथे ले आया। तिण हीज साथ लीयां सोजत री सरवाड आय डेरो कीयो। तद पातसाही उमराव सैद सोजत थाणै हुता, तिणा नु खबर हुई। राव चद्रसेन थोडा साथ सु सरवाड आय उतरीया छै। पछै ही सोह[7] राठौड मवारे भेळा हुसी[8]। तरै हो म्हा ऊपर आवसी। तरै म्हा नु एक वेढ कीधी जोइजसी[9]। तरै मांणसा आगे कह्यो—म्हे सूरायता जावा छा मु भेसाणा माहै हुय नै मवारा हीज राव रा कटक मार्थे आय पडीया। सु इण कटक नु खबर हुई नही। अजांणजक[10] री वेढ सरवाड रै दस हलीया अरहट माहै हुई। राव चद्रसेन नीसरीयो। देवडो बीजो हरराजोत पिण नीसरीयो। उहड जैमल मुदायत हुय मंडीयो[11]। इतरो साथ रावजी रो

---

[1] कटार को पकडने का हिस्सा [2] सारा माल-असबाब [3] लूट लिया गया [4] कहला [5] बैल गाडी [6] निकट, पास [7] सभी [8] एकत्र शामिल होंगे [9] युद्ध करना पड़ेगा [10] अचानक ही [11] प्रधान बन कर।

कांम ग्रायौ। तिण री विगतवार लिख्यते—संवत १६३५ श्रावण वद ११ कांम आया—उहड जैमल नेतसीयोत, रा॥ रायसिंघ भांनीदासोत चांपो, उहड़ जैतमाल जैमलोत, उहड जैतौ रायमलोत, जैमलजी रै भतीजौ सांगौ उरजनोत, ग्रचळौ सूजावत, तिण री साख दूहौ—

नेम तजै चद्रसेण नीसरै, देम मरण छळ दीठो ।
ग्रचळ प्रसाद पहतै ग्रचळौ, नावै स्वयम न मीठो ॥

भगवानदास, वीरमदे रांमावत, करमसी मालावत, सुरताण दूदावत, जसवंत जोगावत मांडणोत, केसवदास जोगावत मांडणोत, डूगरसी मालावत, देवड़ा विजा रौ साथ रजपूत १७ काम आया । ईंदौ वेणौ, सांखलौ दुदौ, इनरा साथ रजपूत काम ग्राया ।

राव वेढ़ हारी । डेरौ हरीयामाळी कीयौ । उठै रा॥ सादुळ आसकरण आय भेळा हुवा[1] । घोडा २ पीरोजी हजार १२००० सादुळ नुं दीया । हाथी १ पीरोजी हजार १२००० रा॥ आसकरण नुं दीया । इणा भेळा हुग्रां सवौ[2] डेरौ सोजत नु उपाडीयौ । सेंद तठा पहली नीसर गया । राव ग्राय सोजत वैठा । वरस १ रह्या । पछै वळे पातसाही फौजा ग्राई । पछै राव सचीग्राय री गाळ माहे रह्या । पछै दुघवड रा॥ वैरसल उदैसिंघोत रै मिहमानी ग्रारोगण पधारीया[3] था तठै कठू ही हुवौ सु राव पाछा ग्राय सचीग्राय री गाळ मांहे स० १६३७ माह सुद ७ राम कह्यौ[4] । राव चद्रसेन नु दाग सारण रै महाकाळ रै वड कन्है हुवौ । सती ३ हुई । तिणा री छत्री महाकाळ कन्है छ । सनी राव चद्रसेन वासे हुई—

वहुजी भटीयाणी जेसळमेरी, वहुजी चहुग्राण पुरवणी, वहुजी मोढी, फूलमाला ग्रोलगण[5] ।

राव चद्रसेन गढ रोहा जोधपुर री वात स० १६२१ साके १४८७ ।

चैत्र सुद १२ भोम राव राम वळे हसनकुली मुदफरखान कटक ले ग्रायौ । वैसाख वद २ री रात गाव ढीलौ कीयौ[6] । राणीसर चोकेळाव वीट लौ[7], ग्रहीयौ । चैत्र सुद १५ राव रौ साथ प्रोळ वाहिर नीसर वीढीयौ[8], तठै मुगल ५ तया ७ मारीया । नायक खेतसी भाटी रिणमल राव रा चाकर काम ग्राया । मुगले नाळ साटी । वैसाख सुद ४ तिणे गोले घोडा २ राव रा मारीया । जेठ

---

[1] शामिल हुये [2] शामिल होने ही [3] खाने गये [4] देवलोक हुये [5] खोखन
[6] गांव छोड़ा [7] घेरा डाला [8] युद्ध किया ।

सुद ३ मुगले राणीसर भेळीयौ[1] । तठै राव री घणी साथ कांम आयौ । घायल घणा हुवा । रा।। किसनदास दुजणसलौ करणोत री, मु।। दूदौ परबतोत काम आया ।

सं० १६२८ राव चंद्रसेन जोधपुर छूटै कांणुजा री तरफ आया । धरती पातसाह सैदा नु दीधी । तरै सैद जैतारण आया । तरै रा।। रतनसी सीवावत रा बेटा गोपाळदास, कलाणदास, राम नरहरदास ऐ सैद नु मिळीया । तरै इणा री वसी आसरलाई आई छै । तरै राव चंद्रसेन रात-विरात इणां कन्है आसरलाई आय कह्यौ—थे सैदां सु मिळो छौ, धरती वासौ छौ[2], इण वात माहरी बाजी कुट होवै छै[3], थे मत बसो । इणे वात मांनी नही । पछै राव चद्रसेन आसरलाई ऊपर आया, गाव वाळीयौ[4] । गोपाळदास, कल्यांणदास, रांमौ तौ जैतारण था । नरहरदास अठै थौ सु गाव झालीयो । गाव भिळीयो नही[5] । रजपूत ४ फळसा वा'रै आया सु मार नीसरीया[6] । पछै सैदा नु राजा रायसिघ बीकानेरीयौ, रा।। सुरताण मेडतीया नु ले उदावत काणुजा माथै ल्याया । राव नीसरीया । गुढौ लूटाणौ । देरासरी तिलोक मरांणौ[7] । पछै राव सु धरती छूटी ।

राव स० १६३५ डूगरपुर था पाछा आया तद इणा ठाकुरा रै गुढै[8] आया । भला कीया, पछै रतनसी रै बेटै घणा धरती रै छळ राव चद्रसेन रा हीडा कीया ।

राव चद्रसेन विखै माहै[9] सीवाणा रै भाखरे रहतौ तद भीवला देवत कायलाणै रहता । जोधपुर तुरक रहता, इतरौ घणौ विगाड करता[10] । सं० १६६३ पुरवा सूधौ स० १७०२ सूधौ दससालौ मीया फरासत कराय नै श्री जी मेलीयौ ।

३८५१६८।।) स० १६६३ परगना ६ गाव १७८	परगना रौ दस सालौ		
३७१६६६।) स० १६६४ गाव १७६	जोधपुर	११६१८६०)	
४३६०६५) स० १६६५ गाव २२३	मेडतौ	१५२८३२३।।)	
४६१८२५) स० १६६६ गाव २३४	मोजत	४१६३३१।।।)	

[1]आक्रमण किया [2]धरती पर बसते हो [3]मेरी बाजी जाती है [4]जलाया [5]गाँव जीता नही गया [6]निकले [7]मारा गया [8]रहने का सुरक्षित स्थान [9]तकलीफ के दिनो मे [10]नुकसान करते ।

३८४६४६) सं० १६६७ गांव २०६
२४३५७५।) सं० १६६८ गांव २१४
३६८६२८) स० १६६६ गाव २८८
४५०४४७।।।) सं० १७०० गाव २०६
४१०८३६।।) स० १७०१ गाव १६०
५७१४७८।।) सं० १७०२ गाव २१४
४२५५०२७॥)

जैतारण ८०१७४४।।।)
सीवांणो २६६३३४।।)
फळोधो ८०४०३)

× × ×

संवत १६३७ माह सुद ७ राव चद्रसेन काळ कीयो[1]। तरै राव आसकरण नु रा।। सादूळ महेसोत, रा।। आसकरण देईदासोत, बीजा ही[2] वडा ठाकुर भेळा हुय[3] बहुजी सीसोदणी रै पेट रौ छोटौ बेटौ आसकरण नु टीकौ दीयो[4]।

राव चद्रसेन रौ वडौ वेटौ उग्रसेन, बूंदी राव सुरजन री बेटी परणीयो थो, सु उग्रसेन बूंदी सासर[5] थो। सु राव चद्रसेन सूआै, उग्रसेन साभळीयो[6]। तरै पाचसै असवारा सु पहली मेडतै आयो। मेडतै पयदाखान थाणै थो सु आय नै इण सु मिळीया। सु दिन २ तथा ४ मेड़तै रह्या। उठै उग्रसेन विचार कीयो—जु पयदाखान नु मार नै मेडतो ल्यु। साथे रा।। बीको रतनसीयोत, रा।। दयाळदास चांदावत, रा।। महिरावण अचळावत, बीजा ही ठाकुर था। इणा नु पूछीयो तरै इणे कह्यो—उठा सूधा तौ हालो। अठै खड नै[7] सारण आया। बेऊ भाई मिळीया। दिन १० तथा १२ हुआ तरै राव आसकरण रजपूता नु भेळा कर नै कह्यो—दोय खांडा एकण मेन[8] मे न मावै। इणा री निजर बुरी दीसै छै। म्है भेळा नही रहा। औ ठाकुर मोटौ छै। इणा नु थे था भेळो निजर रायौ। सिघावसी मोनु सीख दो। हु मामा कनै उदैपुर जावसु, राणा प्रताप कनै। दाई चदा री राव बेटी।

तरै रजपूते कह्यो—मजाल छै। पछै उग्रसेन नु सीवाणा री विचार कीयो। कह्यो—तो नु दीयो, सु उठै जा। तरै इण रै क्यु दाय आयौ नही[9]। तरै इण भूवण रौ[10] विचार कीयो। तरै महासाळ रै देउरै[11] औ विचार कीयो।

---

[1] स्वर्गवासी हुआ [2] दूसरे भी [3] शामिल हो कर [4] राज्यगद्दी पर बैठाया [5] ससुराल मे [6] सुना [7] घोड़े चला कर [8] म्यान [9] बात पसन्द आई नहीं [10] युद्ध करने का [11] मन्दिर पर।

उठै नाळेर चाढीयौ सु नाळेर खोटौ नीसरीयौ। तरै आपरी आगळी वाढ नै[1] लोही री धार दीधी—महादेव रै माथै। सु अमल घणो खाय नै राव रै डेरै गयौ। आगै वहुजी मीसोदणीजी बैठा था उठै आय बैठो, तरै बहुजी उण री निजर जूठी दीठी, तरै कह्यौ—थे राव कनै जावो। तरै उग्रसेन सारण री मंडी राव रहता, तठै गया। राव ढोलीयै वैठा था। ऊठ ऊभा हुवा। उग्रसेन आय ढोलणी[2] बैठा। राव ढोलीया ऊपर बैठा छै। तठै आदमी ४ तथा ५ राव रा कन्है छै। पहली दिन एक चौपड़ रमिया था, सु राव क्यु मिठाई हारीया था, सु उग्रसेन मिस घाल नै[3] कह्यौ—रावजी मिठाई हारी छै सु मगावौ। थु करनै मिठाई नु मेलीया था। एक रा॥ सेखौ साकरोत, सांकर सीघणोत, गीधण अखैराजोतरौ राव कन्है थौ। सु रा॥ सेखा नु ही उग्रसेन कह्यौ—थे जावौ तौ निवात आवै। सेखाजी नु ही उठावण री घणी ही कोधी। तरै सेखै कह्यौ—उग्रसेन, आधा हुवौ छौ, देख हीडौ[4] द्यौ नही, हु बूढौ माटी कठै जाऊ? तरै उग्रसेन कह्यौ—मो नु चूक पडीयौ[5]। सेखौ तौ बैठो रह्यौ नै उग्रसेन कटारी काढी। काढ नै ·· रा॥ दयाळदास नु दिखावण लागा—आ म्है कटारी मोल लीनी छै। जो · साथ जोय नै पाछी दीधी। तरै च्यारेई आगळीया सु कटारी झाल नै[6] बीजौ हाथ राव री छाती दे नै कटारी वाही, सु करक[7] माहै फूटी। सु रा॥ वीकौ चूक जाणै नही[8]। सु रा॥ वीकै उग्रसेन नु झालीयौ। उग्रसेन हाथ राव री छाती दे नै ऊभौ थौ। ईस ऊपर पग दे नै, सेखै हाथ मुरड नै, कटारी उरी ले नै, कटारी उवाहीज वाही सु एक खवा मे लाग नै वीजा खंवा में नीसरी। तरै उग्रसेन कह्यौ—फिट[9] बीका हरामखोर, तै मो नु मरायौ। पछै सेखैजी एक कटारी सु सेखा भाझणोत रै दीधी। एकण रै वळै दीधी। तरै वीकौ नै मोह न्हास[10] उतरीया। सेखोजी उठै हीज[11] ऊभा रह्या। साद कर नै उग्रसेन रा साथ सु कह्यौ—म्है म्हारा धणी रौ मारणहारौ[12] मारियौ छै। थाहरौ पेट वळतौ हुवै[13] तौ उरा आवौ। सु आया तौ कोई नही। उग्रसेन तौ तरै हीज मुवौ, नै राव जीवता था, सु राव पूछीयौ—उग्रसेन रौ कासू[14]।

---

[1]अगुली काट कर [2]छोटा पलग [3]मिस कर के [4]कार्य [5]गल्ती हुई
[6]पकड कर [7]रीढ की हड्डी [8]धोखेबाजी मे समझा नही [9]धिक्कार
[10]भाग कर [11]वही [12]मारने वाला [13]दर्द होता हो-मु·
[14]क्या।

हुवौ ? तरै कह्यौ—उग्रसेन मारीयौ। राव कह्यौ—भली हुई। नै कह्यौ—म्हारै कटारी दूखै नही। पिण राठौड दयाळदास चांदावत, उग्रसेन कटारी वाही, तरै एक राव री सायळ कटारी लागी थी तिका दूखै छै। पीहर एक पछै राव ही रांम कह्यौ।

राठौड आसकरण भोपत ऐ बेऊं[1] ठाकुरां रौ महाकाळ रै वड डेरौ थौ। सु उठै खबर हुई। तरै इणे कह्यौ—उग्रसेन जठै जाय तठै मारा। ऐ सारण डेरां ऊपर आया। आगै खबर हुई—उग्रसेन रा डेरा ऊपर आया। तठै राठौड़ महिरावण अचळावत, राठौड वीरमदे वैरसलोत, वैरसल गागावत रौ, ऐ दोय कांम आया। बीजा नीसरिया। राव नुं दाग[2] महाकाळ दीयौ। उग्रसेन नुं घीस नै नांखीयौ। पछै मेरा बाळीयौ[3]। तद राव रायसिंघ पातसाह कन्है थौ। तरै रिणमले पातसाहजी नुं लिख मेलीयौ—जे रायसिंघ नुं हजरत मेल्है तौ म्हे चाकरी करा। तरै पातसाहजी घोड़ौ सिरपाव दे सीख दीधी। पछै आय वगड़ी राठौड आसकरण रै घरै मास ६ राव रह्या। उठै हीज परणीया[4]। पछै सिरोही नुं राव ही कांम आया।

देवडौ बीजौ पातसाहजी रौ हजूर पुकारीयौ। तरै रायसिंघ राव चंद्र-सेनोत, सीसोदियौ जगमाल उदैसिंघोत, कोलीसिंघ नु राव सुरताण भाणोत ऊपर सिरोही नुं विदा कीया था। सु सिरोही री धरती मारी, विगाड़ी। राणौ जगमाल राव मानसिंघ रौ जमाई हुवै। सु धरती रौ लागू हुवौ[5]। सिरोही जगमाल विजय की थी। पछै बीजा नु दत्तांणी रा डेरा सुं कितरोहेक साथ मुगला रौ, राठौड खीवौ मांडणोत, राम रतनसियोत राठौड़दे नै बीजा गाव मारण नु[6] मेलीया था। वासै राव सुरताण घात जाण नै साथ गयौ। जाण नै साथ ले नै ऊपर आयौ। देवडौ बीजौ वटक माहै थौ। तठा ताईं सगळी खबर पोहचती। बीजा नुं परौ बीजी कान्ही[7] मेल्हण लागा[8]। तरै देवडै बीजै घणू ही इणा ठाकरा नै कह्यौ—मो नुं परौ अळगौ[9] मत मेल्हौ। तरै इणे ठाकुरै कह्यौ—कूकडो[10] जिण गाव न हुवे छै, तठै ही रात वोहावै छै[11]। पछै बीजौ तौ साथ ले नै भीतरोठ रा गाव मारण नुं गयौ। वासै औ मामलौ हुवौ।

---

[1]दोनों [2]दाह-क्रिया [3]मेर लोगों ने जलाया [4]शादी की [5]पीछे पड़ गया [6]जीतने के लिये [7]दूसरी ओर [8]भेजने लगे [9]दूर [10]मुर्गा [11]रात समाप्त होती है।

संवत् १६४० रा काती सुद ११ रविवार वेढ़ हुई। इतरौ साथ राव रायसिंघ सीसोदिया जगमाल साथे काम आयौ।

राव रायसिंघ चद्रसेनोत, सती ३। कछवाही राजा मांनसिंघ री बेटी, सोनगरी भाण राजा री बेटी, कछवाही राजा आसकरण री बेटी।

सीसोदियौ जगमाल—सती ६।

राठौड गोपाळदास, किसना गागावत रौ जोधौ, राठौड़ सादूळ महेसोत कूपावत, मुहु० महेस अचळावत कांमदार, राठौड़ पूरणमल मांडणोत, कूंपावत, राठौड लूणकरण, सुरताण गांगावत डूगरोत, चहुवाण सेखौ झांझणोत, राठौड़ केसवदास ईसरदास कलावत रौ, सीध कोली दातीवाडा रौ धणी। राठौड वाघ तिलोकसीयोत कूपावत वेढ हुई तिण दिन पहली देवड़ां रै परणीयौ थौ सु सासरै[1] गयौ थौ, सु वेढ़ माहे न हुतौ। वेढ़ हुवां पछै सिरोही जाय कांम आयौ। मु॥ राजसी राघावत, मुंहतौ सोजत रौ। पड़िहार गोरौ राघावत, भांण अभाउत पचोळी। देवौ उदावत, भंडारी आसकरण, सेहलोत वाळौ, कांन आम्बावत, रा० ऊदौ, नेतसी, गोपाळ भोजाउत, जयमल, रा० खीवौ रायसलोत, बारहठ जयमल, रामौ कला रौ, खवास भागळीयौ, किसनौ जलेबदार, दौलतियौ इंदौ, मांनौ इदौ, खेतौ रावण खण्डा, धाधू खेतसी आसायच, किसनौ गोपाळदासोत, सिरदार २२, आसामी १५, रजपूत चाकर बीजा २५, सीसोदिया जगमाल रा जणा १५, कोलीसिंघ रा···· कांम आया।

राव चद्रसेन री बात संपूरण

---

[1] ससुराल।

राजा उदैसिंघ री वात

७

सं० १६४० पोस वद ८ मुदाफर भागो ।

सं० १६४१ सीरोही री धरती मारी[1] । देवड़ो सांवतसी पतो, तोगो चूक कर मारीया[2] ।

स० १६४१ मंणो हरराज मारीयो ।

सं० १६४६ जेठ सुद ३ राणावत मनरंदादे काळ कियो ।

सं० १६४३ चारण बांभण सुं मांमलो आउवै ।

स० १६५० कोटो वूंदी रो परगनो हुवो । रा॥ गोपाळदास मांडणोत मु॥ जैमो मुं॥ देवीदास मूजावत मेलीया ।

स० १६३६ रा भाद्रवा वद १२ अकवर पातसाह जोधपुर दीयो ।

सं० १६४० काती वद ८ पाट वैठा । धणी पर पाळी[3] । मूनी धरती वासो[4] । पैहली तो जोधपुर पायो, पछै इण भांत धरतो हुई—

पायतखत जोधपुरी, दोढ हजार री जात, सातसै असवारा रै मुनसब माहै तफै सुं हुवो । जोधपुर हुवो तद बीलाड़ो आसोप तो टाळीया होज था नै महेवो[5] पिण मुनसप माफक टाळता हुता । पछै इणे वीणती की—महेवा विगर सरै नही । तरै महेवो दीयो ।

स० १६४० वीलाडो तफै हुवो । वीलाडा रो तफो रा॥ वाघ प्रियीराजोत नुं हुतो ।

स० १६४२ तफो १ आसोप रो रा॥ माडण कूंपावत नुं हुतो मु आसोप रो तफो हुवो ।

सोजत हुई स० १६४० राय रायसिंघ कांम आयो ।

स० १६४० पोस वद ८ गुजरात मोटै राजा मुदाफर पातसाह भागो, निवा

---

[1]जीती [2]धोखे से मारा [3]प्रजा का निर्वाह किया [4]वसाई [5]मानतो ।

खांनखाना रा हरोळ[1] था। पछै तिण मुजरा सुं सोजत पाई। सीवांणौ कल्यांणदास मार नैं स० १६४६ मिगसर वद ७ लीयौ।

समावळी पहल की थी।

सं० १६५१ सावण वद १ मोटैं राजा काळ लाहोर मांहै कीयौ।

चमारी पंजाब री पिण हुती लाहोर दसा।

स० १६४६ रा।। *कल्यांणदास रायमलोत रातीवाह दीयौ[2]। तठै* इतरा काम आया—रा।। कलौ जेसावत चांपावत, रा।। रांणौ मालावत पातौ, रा।। कलौ वैरसीयोत रूपौ, देवडौ परवतसिंघ मेहाजलोत, राव कला रौ भाई।

कोटौ सं० १६५० हुवौ वूदी नजीक। तठा पछै संवत १६५१ कोट छोड नैं बवनोर लीयौ। बरस १।। रही। रा।। चांदौ ईसरदासोत बघनोर थांणै रहता।

जैतारण रा कोई गाव था। देवळी, फुटाडौ गांव ६५।

सातलमेर पटा मांहै लिख्यौ थौ पिण अमल हुवौ नही[3]।

× × ×

वात एक मोटैं राजा नैं भाटिये केल्हणे फळोधी वेढ हुई तिण री—

राव मालदे काळ कीयौ। तरै चंद्रसेन जोधपुर राव हुवौ। उदयसिंघ नुं फळोधी दीधी। वीकानेर सोवत[4] घोड़ा री आई। सु तद फळोधी ही दाण[5] लागै। बीकमपुर रा पिण आदमी तेड़ण आया[6]। सुं सौदागर मांडणसर वीकानेर सु कोस १२ तठै आयौ। कह्यौ—अठै मो नु आय नै तेड जासी तिण मारग जायसू। राव डूगरसी दुजणसल रै भाई भवानीदास नु मेलीयौ[7]। कह्यौ—जाय नैं सोबत ले आवौ। ऐ पहली रा आप सोवत वीकमपुर नु चलाई नैं भवानीदास मडणसर उतरीयौ थौ नैं मोटैं राजा साथ मेलीयौ थौ। सु उठै उतरीयौ थौ। इणा नु खबर हुई। तरै इणे चढ खड़ीया। आगे गया, सोवत तौ गई नैं भवानीदास दुजणसालोत छै। तरै मोटा राजा रौ साथ थौ तिण माहै राठौड भैरौ जेसावत सिरदार थौ। बीजा इतरा ठाकुर था—राठौड जोगीदास, भाणोत रूपौ, राठौड नीबौ दुजणसालोत, मांडणोत हिंगोलौ, वेरसियोत रूपौ, रतनसी महिकरणोत, राठौड रांम रतनसियोत उदावत, राठौड

---

[1]फौज के आगे का भाग [2]रात को हमला किया [3]जागीरी अधिकार देने की रस्म-अदायगी नहीं हुई [4]समूह, दल [5]कर [6]बुलाने आये [7]भेजा।

राठौड़ गोपाळदास रतनसियोत उदावत, राठौड़ जयमल भाणोत।

इणे भवांनीदास नुं माणसा ६ मारीयो। भवांनीदास, मेघो रिणधीरोत मूळावत, लूणकमल सूजो, भू॥ आणंद, जेतू धमण्डळमोत, सिद्धराव मेघो रामावत, सो० भीमदे, कमो केहरी।

संवत १६३१ फळोधी छूटी।

तठा पछै राव डूंगरसी भाई रै वैर कटक कीयो[1]। मोटा राजा रै पिण मेळ हुई कठा की मु जोधपुर सुं नसीरदी रा तोवची[2] माणस ६०० तेडीया था। पछै भाटी राव डूंगरसी वीकमपुरियो, राव मडळीक वैरसलपुरियो, गाडाला केल्हण माणम हजार २००० भांभन सुं कटक कर नै आय कुंडळ मांहै तळाव हमीरसर छै तठै उतरीया। मोटो राजा तुरत चढ नै ऊपर गयो। कातीमरा री रित[3] होती। पेहली वीकमपुर सुं रांणा री तळाई आया। अठै केल्हण भेळा कर नै सेखासर आया। सेखासर मु वांहगठी हरवू रै पगे लाग नै हमीरसर कुडळ मांहै उतरीया। अठै वेढ[4] हुई। तठै भाटिये वेढ़ जीती। मोटे राजा हारी। इतरा राठौड कांम आया—

राठौड भैरो जैतावत, राठौड़ नीवो दुजणसालोत, इंदो कलो चुडावत, राठौड हिंगोलो वैरसियोत, राठौड जागो भाणोत, रतनमी महिकरणोत, राठौड़ दुजणसालोत रायसल, राठौड देईदास भाणावत, रायचद जोधावत, हमीर आसावत, राठौड नागराज रतांणी, धायभाई केसर, चौ. रायमल महिकरणोत, रामो, भा. प्राग, गेता।

भाटिया रा माणस ५० कांम आया।

मोटा राजा रा मांणस……काम आया। वहै छै मोटो राजा कोट छोड गयो। भाटी दिन ५ तथा ७ उठै रह्या। देस लूटीयो।

मोटे राजा उदयसिंघ री वात संपूरण।

---

[1] भाई का वैर लेने के लिए फौज तैयार की [2] तोपची [3] बाजरी आदि काटने का समय [4] युद्ध।

महाराजा सूरजसिंहजी रै राज री बात

७

सं० १६२६ वैसाख वद अमावस जनम ।

सवत १६४२ असाढ वद १२ अकवर पातसाह टीकौ सात सदी रौ मुनसव—जोधपुर, सोजत, सीवांणौ दीयौ ।

संवत १६७६ भाद्रवा सुद ६ मेहकर काळ कीयौ ।

सवत १६५१ पोस माहै जोधपुर पधारीया । पाट बैठा[1] । दिन आठ रह्या । गुजरात पधारता देवड़ा डांडीया[2] । राजा सूरजसिंहजी पूरा पाचहजारी न हुवा । भरण वेळा असवार २५०० वदिया था पिण जागीरी तिण री पाई नही ।

गुजरात ऊपर पधारै, तद राठौड रामदास चांदावत भंडारी मांना रै मामलै छिड़िया हुता, सु राखीया । राठौड नारायणदास पताउत सौ॥ जसवंत मानसिंघोत, राठौड़ वलू तेजसियोत अै चारे ठाकुर वास राखीया[3] ।

सवत् १६५६ सगतसिंह नु सोजत हुई । हुकमनावौ[4] तालकौ राठौड भाण जैतमालोत ले आयौ । तरै भंडारी मानै सोजत रौ अमल दीयौ[5] । पछै राजाजी वुरौ मानीयौ । पछै वळै भंडारी मांनौ पाछौ आय गढ लागौ । सु माहै सगतसिंह रौ साथ असवार ७०० तथा ८०० हुता । मास ६ गढ झालीयौ । पछै राव सगतसिंह आयौ । तरै राजाजी री फौज उरी आई । गढ रौहै इतरा बडा ठाकुर गढ माथै था । सगतसिंह रा चाकर था । राठौड़ भाण जैतमालोत मुदायत १, राठौड जसवत सादुळोत, राठौड़ राघवदास सूरजमलोत, राठौड़ सिंघ जसवतोत, राठौड किसनसिंघ चांदावत, राठौड़ जयसिंघदे करमसियोत, राठौड हरिसिंघ चादावत ।

महाराज श्री सूरसिंघजी री फौज माहै अै बडा उमराव था—

राठौड़ खेतसी गोपाळदासोत, चापौ भा० वाघ खेतसियोत, रुद्र कचरावत,

---

[1]राज्यगद्दी पर बैठे [2]देवडो को दड दिया [3]कमा कर रखे [4]नये जागीरदार के लिए जागीर प्राप्ति का हुक्म [5]जागीर का अधिकार दिया ।

भा० धनौ करमसेन रौ चाकर, भा० भीवौ, रा० मांनसिंघ कल्यांणदास, जेमलौ रा० विरागदास सुरतांण रामोतरौ, का० वाघौ, रा० किसोरदास, किल्यांणदास, जेम सूरसिंघ हमीरोत रौ, का० सुर नारणोत रौ, रा० सांवळदास रासाउत, दइयौ नापौ, इंदौ महेस, च्यार सेलौत—सेखौ, राघौ, हिंगोलौ, धीरौ। तीन हुल—भारमल, मकवाण, किसनौ। चहुवाण कांनौ, माल लखमणोत, माजवी लाडखां, तीन वेठवासिया।

छियासी किसनसिंघ रा काम आया। रा० किसनसिंघ राजावत, रा० विमनदास कल्यांणदामोत, रा० रामदास चांदावत, रा० गोपाळदास मांडणोत, भा० सुरताण भानावत, रा० कान तेजसियोत, नारायणदास पाताउत।

इतरा राजाजी रा काम आया—

भा० गोयंदास मानाउत, भाटी कलू कांन्होत, भा० प्रिथीराज करणोत, भा० भदौ नारायणदासोत, भा० मूजौ भैरवदासोत, भा० गोयंदास जेमावत, भा० मनोहरदास गोयदासोत, हुल पतौ भदाउत, रा० तिलोकसी सूजाउत, रा० गोयदास राणावत, पाताउत रा० भोपत कला जोगाउत रौ, रा० केसोदास सावळदासोत, पवार केमौ, चहुवाण नरहर पिरागोत, चौ० साजण सिवियोत, मो० केसौदास, गौ० मेघौ घायभाई, पूनौ साखलौ।

इतरा घायल हुवा—

रा० राजसिंघ खीवावत, रा० भीव कल्याणदासोत, भा० नरहरदास गोयदास जेमाउत रौ, रा० जगन्नाथ किल्याणदासोत, रा० उदौ पातावत, भा० विठल गोयदासोत, मु० नराण पाताउत, भा० उदौ भैरुंदासोत, कांधळ दहुइयौ, मा० हरिदास रांणावत।

संवत् १६७६ भाद्रवा सुद ६ सूरजसिंघ राजा मेहकर देवलोक पधारीया।

इतरा रै बदळै जाळोर माचोर लीया। संवत् १६५८ जेठ वद अमावस अमरचपुरी वेढ हुई[1]। राजाजी जीतौ। तठै राजा रौ साथ काम आयौ—

सा० वैरसी रायमलोत, रा० भाण वेटवासिया, तोवची[2]।

संवत् १६५८ आधौ मेडतौ हुवौ।

संवत् १६६१ पूरौ मेडतौ हुवौ।

---

[1]युद्ध हुआ [2]तोपची।

संवत् १६६१ पोह सुद ५ जैतारण हुई । भा० मनै अमल कीयौ[1] । मास १।। माहै भा० मने कोट करायौ । सवत् १६६२ जोधपुर राजाजी पधारीया । सवत् १६५३ मिगसर सुद पूनम रा० भोपत उदैसिंघोत पंवारे मारीया[2] ।

सवत् १६६३ गुजरात बाहादर पातसाह माडवे कोलीलाला वांसे पैठौ । तरै राजाजी माडवा ऊपर पधारीया । तठै वळतां[3] साथ सु खोहलै मामलौ हुवौ[4] । तठै इतरौ साथ काम आयौ—रा० सूरजमल जैतमालोत, रा० गोपाळदास माडणोत, रा० ईसरदास नीबावत, रा० जयसिंघदे करमसीयोत, रा० हरिसिंघ चांदावत, रा० गोपाळदास ईडरियौ, सा० पांचौ नादावत, जयसिंघ भींवौ, सा० ठाकुरसी रामदासोत, रामदास डुगोत, परवत भीदा, रा० राघवदास गोपाळदासोत, म० माधोदास सादुळोत, चौ० कुम्भौ गोयंदोत, मु० भोपत मानसिंघोत, सी० रामदास चापावत, रा० सावळदास रांणावत, भा० रायसिंघ जेसावत, रा० जसवंत कला जेसाउत रौ, भा० भोपत रांणाउत, भा० किसनदास मेहाजलोत, भा० भाण कलावत, रा० तिलोकसी महेसोत, रा० रायसिंघ ईसरदासोत, रा० कचरौ सिवराजोत, रा० भोपत हिंगोलावत ।

संवत् १६६२ अहमदाबाद आया । आसाढ सुद १ संवत् १६६८ पवारा सु भोपत रौ वैर भागौ[5] । संवत् १६६३ रा पोह सुद पूनम अहमदाबाद सु जोधपुर नु चालीया । फागण सुद ७ जोधपुर पधारीया । संवत् १६६६ साके १५३५ चैत सुद १ अहमदाबाद आया । ब्राहनपुर सु दिन १ रह्या । चैत सुद १० बारै डेरा कीया । संवत् १६६६ रा जेठ वद ११ जोधपुर आया ।

कवर भीव रांणावत एक बार वयु राणा अमरसिंघ सु दिलगीर[6] हुवौ थौ । तरै भाटी गोयदास भानावत आ बात माभळी[7] । तरै रु० ५००००) पटौ भीवा नु लिख मेलीयौ । भीवौ ना'यौ[8] । १६६६ रांणी सोभागदे काळ कीयौ । सवत् १६६६ काकड़खी कवर गजसिंघ, भा० गोयदास रा० गोपाळदास भगवानदासोत नु मारीयौ । सवत् १६६६ जेठ सुद ७ भा० सुरताण नै मारीयौ । सवत् १६७१ जेठ सुद ८ भा० गोयदास नु किसनसिंघ ऊपर आय मारीयौ—रा० किसनसिंघ राजावत, रा० माधोसिंह रांमदासोत मेडतियौ, रा० करन सगतसिंघोत, रा० गोपाळदास वाघोत जैतावत ।

---

[1]जागीरी अधिकार का दस्तूर किया [2]पवारों ने मारा [3]लौटते समय
[4]युद्ध हुआ [5]वैर समाप्त हुआ [6]नाराज [7]सुनी [8]नहीं आया ।

वडनगर, खैराल, रतलांवा, फळोधी, पिंमांगण, इतरा रजपूत विहारिया रा कांम आया—जवदलखांन, सोलारखांन, ताजू, मु० राजमो ।

इतरी राजाजी री साथ काम आयो—साहणी रायसिंघ चांपाउत, मांगळियो हरिदास राणउत, नायक खांन, महमद, फुलरो ।

संवत् १६६७ पोस वद ११ ब्राहनपुर राजाजी रै विगर हुकम रा० भगवांनदास, रा० गोयंदास भगवांनदासोत, उदैसिंघोत रै बेटा वळरांम, दयाळदासोत भीम, कल्यांणदासोत कुंद्धेला, दला साह नुं डेरा में पेंस मारीयो । तरै कुसळै आया—चंद्रावत रांमपुरा रा धणी, राव हठीसिंघ, नरहरदास, राव चंदो, राव दुरगो, अचळो, सीवो । कछवाहो कुतळ रा पौत्रा, आमेर धणी राजा जयसिंघ, माहसिंघ, जगतसिंघ, राजा मांनसिंघ, भगवतदास राजा, राजा भारमल, प्रिथीराज राजा, चांदण, उधरण, जवणसी, कुतल ।

राजा सूरजसिंघजी राजा गजसिंघजी नुं इतरा परगना इण जमै पातसाही दरवार सुं इण रेख पाया था । सं० १६८४ ताई परगना रह्या । पछै सं० १६८५ पछै साहिजहा पातिसाह जमै वधारी आ, मुदगी जमै छै ।

रुपीया	गाव	आसामी
१६६१२५)	१०१६	परगनो जोधपुर तर्फ १८
२०००००)	३८१	मेडतो तर्फ ६
६८५०८)	१४०	जैतारण
१२५०००)	२३६	सोजत
३७५००)	१४०	सीवाणो
६४१६६)	११६	सांचोर
२८७७५८)	४२१	जाळोर
६७५००)	६२	फळोधी
१०००००)		रतलाव
६६१५०)	१२	वडनगर ६६३७५)
५४५२५)	१४	तेरवाड ३००००)
८३६४)	१२	मोरवाडो ७५००)
११२६१४)	११०	गेगलु
२००००)	६	पीनागण
१००४६५)	१०५	धिराद
१२००५०)	६१	राधणपुर

४०००००)	५६५	नागोरपटी १८
३७५००)	५	भिलाय
५३३००)	४५	मसुदो
७८९२९)		जळ गाव रो परगनो दिखण
१८०००)		वीर गांव दिखण
४३३१)		रजो री आसेर रो दिखण।

राजा श्री जसवतसिंघजी नु इण रेख ऐ परगना हुवा—

असल	इजाफो	जमलै	आसांमी
१९९१२५)	१४४०००)	३४३१२५)	जोधपुर
२०००००)	१५००००)	३५००००)	मेडतो
१२५०००)	२०००)	१५००००)	सोजत
९८५०८)	१५१४९२)	२५००००)	जैतारण
३७५००)	३७५००)	७५०००)	सीवाणो
६७५००)		६७५००)	फळोधी
१४३७५)		१४३७५)	सातलमेर
		१२५०००)	....
		२५००००)	मलारणो
		१७५०००)	उदेही
		२८३०००)	रैवाडी

स० १६२४ साके १४८९ माह वद १० इसमायलकुली जोजावर कन्है रा।। लखमण भदाउत रै गुढो[1] थो, तठै भूबीयो[2]। तठै गुढो भार भरथ लूटाणो[3]। पछै रा।। लखमण, रा।। सावळदास रांमोत, रा।। सुजो सादुळ रायमलोत वाहरा आपडी, भूबीया, मुगला नु कादु कन्है। तठै घणा मुगल मारीया। हाथी ४ आया। लखमण रो घणो सोभाग हुवो[4]।

स० १६७२ गांव ३ राजा श्री सूरजसिंघजी नागोर रा मोजा चपलीया, तठा पछै नागोर आसपखान नु हुई। तरै भा।। लुणो जाय नै मुकातो[5] कीयो। रु० ३१००) गाव आसोप रै तर्फ भेळा कीया।

---

[1]रहने का सुरक्षित स्थान [2]युद्ध किया [3]लूटा गया [4]प्रशंसा का पात्र बना [5]रुपये के रूप मे लिया जाने वाला भूमि का कर।

सं० १६२१ रा॥ चंदा वीरमदेउत नु नागोर हसनकुलीखां चूक कर नीसरणी चढतो नांखीयो । चाकर हसनकुली रै वागा रौ झालीयौ सु वाढ़ीयो नै मुगल २ वीजा ले रह्यो ।

सं० १६२६ राउ कला रांमोत नु नाडुल सेखब्रांम सु चूक कर जिणा १४ सु मारीयो । रा॥ सादुळ कांम आयौ ।

सं० १६१० फागुण सुद १३ गुरुवार गुजराती पातसाह महमद गुनाम वुरहनदी मारीयो । तिण नु तेजसी मारीयौ ।

स० १६२३ काती सुद १५ रा॥ जसवंत डूगरसीयोत मुगला सु वेढ कीधी[1] । तठै कांम आया । रांमगढ उरै वेढ कीधी । इतरौ साथ काम आयौ— जसवंत डूगरसीयोत, किसनदास मालावत, जगमाल जेसावत, रतनसी जैतमीयोत, कांन जैतसीयोत, सांकर गागावत, तेजसी, कल्यांणदास, हमीर लखमणोत सूजा रौ पोत्रौ, उदैसिंघ रतनसीयोत, भवांनीदास रतनसीयोत, सीसोदियौ उरजन, वाघ कान्होत, राजधर खीव पंचाइणोत, मुरताण देवड़ौ, कलाण जैतमालोत ।

स० १६४७ आसाढ सुद १२ रा॥ वीकौ रतनसीयोत, कंवर जगतसिंघ, पुरब पठाणां सु वेढ़ हुई । मीर कतुल, भतीज जणा २ सिरदार वीका रै हाथ रह्या ।

स० १६१४ रा चैत वद ६ जैतारण मुगलां मारी, रतनसी खीवावत कांम आयौ । कासिमखान सु वेढ कीधी ।

स० १५६७ पातसाह हमाउ कनां[2] पठांण सेरसाह जात सूर, पातसाही लीधी । स० १६११ पाछी वाळी[3] । हमाउ फौत हुवो । पाट अकवर साह वैठो । स० १६०६ जेठ वद……राव मालदे वाहड़मेर ऊपर रा॥ रतनसी खीवावत नु मेलीया सु भागा । पछै जैसळमेर नु कटक हुवा[4]—सं० १६०६ काती माहै ।

मूरजसिहजी रै राज री बात संपूरण ।

---

[1]युद्ध किया [2]हुमायू के पास से [3]वापिस प्राप्त की [4]फौजें गईं ।

सोजत रै मंडल री बात

१

सोजत वडो गाव। आदु सास्त्र[1] में सुद्धदंती कही छै। केइक वळे त्रांबावती कही छै। चारूं तरफ वडी सीव[2]। च्यारे तरफ अरहट हुवै छै। सोजत रौ कोट नानी सीरडी माथै छै। कोट माहै पाणी कोई नहीं। कोट सांकड़ौ-सो[3] छै। रिणमेळाव तळाव कोट लगतौ हीज छै। सु विसै विनांण कोट मांहै रिणमेळाव नुं पाणी नुं आरी छै। कोट मांहै वडी इमारत कांई नही। कोट आगै परकोट, तिण मा वडी कोटडी छै। वागुर[4] छै। केइक मांहै हुजदारा, मुहतां रा घर १०० छै। पौळ ऊपरा कोठार ऊपर रावळौ दरबार छै। कोट अडतौ ठाकुरद्वारौ छै। पौळ आगै तीन तरफ नुं हाट छै। महाजनां रा घर वसै छै। कमीण[5] लोग घणौ वसै छै। देहरा च्यार तथा पाच जैनां रा छै। जोधपुर रै फिळसै लक्ष्मीनारायणजी रो, पाताळेस्वर महादेवजी रो देहरौ छै। कोट वासै व गडी री तरफ नु पूरब दिसा देवीजी रो भाखर छै। भाखरी माथै वडो थान[6] छै। प्रसिद्ध ठौड़ छै। आऊवा रै फिळसै हणवंत नाडी नजदीक छै। तठै हणवतजी रो देहरौ छै। कन्है रड़ी माथै सोजल[7] रो थान छै। इण तरफ नुं नीमली नाडी धवळी ठड छै। पाखती[8] सिम्रलवाडी वडलौ धवली वाड़ी कन्है वाघेळाव तळाव छै। चोलावौ, पीपळियौ, वडा अरहट छै।

जोधपुर रै फिळसै पिच्छम दिसा नरावौ, खुरसियौ, वड़लियौ अै अरहट छै। जोधपुर रा फिळसा आगै हीज धारेसरी नदी वहै छै। नाव रै रामधरां रो पाणी आवै छे। बीजौ नदी श्री वैजनाथजी रा पावा सु चलै। तिण रो पाणी इण हीज माहै आवै छै। नदी पार गारचिया अरहट[9] तीस तथा चाळीस छै। सु जोधपुर रै मारग सोजत सुं जातां डावी तरफ ईंदावौ अरहट विलावस वासै[10]

---

[1]प्राचीन शास्त्रों में [2]सीमा [3]सांकड़ा-सा [4]घास आदि का ढेर [5]नौकर-चाकर, शूद्र [6]देवता का स्थान [7]एक राजकुमारी थी जिसके नाम पर सोजत का नामकरण हुआ [8]पास में [9]कच्चे पानी के रहँट [10]पीछे।

द। नै जीमणी[1] तरफ पाट[2] जोड़[3] लगती सोजत री छै। पाट आगै जोधपुर
ारग पावू नाडी तळाई छै। तिण री वेळ तरफ जोधपुर रै मारग जोड़ छै।
ु लूडावस रा फिळसा तांई जोड़ छै। सु तीन पाट पावूनाडी कन्है सोजत वांसै
छै। मारग री डावी तरफ नै बीजौ जोड़ राजा गजसिंह विलावस वांसै घातीयौ।
नै पावूनाडो जीमणी तरफ रौ जोड़ सोजत वांसै छै। सु रांमावसणी रै मारग
कुवा नाडी तांई चांवडिया रै जोड़ अड़तौ सोजत रौ जोड़ छै। उण मारग कुवा,
नाडी नै अरहट दस वडा खारचिया सोजत रा छै। ऊंचास रौ टीला वाळौ
कलाळां रौ नीवड़ियौ घड़सावौ दुलां रौ भळै अरहट छै। पाटां छै।

चांमडियास रै मारग करमावा रै सेरियै बीजी तरफ रांमासणी रौ मीठ-वाणियौ छै। सागावौ मुहतां री टीवड़ी अठै छै। मेड़ता रै फिळसै री तरफ पावटौ[4] वडौ नीवौ कदीम छै। सीधी सहस वीघा चाळीस धरती छै। जव, कूरौ[5] सदा हुवै छै। वडी जायगा छै। तिण पावटा अड़तौ एक नीवौ पावटी ही में हुई छै। पावटा वांसै वघेळाव तळाव छै। इण फिळसै माळियां री वाडियां वीस तथा पच्चीस मीठवाणियां नीवा नदी उरै छै। नदी परै नजीक रांमासणी घनहड़ी री हद छै। वाड़ियां रामासणी रा मारग सुं ले नै खोखरां रा मारग तांई छै। तठौ नु वळे कचोळियौ नाडौ[6] छै। तठा आगै कुडली रा नदी उरै अरठ ७ तथा ८ मीठवाणिया भली जायगा छै। आगै नदी छै। तठा परै तौ घणेडी मंडला री सीव छै। कुडली था जोमणी उनावडी सोजत री सहर वडी वगडी पांच नाडां री तरफ सीहाट रा अरहटां तांई छै। सोजत रै उगमणी[7] तरफ सीहाट रौ मारग छै। तिण सोजत सुं सीहाट जातां डावी तरफ सोजत री सीव छै। सीवाणौ तळाव वासणी कन्है छै। आगी कोस एक सोजत सुं सीहाट री तरफ हिरणखुरी नाडी छै। तिण री डावी तरफ सोजत री जीमणी सीव वासणी री छै। आगै इण वासणी लगती बीजौ वासणी सबराड़ रै मारग छै। तिण री जठै सीव[8] छै तिण उरै वसवां री सींव हणवन नदी सीवाणा दिसा घोडी सी छै। सीवाणै कन्है मुहता रा, गोपी रा बेटां रा खेत छै। नै एक

---

[1]दाईं [2]वह जमीन जिसमें वर्षा का पानी शामिल होने से गेहूं चने आदि होते हैं [3]घास के लिए रक्षित स्थान [4]देर से चलने वाला रहेट [5]एक तरह का घास जिसके बीज की रोटी गरीब आदमी खाते हैं [6]छोटी तलाई [7]पूर्व [8]सीमा।

चोवटिया विरधा रौ अरहट छै। सीरवी दासा रौ अरहट छै। एक रूपसी मुहता री वासणी अड़ती डावी छै। उरैह खेत दोय छै। इण डावी अड़ती दूधवड़ रौ मारग सोजत सु जाय छै। तठै अरहट एक माळी गगा रौ छै। अरहट एक चारण केसा रौ छै। दूधवड़ रा मारग नै पंचोळ नडी रा धेनावस रा मारग विचै घणी सोजत री सीव छै। वगरू, धवलौ, ढंढ, नीवलियाँ री तरफ दांतिया दिसा[1] छै। खेता रौ मुदौ अठा ईज ऊपरै छै। रह नडी वड री वासणी, लूणकरण री वासणी वाघावस दिसा[1] सीव छै। इण सहर मांहै अरहट रावळै[2] कोई नही। डोळिया[3] रा अरहट च्यार तथा पांच हुसी। सोजत सु धेनावस रै मारग नोखडौ मांडा घाची री छै। बांमणां रा अरहट छै। वड़लिया पिण मारग अड़ती छै। आगै इण तरफ नु मारग रै डावै कांन्हैं[4] पंचौळ नडी छै। तिण पाछै पंचोळियां री सरह रा खेत छै। मारग जीमण नदी कन्है खेत दस रावळा कुडली रा छै। तठा परै नदी छै। नदी परै जोड़ छै। कसवै सोजत हळ २०१ दरवार हामतीक वरसाळू जुपै छै[5]। तिणां हळा री विगत ८० घांची, ४० सीरवी, ४० माळी, २० कलळ रा, २० साह रा, अरटे वीघा ६०१ तथा ७०१ वण हुवै। अरहट ६ तौ घणा पिण अरहट ४० तथा ५० सदा हुवै। गेहूं मण २००१ भोग री ठौड़ मीठवाणिया करै तौ बीघा सौ खंड छोंतरा अजमौ[6] हुवै। मेहदी वाड़ियां माळियां री सगळी छै। तिण रा रुपिया १५०) जाजामाठा[7] सदा आवै। वाडियां नीवू, केवड़ा, आंबा, आवली, बोर, तरकारिया घणी हुवै छै।

इतरा गांव कसवै सोजत री सीव मांहै वसिया—विलावस, धेनावस, रामासणी, वासणी किसना री, वासणी मांनसिंघ री, वड री वासणी, रायमल री वासणी।

---

[1]दिशा [2]जागीरदार के [3]ब्राह्मण आदि को दी जाने वाली पुन्य की जमीन [4]बाई ओर [5]राज्य को अनाज के एक हिस्से के रूप मे कर देने वाले हल २०१ वर्षा की मौसम में जोते जाते हैं [6]अजवायन, कहावत प्रसिद्ध है—'किण री मा सोजतियौ अजमौ खायो है' [7]ज्यादा कम।

	वायव	उत्तर	ईसाण	
	खारियो, महेव पलासणो, गुजरावस, रीवहड, गोदेळाव चामडियास दूटेळाव, हापत।	घटवडो, मढलो, गनहडो रामासणो, चावडियास।	चंडावळ, बोलवासणो नडलो, सिरदारपुरो नाथल, कूडी भरेहर। करणो भरथवसरोट रायरो, दोयनड़ी करमावस, मुरढावो खोखरो, साडियो।	
पश्चिम	धांगडवस, चाहडवस, चोपडो, मोरटूको लोळावस, राजलवो भेटनडा, ममुल, नापावास सांसण माघोदास घघवाड़ियो।	कसबो सोजत	कुकड़ो, वली, भायलो नावरो, नारायणदास रो गुडो, ढूढो, उदयभाण रो गुडो, दगडो।	पूरब
	वीरावस, संडारडो परायण, गागुरड़ो सूराय, बाघावस मडेसर। ववो कराड़ो भींवळियो देवळो, बीठोरो चिरपटियो, दुधवड़ लोळावस, खेरक।	घिणलो, जाणोदो, ईसाली, गुडो, भ्रावो, सरवाड, रोसाणियो मेसाणो।	सचियाय, सारण मोभारडो, थळ कंटाळियो, महिलावस सेखावस, सीहाद मुहलियो। सिरियारी वापारी मंडोमलसि दियायडा, घुणलो, भेंवलो, रूपारास।	
	नैरत	दक्षिण	अगनि	

वरजालीयो खलाउत छै।

सोजत रै परगनै मेरां रौ जोर काठौ[1] छै। सोजत थी उगवण री तरफ भायली मेर मोठीसिया री छै। सु आगै तौ भायली रा खेडा १२ वसता। हिमैं मोठीसमेर छै। पिण इण तरफ कोस पाच वळै भायली कन्है—अै लागै कुकड़ौ मांकडो जामणेर रावत रा गाव १० छै। मांणस ५०० सेरी जोड़ छै। सोजत था कोस ५ अगन दिसा हरिया माळी कटाळिया ऊपर बुरहारिया रा गांव १२ तथा १४ छै। नै अगन[2] रूपारास[3] बीचै सोजत था कोस ७ सचियाय सारण छै। गोरंभ अड़ता वाहड़ोत मेर छै। घंटाउल वगड़ पीपळी.......... हरियौ खुढोली ठाकुर वसजीथ रा गांव १२ तथा १४ छै। मांणस ६०० तथा ७०० री ठौड। अै सदा सोजत रा विगाडी[4] छै।

सोजत थी कोस ७ व्यापारी सीरीयारी मलसियावावडी। इणरै माथा सरै मेरां रा गाव वधाणौ, चेतरौ वरजाल अै गाव आठ तथा दस सोजत था कोस दस घणलौ, जानूदौ, इण तरफ मेर खखाउत छै। इण रा गाव छापरी तिलाई गाव पाच छै। इमडौ-सो तौ मेरा रौ बिचार छै।

सोजत रै देस मे रिणमाला रौ आगै तौ जोर दखल भूमीयाचारौ[5] थौ। हिमै ही छै। चडावळ नै कटाळिया विचै अजै सउतारा री जायगा छै। इण मगरा रा जड ए सदा रहै छै। नै कटाळीयौ, सेखावस, वापारी माढौ, सीरीयारी, मिलसावावडी, रांणावस, गाधणौ, वीठोरौ, धिणलौ, जाणोदौ, वातौ, ताईं आ कूपावता री हद छै। मगरा री जड तथा बीजा ही गावां इणां री ठौड़ छै। चडावळ डावै बाता उरै अटवडौ, महेव चौपड़ौ, हरसीयाहेड़ौ, गागुरड़ौ, साडा-रड़ौ, दुधवड वाहड़सौ, भागेसर, खाभल, भेटनड़ा, सूराइतां, इण तरफ सोजत रै देस मा खाली साहुकार हुकमी छै[6]। बीजा देस मांहै तौ अचैभ[7] रीयौ छै।

इतरा गावां सोजत रै पड़गनै मेर वसै छै, तिण री विगत—सारण, रसाल, नावरी, डोघोड, गजनाई, कालब, थळ, लांवोड़ी, माहिली, सिरीयारी, कैरां रौ खेड़ौ, बोरी मादौ, सचीयाय, नीवडी, फूलाज हीरावस, जोजारड़ी, वंणीयामाळी।

× × ×

सोजत रै नाम री वात—

---

[1]अधिक [2]अग्निकोण [3]दक्षिण दिशा और अग्निकोण के बीच की दिशा [4]हानि पहुँचाने वाले [5]भोमियों के अधिकार की जमीन [6]हुक्म मानने वाले [7]अद्भुत।

अंबावती नगरी। अवसेन राजा। तावा री खांन हुती। तिण रै सोजल नांवै बेटी हुई। तिका चौसठ जोगणीया साथै रमती[1]। सु सोपो पड़तौ[2] तरै नीसरती[3]। हाथ लगावती, जड़ीया ताळा झड़ता। पछै भाखरी चौसठ जोगणीयां भेळी[4] रमती। रात थका सूता माणसा पाछी आवती। आ वात राजा सुणी—जे कुंवरी सोपा पडीयां पछै कठै ही जाय छै। तरै एक दिन जिसड़ी नीसरी तिसडं राजा रै वाधरौ परधांन हुल थौ तिण तुं कह्यौ—तुं पाछै छांनौ थको जा[5] देख आव, कठै जाय आवै छै? तरै पाछै पाछै वांधरौ गयौ। सोजल उठै गई। वाधरौ हेकण गिड़ा[6] हेठै छिप वैठौ। आगै सोजल गई तरै जोगण वोली—जे आज तौ सोजल एकली नही, कोईक साथै ल्याई। तरै सोजल कह्यौ—हुं तौ साथै कोई लाई नही। कह्यौ—खबर करि, कोयक छै। तरै सोजल पाछी आई। आगै देखै तौ वांधरौ वैठौ छै। तरै पूछीयौ—तुं क्युं आयो? तरै इण कह्यौ—जे मो नु राजा मेलीयौ[7]। तरै सोजल कह्यौ—भूडो कीधौ, हिमै आ वात तुं राजा नुं मत कहै, कहसी तौ राजा मरसी, ठकुराई थारै आवसी, औ गाव म्हारै नांव वससी[8]। यु कह नै सोजल जोगणीया भेळी रमती हुई। वांधरौ पाछौ आयौ। राजा पूछी—यौ क्यु? तरै वांधरै कह्यौ—राजा! पूछणवाळी वात नही। राजा कहै—कहो। तरै वाधरै वात कही। राजा मूऔ। वाधरौ हुल ठकुराई रौ धणी हुवौ। वाधरा रौ करायौ वघेळाव तळाव। सोजत गाव रौ नाव सोजल रै नावै हुऔ। पछै कितरेक दिना हुला आगै सोनगरा लीधी। पछै कितरेक दिना सोनगरा आगै सीधले लीधी। सीधला आगै राव रिड़मल लीधी।

---

[1] खेलती [2] रात्री का वह समय जब सब लोग सो जाते हैं [3] बाहर निकलती थी [4] शामिल [5] चुपचाप पीछे जा [6] बड़ा पत्थर [7] भेजा [8] मेरे नाम पर बसेगा।

राव लाखे री बात

१

राव लाखो सिरोही राज करै। तद राजधर देवल सूधौ लोहियाणौ भोगवै[1]। सु देवल राजधर राव री धरती रौ निपट घणौ विगाड करै[2]। नै हाथ क्यु ही कियां आवै नही। तरै राव डायल[3] ठाकुर थौ सु राजधर नू दोय आदमी मेल नै कहाडीयौ[4], कह्यौ—थे आज पहली म्हारौ विगाड कीयौ सु म्हे बगसीयौ[5]। नै थे म्हानु परणावौ। तरै राजधर कह्यौ—थे ठाकुर, म्हे रजपूत। म्हा नै थां किमी सगाई ? पछै वळै राव घणौ हठ कीयौ। वळै रूडा माणस मेल नै वात आरे कराई[6]। पछै आप राव परणीया।

परणीया पछै कितरेहेक दिने राव आप बोलवध ले नै[7] एकर सु राजधर नै राजधर रौ बेटौ लखौ उठै तेडाया[8]। सासतौ[9] रीझा मौजां ऊपर रोज री मौजा दे। पाखा देवली उणा री नु पिण हुजदार परधान सेलहथ खवास साहणी सगळा नु मौजा सु भर मारीया[10]। घणा राजी कर नै सीख दीधी। पछै वळै पिण सासतौ भली भली वस्ता राव मेल्है। मौजां सु सगळी ठकुराई देवला री हाथ रै पाण वस कीधी। बीजी वेळा तेडीया तरै विगर बोला राजधर नै लखो, बाप बेटौ, दोऊ आया। सु राव घणौ आदर कीयौ। सासतौ मौजां ऊपर मोजा दे। घणौ मन हाथ लीयौ। पछै विचार कीयौ—हिमें इणा नु मारीया चाहीजे[11]। तरै कह्यौ—राजधर नु लखा नु डेरा सु तेड आवौ। आथण रौ सो पौहर छै सु राजधर तौ तुरत आया नै लखो ना'यौ। तरै वळै तेडा ऊपर तेडा मेलीया। तरै लखै विचारीयौ—जे तेडा ऊपर तेडा आवण लागा, आ वात भली नही। सु लखो राहवेधी थौ सु राव रा आदमी रा हाथ ऊपर हाथ थौ सु राव रा आदमी रौ क्यु हाथ धूजियो। तरै लखै

---

[1]उपभोग करता है [2]नुकसान करता है [3]समझदार [4]कहलवाया
[5]माफ किया [6]स्वीकार करवाई [7]वचन लेकर [8]बुलाये [9]निरतर
[10]खातिर कर के वशीभूत किया [11]अब इनको मारना चाहिए।

जांणीयौ—आ वात भूंडी[1]। तरै राव रा आदमी सुं कह्यौ—हुं पेसाव कर आयौ। तरै पेसाव करण वैठो। उठा थी परौ ऊठीयो। कह्यौ—राव रा आदमी सु म्हारी संका अठै खुलै नही, आघेरो जाय[2] पेसाव कर आवुं। युं कर नै आघो ही जलखो कूदीयो। पाछो आयो नही। तरै राव रै आदमीयां खवर कीधी, सु गयौ। तरै राव नुं आय कह्यौ- लाखौ तौ गयौ नै हिमैं करणी हुवै सु करौ। तरै राव ढोलीयै वैठा छै। राजधर ढोलीया हेठै[3] वैठो छै। सु राव राजधर री विदा रौ मिस घात नै[4] तरवार १५ तथा २० आणी छै[5], सु काढै छै, परेवै चाढै छै। राजधर नुं पिण दिखावै छै। सु राव वुरी करै सु एक तरवार निपट अवल जाणी तिण री झटकारी दीधी, राजधर रै माथामे, सु राजधर रो माथौ अळगो[6] जाय पडीयो। राजधर मन मे वात राखी थी, सु माथै पड़ीयै, राव ढोलीयै वैठो थो तठी नुं कटारी काढ तूठो[7], सु राव ढोलीया थी कूद पड़ीयौ। कटारी रावजी वैठा था तिण ठोड़ नु वाही। राजधर तौ मार लीयौ नै माथ तुरत लखा वामै[8] चाढीयो। कह्यौ—लखा पहिलां जाय लोहीयाणो ल्यौ।

कितरी एक दूर तौ लखो पाळो[9] गयो, पछै आगै जातां एक वाभण कठैक मैंधौ[10] थो तिण कन्हा घोडी मगाय नै चढ नै खडीया। सु राव रो साथ लोहीयाणा कनै वाहळो[11] छै तठै गया। नै लखौ लोहीयाणै पोंहतौ[12]। जातै सवो[13] ढोली नु कह्यौ—ढोल दे[14]। तरै ढोल दीयौ सु राव रै ही साथ ढोल सुणीयौ। तरै कह्यौ—हिमैं जाण रौ रात रौ विचार राखौ। सवारै जास्यां। सु दिन ऊगो, साथ आयो। लखै मवळी वेढ कीध[15]। पछै नीठमै[16] मरतै-करतै गढ लीयौ।

पछै राव पिण वासा थी आयौ। राव उठै हीज राजधानी माडी। सु लखो मामता गतीवाहा दे[17], मामता अटक पैमारा करे। कुकवा पडावै[18]। सु राव नीठ रहै। लखो आगवरजाग होय लागो। एक दिन लखै जाणीयो—राव नुं मारू। तरै एक धास री वागर[19] राव रै डेरा कनै हुती तिण मे राव छोड-

---

[1] वुरी [2] दूर जाकर [3] नीचे [4] विदाई देने का मिस करके [5] लाया है [6] दूर [7] लपका [8] पीछे [9] पैदल [10] जानपहिचान का [11] नाला [12] पहुचा [13] जाते ही [14] ढोल बजा [15] जबरदस्त युद्ध किया [16] बड़ी मुश्किल मे [17] निरतर रात को हमला करे [18] त्राहि-त्राहि कराता है [19] घास के ढेर रखने का स्थान।

करण[1] सासतौ जावै । तठै लखो एकलो आय वागर में घास में छिपीयौ । सु राव छोड करण पधारण लागा । तरै कूतरै[2] कान फडफड़ाया । तरै राव हेठा वैठा । लिगारै..... वळे ऊठीया । तरै वळे कूतरै कांन फडफड़ाया । तरै वळे हेठा वैठा । यु वेळा दोय च्यार कूतरै कांन फड़फड़ाया । तरै पाखती रै कह्यौ—आज बीजी जायगा पधारौ । तरै रावजी बीजी जायगा छोड करण पधारीया । सवारे वळे वागर नै जाण लागा । तरै बीजै दिन पिण कूतरै कान फडफडाया । तरै वळे बीजै ही दिन बीजी जायगा गया । तर लखै दीठो—दोय दिन हुआ अठै आवै नही । तरै लखो उठा थी परो गयो । रातै वारै जाय नै, साद दे नै[3] कह्यौ—राव थारा दिन ऊभा, नहीतर[4] हु दोय दिन वागर रा घास मे रह्यौ, पिण तु आयो नही । पछै लखो सामता विगाड़ करै ।

राव नु घरे गया मास ६ हुआ था सु राव आदमी १५ तथा २० असवारा सु केसरीया कर नै[5] सीरोही नु लोहीयाणा सु चढीया । सु सीरोही था नजीक घाटी छै तठै आय देवल लखै घाटी विगाड रै वास्तै रोकी छै । सु रात अधारी छै । आदमी ५० तथा ६० लखा साथे छै । सु आधो-अध[6] वेऊं तरफां बैठा छै । सु राव घाटी था नजीक आया । तठै वयु आवता लखीया । तरै साथीयां नु कह्यौ—कोई मत बोलो, देखा कुण आवै छै ? तरै आघै-सै[7] लखै जाय नै अटकळीयौ[8] जे राव आवै छै । सु आवतौ राव वाता करतौ आवै छै—जे कदाच[9] घाटा माहे लखो देवळ उठै तौ हिमार कासु हुवै ? सु लखै वात सोह साभळी[10] । आय नै आपरा साथिया सु कह्यौ—लोह कोई मत करौ[11] । सु लखो, राव घाटी माहै आयो तरै बोल ऊठीयौ—रावजी ! लखै देवळ री रांम-राम छै । थे अपताई[12] कर नै म्हारौ बाप मारीयो नै म्हारो गढ खोस लीयौ[13], हिमे क्यू छै ? हु थानू मारू तो थाहरो क्यु जोर ? तरै राव कह्यौ—म्हारौ कोई जोर नही । म्हैं अपताई निपट कीधी । राजधर सुसरा नु मारीयो । तो नू साळा नु मारण री कीधी । म्हारी बुराई छै । तु जाणै ज्यु कर । तरै लखै कह्यौ—थारौ कीयौ तो नू हुवौ, हु न करू । परमेस्वर तो नू मारसी । तरै राव कह्यौ—म्हे था नू थारौ गढ दीनौ, नै बारह गाव सीरोही रा वैर

---

[1] पिशाब करने [2] कुत्ते ने [3] नाम कर [4] वरना [5] केसरिया वस्त्र धारण कर के [6] आधे-आधे [7] दूर [8] अन्दाज लगाया [9] कदाचित [10] सारी बात सुनी [11] कोई वार मत करना [12] मनचाही [13] छीन लिया ।

माहै दीया। नै तो नूं परणावस्या[1]। थांहरो बिगड़ीयो छै तिको सिलीस[2]।

तरै लखे कह्यो—राव मानू नहो—थांहरो कह्यो। तरै सारणेसर चावड रो कोस पीयो[3]। लखो छागला रो पांणी लायो। राव पीयो। राव नु लखै जाण दीयो। राव आघा खड़ीया[4]। तरै लखै दीठो—देखां इण रै मन कासु छै[5]? तरै आदमी दोय पाळा[6] ले नै आप ही पाळो थको अध कोस साथे गयो। सु राव साथियां नु कहै छै—म्हैं किसडो दाव कर नै लखा नु वहकायो छै? हुं कदे लीयो गढ हिमें दू? म्हैं इतरै दुख लीयो छै। म्हैं म्हारो दाव खेलीयो। तरै लखै माद कर नै कह्यो—म्हे थाहरो माजनो[7] जाणता हीज था। नै म्हे थाहरै बोले आवा[8], नै म्हैं थाहरो दीयो गढ़ त्या? म्हां नु परमेस्वर देसी। पिण तु जाणै, महादेव जाणै, चावंड जाणै। पछै राव सीरोही गयो। पछै पेट दूख, आतां पेट री तुट-तुट पडी। राव मुवो। पछै लखै याणो मार नै[9] गढ़ वळै उरो लीयो। आ वात मुं० सुंदरदास नीम्बाई—सवत् १७०३ सांवण वद ११, गाव पादरू।
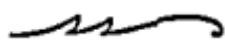
---

[1]तुम्हारी शादी करेंगे [2]क्षतिपूर्ति कर या [3]कोशपान—देवों की शपथ ग्रहण की [4]आगे को घोड़े चलाये [5]इसके मन में क्या है [6]पैदल [7]लक्षण [8]बातों में आऊं [9]चौकी लूट कर।

परिशिष्ट

१— विवेचनात्मक निबंध

२— ऐतिहासिक टिप्पणियाँ

राजस्थानी ऐतिहासिक बातों व ख्यातों की परम्परा

श्री अगरचंद नाहटा

प्रत्येक मानव के हृदय में अपने पूर्वजों के इतिवृत्त जानने की जिज्ञासा रहती है। इसलिये वह अपने कुटुम्ब के ही नही, वंश, जाति और देश के महान् एव विशिष्ट व्यक्तियो की जानकारी प्राप्त करने का भी प्रयत्न करता है और अपने पूर्वजो की गौरवगाथा सुन कर वह आनंद का अनुभव करता है। इस तरह इतिवृत्त-संचय का निर्माण प्रारम्भ होता है।

जिस व्यक्ति जाति और देश के संबंध मे हम जानकारी एकत्रित करते हैं। यदि वह उससे बहुत प्राचीन काल या बाद की घटना होती है तो उसमें बहुत सी दन्तकथायें भी मिल जाती हैं। इसलिए उसे विशुद्ध इतिहास तो नही कहा जा सकता, पर ऐतिहासिक तथ्यो को प्राप्त करने मे वह सहायक अवश्य हो सकता है। घटना जितनी निकटवर्ती होगी, उसका प्रामाणिक विवरण प्राप्त करना उतना ही सुगम होगा। पर हम प्राचीन परम्परा को भी जानना चाहते हैं और प्राचीन बातों या घटनाओ की स्मृति अधिक समय बीतने पर धुंधली हो जाती है, अतः मूल तथ्य विस्मृत हो कर अनुश्रुतियो द्वारा बहुत से अतिरंजित और चमत्कारी प्रसंग उनमें जुड जाते हैं। इसलिए वे बातें पौराणिक या लोक कथाओ का सा रूप धारण कर लेती हैं। मानव स्वभाव के अनुसार जन-साधारण उनसे ही अधिक प्रेरणा ग्रहण कर सकता है, विशुद्ध इतिहास उनके लिए उतना उपयोगी नही होता।

राजस्थान का इतिहास बड़ा गौरवशाली रहा है। यहाँ इतने अधिक वीर, योद्धा, दानी, संत, महात्मा एव सतो, विदुषी और वीरांगनाएँ हुई हैं जितनी अन्य प्रान्तो मे शायद ही हुई हों। इन विशिष्ट व्यक्तियो के जन-जीवन मे इतनी अधिक प्रतिष्ठा रही है कि सैंकडो व्यक्ति तो लोक-देवता के रूप में पूजे जाते हैं। गांव-गांव और घर-घर मे भोमियाजी, माता-सती आदि देवी-देवताओ की मान्यता है। बालक के जन्म और मांगलिक प्रसंगों मे उन्हें धोक देना अत्यावश्यक माना जाता है। धूप-दीप, नैवेद्य आदि से उनकी पूजा की जाती है और उनके मांगलिक गीत गाये जाते हैं। जो ऐतिहासिक व्यक्ति लोक-देवता[1] के रूप में

---

[1] पाबू, गोगाजी आदि लोक-देवताओं के सम्बन्ध में मरुभारती मे प्रकाशित लेख द्रष्टव्य हैं।

नही माने जाते, उनके संबंध में भी अनेकों लोक-कथायें और गीत काव्य प्रसिद्ध हैं। प्रान्त महापुरुष तो अपने उदात्त चरित्र के कारण जन-जन के श्रद्धाभाजन बन गये हैं।

विशिष्ट पुरुषों के स्मारकों की भी राजस्थान में प्रचुरता है। जुंझार एवं सतियों के देवल आदिकों गाव-गाव मे दिखाई देंगे, जिनमे से अनेकों पर शिलालेख खुदे रहते हैं, जो उनकी गौरव-गाथा की स्मृति दिला रहे हैं। कई स्थानों मे तो सती-स्मारकों आदि की इतनी प्रचुरता है कि एक ही कतार मे १०-२० सती देवली[1] स्मारक पाये जाते हैं। मंदिर, मूर्ति, कूआ, बावडी आदि धार्मिक और सार्वजनोपयोगी भवनों आदि के निर्माताओं के बड़े-बड़े शिलालेख उनकी कीर्ति को विस्तारित कर रहे हैं। इसी तरह अनेकों ऐतिहासिक काव्य और गीत उन विशिष्ठ व्यक्तियों के सम्बन्ध मे लिखे गये हैं। जैनाचार्यों, मुनियों एवं श्रावकों सम्बन्धी ऐतिहासिक काव्य[2] एवं गीत अधिकाश उनके शिष्यों या गुरुओं के द्वारा लिखे गये। इसी तरह राजाओं, ठाकुरों, मंत्रियों आदि के यहा चारण, ब्राह्मण आदि कवि रहते थे। उन्होने संस्कृत, हिन्दी व राजस्थानी मे अनेक काव्य बनायें हैं। चारण कवियों ने तो हजारों डिंगल गीत और दोहे, कवित्त आदि युद्ध-वीरो एवं दान-वीरो सम्बन्धी रचे हैं और उनमे अनेकों ऐतिहासिक घटनाओं का उल्लेख पाया जाता है। राजस्थान मे यह कहावत हो चल पड़ी है कि यश या कीर्ति दो ही बातो से चिरस्थायी रह सकती है "का भीतडे का गीतडे" अर्थात् या तो मंदिर, गढ, मकान, कूआ, बावडी, धर्मशाला आदि के निर्माण से या यश-वर्णनात्मक गीतों एवं काव्यो से। वास्तव मे ही यह सही बात है कि यदि बाल्मीकि एवं तुलसीदास रामचन्द्र सम्बन्धी काव्य आदि नही रचते तो उनकी पवित्र-स्मृति हजारों वर्षों तक और जन-जन में प्रचलित होना सम्भव नही होता। चारण कवियो के डिंगल गीतों मे सैकडो ऐसे व्यक्तियो के विशिष्ट कार्य कलापों का विवरण है जिनका प्रकाशित इतिहास-ग्रन्थो मे कही भी वर्णन नही मिलता। वास्तव मे उनके गीतो एवं उन व्यक्तियो के स्मारक-शिलालेखो का उपयोग, राजस्थान के इतिहास मे होना अत्यावश्यक है।

राजस्थान के लोगो मे मध्यकाल में अपनी वंशावली और पूर्वजो के इतिहास को सुरक्षित रखने के लिए बहुत अधिक जागरूकता दिखाई देती है। राजाओं, महाराजाओं, ठाकुरों एवं रानियों के यहाँ तो भाट, चारण, उनकी वंशावली और ख्यात लिखा करते थे ही, पर प्रत्येक जाति वालो के अपने-अपने भाट होते थे, जिनकी आजीविका इसी पर निर्भर थी। समय-समय पर वे अपने यजमानों के यहाँ पहुचते और उन्हें अपनी बहियों मे लिखी हुई वंशावली सुनाते, वे नये जन्मे हुए बच्चो के नाम और विवाह के अनन्तर बहुओं का विवरण अपनी बहियों मे लिख लेते। इसके उपलक्ष मे उनका इतना अधिक सम्मान, सत्कार किया जाता कि उन्हे 'भाट राजा' के नाम से सम्बोधित किया जाता था। अच्छे-अच्छे मिष्ठान्न आदि से भोजन करवा कर वस्त्र, कडा-कंठी आदि आभूषण व नगद रुपये भेंट किये जाते। इस तरह अपने

[1] सती-स्मारकों की कतार लेखक ने स्वयं देखी है [2] ऐसे-हमारे द्वारा सम्पादित जैन-काव्य-संग्रहादि ग्रन्थ।

वंश के इतिहास-संरक्षण के प्रति सभी लोगों का इतना अधिक आकर्षण रहा है कि हजारों लाखों रुपये उन वंशावली लेखक भाट, महात्मा, कुल-गुरु, आदि के लिए खर्च किये जाते रहे हैं। पाठकों को जान कर आश्चर्य होगा कि राजस्थान में सांपों के भी भाट होते हैं और वे लोग सांपों की बंबी के पास जाकर उनकी वंशावली सुनाया करते हैं और कहा जाता है कि इससे सांप प्रसन्न होकर अपने बिल में से यथेष्ट धन उन्हें लाकर देते हैं। इसी से उनकी आजीविका चलती है। अन्य किसी के पास में वे याचना नहीं करते।

खेद है! अपने इतिहास की सुरक्षा के लिए इतना अधिक खर्च करने पर भी हमारा प्राचीन इतिहास सुव्यवस्थित रूप में नहीं पाया जाता। एक तो भाट केवल वंश-परम्परा की नामावलि ही लिखा करते थे। जन्म या विवाह, संवत और नामावली के अतिरिक्त अन्य इतिवृत्त वे साथ नहीं लिखते और प्राचीन बहियां जीर्ण होती गईं तो उनकी नई नकलें होती गईं। उनमें वह वंशावली संक्षिप्त करदी जाती। बीच-बीच के नाम छोड़ दिये जाते, क्योंकि शताब्दियों की इतनी लम्बी नामावली कहां तक लिखी व सुनाई जाय। फिर उन लोगों के घरेलू बँटवारों में प्राचीन वही एक भाई के पास रह गई तो दूसरे भाई ने यथास्मरण कुछ नाम लिख के नई वहीं बना ली है। इस तरह वंशावली भी पूरी सुरक्षित नहीं रह पाई। स्मारकों के हजारों शिलालेख भी नष्ट हो गये हैं।

ख्यातों और वंशावलियों का लेखन तो उन वंशों तक ही सीमित रहा पर विशिष्ट व्यक्तियों की बातें लोग रस-पूर्वक कहते और सुनते। इससे केवल मनोरंजन ही नहीं होता पर जन-जीवन को बड़ी स्फूर्ति और प्रेरणा भी मिलती थी। राजाओं, ठाकुरों आदि के यहां लोक-कथाओं को कहने वाले व्यक्ति नियुक्त रहते थे और उनका काम ही यही था कि अपने आश्रयदाता और उनके परिवार के व्यक्तियों को बातें सुना कर उनका मनोरंजन करें। बात कहने की भी एक कला है और उसमें कई लोगों ने बहुत प्रगति की। प्रारम्भ और बीच-बीच में बड़ी आकर्षक शैली में दोहे, सोरठे और वर्णन जोड़ कर उन बातों को बड़ी ही रसीली बनाई जाती रही हैं। छोटी सी बात को बढ़ा-चढ़ा कर कई घंटे और दिनों तक ऐसी भाषा और शैली में कही जाती थी कि जिसमें श्रोता मुग्ध हो जाते। ये बातें विविध प्रकार की होती थीं और श्रोताओं की रुचि के अनुसार बनाई व कही जाती रही हैं। इनमें ऐतिहासिक बातें भी लोगों को बड़ी पसंद होती थीं और उनको कहने वाले व्यक्ति बहुत कुछ तोड़-जोड़ कर अधिक आकर्षक बनाने का प्रयत्न करते। इससे उनमें ऐतिहासिक तथ्य गौण होकर कहानी तत्व प्रधान हो जाता था।

कई ऐतिहासिक व्यक्तियों सम्बन्धी बातें जो श्रोताओं को सुनाने के लिए नहीं पर ख्यात में सम्मिलित करने के उद्देश्य से लिखी गईं, उनमें ऐतिहासिक तथ्य अधिक मिलते हैं। पर यदि उनका आधार सुनी-सुनाई अनुश्रुतियों एवं प्रवादों का होता है तो उनकी उतनी प्रामाणिकता नहीं रह जाती। ऐसी बातों का संग्रह ख्यातों में पाया जाता है। ख्यात की बातों और मनोरंजनार्थ बातों में जो अन्तर होता है उसके संबंध में श्री सूर्यकरणजी पारीक अपने सम्पादित 'राजस्थानी बातां' की भूमिका में लिखते हैं—

"जैसा कि ऊपर कह आये हैं, वातों के रूप में राजस्थान का प्राचीन इतिहास लिखा गया है, अतएव उन 'वातों' में ऐतिहासिक सामग्री बहुतायत से मिलती है। ख्यात की 'वातों' में और मनोरंजनार्थ रचित वातों में एक स्पष्ट अन्तर यह होता है कि इसमें कल्पना की मात्रा अधिक रहती है। ख्यात की वातों में जहां तक हो सका है ख्यात-लेखक ने वंशावलियों के क्रम में प्रत्येक व्यक्ति और वंश के जीवनकाल की मुख्य बातों का यथार्थ वर्णन किया है। कहानी की वातों में किसी एक ऐतिहासिक कार्य को लेकर और उसमें कल्पना की पुट देकर मनोरंजक सामग्री उपस्थित की गई है। अतएव यद्यपि इन कहानियों की आधारभूत बातें ऐतिहासिक हैं, परन्तु कहानी के समस्त रूप को ऐतिहासिक तथ्य मान लेना भारी भूल होगी। कहानी एक कला है और उसका प्रधान उद्देश्य है मनोरंजक रूप में किसी प्रमुख व्यक्ति अथवा घटना के संबंध में आख्यान लिख कर सहृदय जनता का हृदय आकर्षित करना। संसार के सभी साहित्यों में जहां भी देखा जाय, क्या कहानी, क्या उपन्यास, नाटक काव्य—सभी में कल्पनात्मक प्रसंगों द्वारा वास्तविक तथ्यों को एक नवीन रागात्मक रूप दे दिया जाता है।"

राजस्थानी भाषा में ऐतिहासिक वातों और ख्यातों की प्रचुरता है। ये विविध शैली की हैं और इनकी परम्परा भी काफी प्राचीन है[1] यद्यपि उनकी उतनी प्राचीन हस्तलिखित प्रतियां एवं प्राचीन रचनाएँ अब उपलब्ध नहीं हैं। पर उनके आधार से नई-नई रचनायें और प्रतियां लिखी जाती रही हैं। बहुत से ऐतिहासिक वृत्तांत दीर्घ काल तक मौखिक रूप में ही प्रचलित रहे और पीछे से लिखे जाने के कारण उनमें बहुत सी अनैतिहासिक बातें भी घुलमिल गईं, अतः इतिहास में उनका उपयोग विवेक एवं सावधानीपूर्वक ही किया जाना चाहिये।

---

[1] 'सुभाषितहारावलि' नामक एक सुभाषित श्लोकों का संग्रह हरि कवि का किया हुआ है, (पीटर्सन, दूसरी रिपोर्ट, पृष्ठ ५७-६४)। उसमें मुरारि कवि के नाम से यह श्लोक दिया हुआ है—

> कर्णाभिस्वारणानां शिशिरमय ! वरां प्राप्यमसीदसीनां,
> मा कीर्तेः तौविदस्त्वानवगणय कवि प्राम (?) वाणीविलासान् ।
> गीतं ख्यातं न नाम्ना किमपि रघुपतेरद्य यावत्प्रसादा-
> द्वाल्मीकेरेव धात्री धवलयति भुवो मुद्रयारामभर्तुः ।

मुरारि कवि प्रसिद्ध अनर्घराघव नाटक का कर्ता है। उसका पिता भट्ट श्री वर्धमान, माता तन्तुमती, गोत्र मौद्गल्य और उपनाम बाल वाल्मीकि था। उसका समय ईसा की नवीं शताब्दी है, है। यदि यह श्लोक मुरारि का ही है तो उस समय भी वातों के ढंग और रूप प्रचलित थे। और उनकी संस्कृत के कवियों में प्रसिद्धि हो चुकी थी।

भारत के प्राचीन ऐतिहासिक ग्रन्थों में महाभारत सब से अधिक उल्लेखनीय है। प्राचीन साहित्य में ४ वेदो के बाद उसका ५वा इतिहास के नाम में प्राप्त होता है। जैन आगमो में 'इतिहास पंचमाण' इस शब्द के द्वारा महाभारत को इतिहास की संज्ञा दी गई है। उसके बाद पुराण रचे गये और उनमें बहुत से राजाओ के वंश और उल्लेखनीय व्यक्तियो के वृत्तान्त सम्मिलित किये गये। पुराणो मे प्राप्त हुई वंशावलिया बड़े महत्व की हैं, यद्यपि अनुश्रुतियो पर आधारित होने से कही अशुद्ध हैं।

मध्यकालीन बहुत से राजाओ के यहा राजवंश का इतिहास लिखने के लिये कई विद्वान नियुक्त होते थे। उनमें से कुछ लेखको ने किसी राजा के सम्बन्ध मे 'काव्य' बनाया तो कइयो ने 'राजवंश' का इतिहास लिखा। 'राजतरंगिणी' आदि संस्कृत के कई ऐतिहासिक ग्रन्थ और विक्रमांक चरित आदि महाकाव्य इसी परम्परा को सूचित करते हैं। १३वी सदी से ऐतिहासिक ग्रन्थो का निर्माण अधिक रूप से होने लगता है। १३वीं शताब्दि खरतरगच्छ युगप्रधानाचार्य गुर्वावली[1] भारतीय ऐतिहासिक ग्रन्थो मे बहुत उल्लेखनीय ग्रन्थ है, जिसमे प्रत्येक घटना के संवत् और तिथि का प्रामाणिक उल्लेख है। संवतानुक्रम से इतिहास लिखने का भारतीय परम्परा मे यह एक उज्ज्वल निदर्शन है। इसमे श्वेता सम्प्रदाय के खरतरगच्छ की आचार्य परम्परा का इतिवृत्त संकलित किया गया है। इसमें स. १२१४ से १३६३ तक की घटनाओं का उल्लेख संवतानुक्रम से तिथि के उल्लेख के साथ किया गया है। इससे पूर्व का वृत्तान्त, जो करीब १५०-२०० वर्षों का है श्रुति परम्परा के आधार पर संगृहीत किया गया है इसलिये स. ११६७ से पूर्व की किसी घटना का संवत् नही दिया गया है। इस गुर्वावली के मूल लेखक जिनपालोपाध्याय ने स. १३०५ तक का वृत्तान्त लिखा है, पर इसके बाद भी उनकी प्रारम्भ की हुई परिपाटी चालू रही। यद्यपि प्राप्त प्रति मे संवत् १३६३ तक का वृत्तान्त है, पर उसके बाद भी इसी तरह से संवतानुक्रम से इतिहास अवश्य लिखा गया होगा। यह परवर्ती श्री पूज्यो की दफ्तर वहियों की परम्परा से सिद्ध होता है। जैन मुनियों ने ऐतिहासिक साधनों के निर्माण एवं संरक्षण मे बड़ी ही जागरूकता रखी है। पर उपरोक्त गुर्वावली की तरह संवतानुक्रम से लिखा गया उनका ग्रन्थ है। प्रत्येक[2] गच्छ ने अपनी-अपनी आचार्य परम्परा की गुर्वावली, पट्टावली लिखी है।

जैन-जातियों की वंशावली भी ४००-५०० वर्ष पुरानी आज प्राप्त है। इसी तरह राजाओ के आश्रित विद्वानो ने भी समय-समय पर ऐतिहासिक काव्यो के अतिरिक्त ख्यातें भी लिखी होंगी। पर १७वीं सदी से पूर्व की कोई ख्यात (संस्कृत ख्याति रूप से निरूपम) हमारी

---

[1]इसकी एक मात्र प्रति मुझे बीकानेर के क्षमाकल्याणजी ज्ञान-भण्डार मे प्राप्त हुई थी जिसे मुनि जिनविजयजी से सम्पादित करवा कर हिन्दी ग्रन्थ माला से प्रकाशित की जा चुकी है।

[2]देखो-पट्टावली-समुच्चय, भाग १, २; विविध गच्छीय पट्टावली-संग्रह एव खरतरगच्छ, तपागच्छ आदि की पट्टावली, गुणरत्नी नामक ग्रंथ।

जानकारी मे प्राप्त नही है। मालूम होता है, मुसलमानी साम्राज्य के समय बहुत सी प्राचीन सामग्री नष्ट हो गई और युद्धादि के कारण तथा अन्य अशात वातावरण के कारण मध्य-कालीन इतिहास का लेखन सुव्यवस्थित रूप से नही चल सका। सम्राट अकबर के समय मे कुछ शाति का अनुभव हुआ और तभी से अपने-अपने राज्यो और वशो की ख्यात लिखने की परम्परा पुनः चालू हो गई। 'मुंहणोत नैणसी' त्रिलोक्सी, दयाळदास, बाकीदास आदि की ख्यातें उसी परम्परा की द्योतक हैं। आज यद्यपि अकबर से पूर्व की कोई ख्यात प्राप्त नहीं है फिर भी 'युगप्रधानाचार्य गुर्वावली' और 'श्री माल जाति वशावली'[१] को देखते हुए ख्यात की प्राचीन परम्परा यत्किञ्चित् रूप मे भी रही अवश्य होगी—यह संभव है। प्राचीन किसी ग्रन्थ मे उल्लेख भी देखने मे आया था।

संस्कृत मे ऐतिहासिक प्रबन्ध रूप बातों का लेखन १३ वी सदी से जैन विद्वानो ने काफी अच्छे रूप मे किया है। प्राप्त सस्कृत प्रबन्ध ग्रन्थो से यह भली भाति सिद्ध है। १३वी सदी से १६वी सदी तक कई प्रबन्ध-सग्रह लिखे गये, जिनमे से पुरातन प्रबन्ध सग्रह प्रबन्ध चिन्तामणि, प्रबन्ध कोश, कुमारपाल प्रबन्ध सग्रह, उपदेश तरगिणी आदि प्रकाशित हो चुके हैं। स. १५२१ मे रचित शुभशीलगणि का पञ्चशती प्रबन्ध संग्रह भी काफी महत्वपूर्ण है, पर अभी तक यह अप्रकाशित है।

सस्कृत मे जैसे एक-एक व्यक्ति के लिय छोटे बडे प्रबन्ध लिखे गये हैं, उस तरह के राजस्थानी ऐतिहासिक बातो की १८वी शताब्दि मे पहले लिखे हुये प्राचीन सग्रह ग्रन्थ तो नही मिलते, पर १५वी सदी से राजस्थानी गद्य मे ऐतिहासिक बातें फुटकर रूप मे लिखी हुई मिलने लगती हैं, जिनमे से एक छोटी सी धनपाल कथा 'राजस्थान भारती' भाग ३, अक २ मे मैंने प्रकाशित की थी। वह एक जैन महाकवि धनपाल के जीवन से सम्बन्धित है। ऐसी छोटी २ ऐतिहासिक कथायें प्रसगवश कई प्रकरण ग्रन्थों के बालावबोध आदि के भाषा टीकाओ मे भी प्राप्त होगी। १५वी सदी मे कल्पसूत्र बालावबोध और कालकाचार्य कथा राजस्थानी गद्य मे लिखी गई हैं, जिनमे से कल्पसूत्र बालावबोध मे स्थविरावली मे अनेक जैनाचार्यो का सक्षिप्त जीवन वृत्तान्त मिलता है। कालक कथा मे उज्जैन के गर्दभिल्ल राजा को जैनाचार्य कालक ने किस प्रकार अपनी भगिनी के हरण का दण्ड दिया और उसके राज्य का उच्छेद किया, इस ऐतिहासिक घटना का वृत्तान्त है। सं० १४८५ की लिखी हुई कालकाचार्य कथा की एक प्रति हमारे सग्रह मे है। १६वी सदी मे लिखित एक कालक कथा को डा० भोगीलाल साण्डेसरा ने किसी गुजराती पत्र में प्रकाशित किया था।

बात (सस्कृत-वार्ता) और ख्यात मे से बात तो किसी व्यक्ति-विशेष संबधित होती है और ख्यात मे किसी एक वश या अनेक वशो से संबधित वृत्तांत सग्रहीत होता है। जैसे पमसिंह की बात, वीरमदे सोनीगरा की बात, बीकाजी की बात आदि मे उस नाम वाले

[१] जैनाचार्य श्री आत्मानन्द शताब्दि-स्मारक-ग्रंथ, गुजराती लेख-विभाग, पृ. २-१, सं. २१७।

व्यक्ति की कथा पाई जाती है। ख्यातों में नैणसी की ख्यात सबसे अधिक महत्वपूर्ण इसलिए है कि उसमे राठौड, सीसोदिया, चौहान आदि अनेक राजवशो का इतिहास संग्रहीत किया गया है जबकि दयाळदास की राठौडों की ख्यात में राठौड वंश और विशेषत: बीकानेर के राठौड वंश का इतिहास लिखा गया है। मुहणोत नैणसी की ख्यात में शताधिक ऐतिहासिक व्यक्तियो की बातें भी संकलित की गई हैं। नैणसी ने एक और भी ऐतिहासिक ग्रन्थ लिखा था जिसमे मारवाड की मर्दुमशुमारी, वहा के जागीरदारो, ठाकुरो के पट्टो, गावो की आमदनी की विगत थी। ओसवाल जाति के इतिहास मे इस ग्रन्थ का कुछ उद्धरण देते हुए लिखा गया है कि "नैणसी ने एक पचवर्षीय रिपोर्ट लिखी थी। हमने इसकी हस्तलिपि आपके वशज जोधपुर के निवासी श्री वृद्धराजजी मुहणोत के पास देखी थी। उसमें उन्होने मारवाड के परगने, ग्राम, गावो की आमदनी, भूमि की किस्म, शाखो का हाल, तालाब, कुए, विभिन्न जातियो के इतिहास आदि अनेक विषयों का बडा ही सुन्दर विवेचन किया है। सवत् १७१६ से १७२१ की मर्दुमशुमारी के कुछ उद्धरण देने के बाद ओसवाल जाति के इतिहास मे इसका महत्व बतलाते हुए लिखा है कि "उपरोक्त मर्दुमशुमारी के अको से पाठको को यह ज्ञात हुआ होगा कि मध्य युग के अशान्तिमय जमाने मे भी मुहणोत नैणसी ने मर्दुमशुमारी करने की आवश्यकता को महसूस किया था। आपकी हस्तलिखित पचवर्षीय रिपोर्ट से यह भी प्रतीत होता है कि उन्होने मारवाड मे संबध रखने वाली सूक्ष्म से सूक्ष्म बातो का विवेचन किया है। वह रिपोर्ट क्या है, तत्कालीन मारवाड का जीता-जागता चित्र है।"

नैणसी के उक्त ऐतिहासिक ग्रन्थ की प्रति जिसके भी पास हो, खोज कर के प्रकाश मे लाना आवश्यक है।

नैणसी की ख्यात को मूल रूप मे प्रकाशित करने का प्रयत्न स्वर्गीय रामकरणजी आसोपा ने किया था पर उसका मुद्रण पूरा नही हो सका। इसके करीब ४०० पृष्ठ जो छपे थे वे भी प्रकाश मे नहीं आ सके। अभी उसका सुसम्पादित संस्करण राजस्थान प्राच्य-विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर से प्रकाशित हो रहा है। श्री बद्रीप्रसाद साकरिया द्वारा सम्पादित उक्त सस्करण का प्रथम भाग निकल चुका है और दूसरा भाग भी प्रकाशित होने जा रहा है। इस ख्यात का एक महत्वपूर्ण वर्गीकृत हिन्दी अनुवाद नागरी प्रचारिणी सभा से २ भागो मे प्रकाशित हुआ था। मुंशी देवीप्रसादजी ने नैणसी को राजपूताने का अब्दुल फज्जल' बतलाया है और स्वर्गीय ओझाजी ने इनकी ख्यात को 'इतिहास का एक अपूर्व संग्रह' लिखा है। नैणसी के पहले की १-२ सक्षिप्त राठौडो की ख्यात मिलती हैं और नैणसी के बाद तो अनेक ख्यातें लिखी गई पर उन ख्यातों मे लेखको का नाम-निर्देश बहुत ही कम मिलता है। तिलोकसी की ख्यात को अभी मैने देखा नही है पर वह मारवाड के राठौड वश से सबधित है और उसकी प्रति श्री रामकरणजी आसोपा के यहां थी, ऐसा ज्ञात हुआ है।

अनेक राजवशों से सबधित सक्षिप्त टिप्पण (नोटस्) तो कविवर बांकीदासजी ने सर्वाधिक लिखे थे। उनका वर्गीकृत सुसम्पादन श्री नरोत्तमदासजी स्वामी ने किया और राजस्थान पुरातत्वान्वेषण मदिर, जयपुर से 'बांकीदास री ख्यात' के नाम से वे २७७६ नोटस् प्रकाशित हो चुके हैं। स्व० ओझाजी ने इस ग्रन्थ के महत्व के सबध में लिखा था कि

"पुस्तक बड़े महत्व की है।......ग्रन्थ क्या है, इतिहास का खजाना है। राजपूताना के तमाम राज्यों के इतिहास संबंधी अनेक रत्न उसमें भरे पड़े हैं।......उसमें राजपूताना के बहुधा प्रत्येक राज्य के राजाओं, सरदारों, मुत्सद्दियों आदि के संबंध की अनेक ऐसी बातें लिखी हैं जिनका अन्यत्र मिलना कठिन है। उसमें मुसलमानों, जैनों आदि के संबंध की भी बहुत सी बातें हैं। अनेक राजाओं और सरदारों के ठिकानों की वंशावलियाँ, सरदारों के वीरता के काम, राजाओं के ननिहाल, कुंवरों के ननिहाल आदि का बहुत कुछ परिचय है। कौन-कौन से राजा कहाँ-कहाँ काम आये, यह भी विस्तार से लिखा है।" बांकीदास ने वास्तव में 'ख्यात' के रूप में यह ग्रन्थ नहीं लिखा था, याददाश्त या नोटस् के रूप में ही यह लिखा गया था।

ख्यातकार के रूप में दयाळदास सिंढायच विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। उन्होंने राठौड़ों की ख्यात के अतिरिक्त 'देश दर्पण' और 'आर्याख्यान-कल्पद्रुम' नामक दो और महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रन्थ लिखे हैं जिनकी हस्तलिखित प्रतियां श्री अनूप संस्कृत लायब्रेरी, बीकानेर में हैं। ख्यात का मध्यम भाग, जिसमें राव बीकाजी से महाराजा अनूपसिंहजी तक का वृत्तान्त है, दयाळदास की ख्यात, भाग २ के नाम से डा० दशरथ शर्मा द्वारा सम्पादित अनूप संस्कृत लायब्रेरी से संवत् २००५ में प्रकाशित हो चुका है। इसका प्रथम और तृतीय भाग अभी अप्रकाशित है।

'देश-दर्पण' नामक ख्यात ग्रन्थ संवत् १९२७ में तैयार हुआ। उसके संबंध में प्रारम्भ में ही लिखा है कि महाराजा सिरदारसिंह के समय जसवंतसिंह की आज्ञा से इसकी रचना हुई। यथा—

हुत यस कुळ रट्ठवर, समवड़ विभव सुरेस।
राज करह मरुधर रुचिर, श्री सिरदार नरेस॥ ५
प्रबळ उदयगिर बीकपुर, रवि महिपत्त सिरदार।
कवि पंकज प्रफुलित करण, अघ तम हरण उदार॥ ६
जेण वस जैचंद रै, जनमे पत जोधार।
तिण आर्य हिन्दू तुरक, समरज लीन्हैं सार॥ ७
मातुळ नृप कै प्राण सम, सब मित्रन सिरताज।
मांनद चित हौ दान गुन, जस साहिब जसराज॥ ८
निगमागम आगुन सकळ, सब विद्या परवीण।
धर्गी जगवत चतुर धन, कच प्रत आज्ञा कीन॥ ९
धरार्धीन तहां ख्यात सब, मानुवस के भेद।
जसवत आज्ञा रै जरै, पत लिख सुगम अभेद॥ १०
करी ख्यात नृप तेस कुळ, दिय आयस जिहि वार।
कव दयाळ करणार करी, धरणी मन अनुसार॥ ११
सुर्भाचतर लिख करण कुं, लिखनि बनाई ख्यात।
बहु सुग स परताप कर, सपु दीरघ सुख मात्र॥ १२

ग्रथ ख्यात जन्म यथा—
कहे संवत् उगणीस के, सात बीस के साल।
वरणी ख्यात विमेमवर, दरपण देस दयाळ ॥

इसमे बीकानेर के प्राथमिक राजाओ का संक्षिप्त वृत्तांत है। परवर्त्ती के संवतानुक्रम से दिया है और महाराजा रतनसिंहजी आदि का तो बहुत विस्तार से दिया है। बादशाही फर्मान अग्रेजो के सन्धि (सुलह) नामे आदि की नकलें और अनुवाद भी दिये हैं। अंग्रेजो से सन्धिनामे केवल बीकानेर के ही नही पर उदयपुर, जयपुर, जोधपुर, बूंदी, झालावाड, कोटा, जैसलमेर, टौंक, भरतपुर, डूंगरपुर आदि राज्यो के भी दिये हैं। तदनतर बीकानेर के राजवश से सम्बन्धित खापो का संक्षिप्त वृत्तात देकर गावो की रेख और जमीन की विस्तृत सूची दी है। सवत १९२७ फौजबन्दी की याददाश्त के बाद खर्च, खजाना, महसूल की भी जानकारी दी है।

दयाळदास का तीसरा ख्यात ग्रन्थ आर्याख्यान कल्पद्रुम का तो और भी अधिक महत्व है। इसकी रचना सवत् १९३४ के भादवा सुदि १२ बुधवार को महाराजा डूंगरसिंह के समय मे हुई। तीन भागो मे इस ग्रन्थ के रचे जाने की योजना थी, जिसका उल्लेख करते हुए प्रारम्भ मे लिखा गया है कि—"सो मे ग्रन्थ का पूर्वार्द्ध मे तो केवल हिन्द का वर्णन हुवेगा ग्रर इस ग्रन्थ का उत्तरार्द्ध 'यवन आख्यान कल्पलता' मे कया जावेगा। तथा आरिय भाषा के मत मे तो म्लेच्छ कहे जाते हैं। हिन्दू-भाषा से जिनकी भाषा नहीं मिलती है तथा हिन्दूवा के धर्म से इनका धर्म-व्यवहार भी अलग है। पश्चिम देश निवासी है सो म्लेच्छ कहे जाते हैं जिसमे प्रथम हिन्दुस्तान के हिन्दु राजाओ का वर्णन करते हैं ॥१॥ दूसरे भाग मे मुसलमानो का वर्णन लिखा जावेगा और तीसरे भाग मे अग्रेजों की उत्पत्ति आगम लिखे जावेगे।

हिन्दू शब्द की व्युत्पत्ति व्याकरण के मत से बतलाते हुए लिखा है—हिन् धातु हिंस्यार्थ मे है। दू है सो 'दू' धातु उपताप अर्थात दुख मे है। 'हिंसया दूयते ति हिन्दू' अर्थात हिंसा से दुःख पावें। इसी कारण 'म हिंस्यात सर्व भूतानि' ऐसा वेद मे वचन कह्या है। 'अहिंसा परमोधर्म धर्म' शास्त्र मे ऐसे हिन्दू शब्द का अर्थ कह्या है। अथ मुसलमान शब्द का अर्थ लिखते हैं—अरबी भाषा मे मूसल शब्द दृढ-वाची है। दृढ कु कहते हैं। ईमान नाम धर्म, मजब का विश्वास को कहते हैं। मजब मे श्रद्धा जिसकी दृढ है, वह मुसलमान है।"

ग्रन्थ के प्रारम्भ मे राठौडों की वंशावलिया, फिर जैचन्द से प्रारम्भ कर के जोधपुर के महाराजा विजयसिंहजी तक का वृत्तात और मारवाड राज्य के २२ परगने और उनके गावो की रेख आदि का विस्तृत विवरण दिया है। तदनन्तर बीकाजी से सिरदारसिंहजी तक के बीकानेर के राजाओ का इतिहास है। अंत मे बीकानेर राज्य के खापो एव ठिकाणो का हाल दिया है। मालूम होता है कि दयाळदास इस महान ग्रन्थ को अपनी योजना के अनुसार पूर्ण नही कर पाये।

ख्यातों की तरह और भी अनेक तरह के ऐतिहासिक साधन राजस्थानी गद्य मे लिखे मिलते हैं, जिनमे वशावली, पीढ़ियावली, याददाश्त, हकीकत, विगत, हाल, अहवाल,

पट्टा-परवाना, तहकीकात, आदि उल्लेखनीय हैं। जैन गच्छों की पट्टावलियें, गुर्वावलियें राजस्थानी गद्य मे लिखी हुई अनेकों मिलती हैं। वे भी एक तरह से ख्यात के ही लघु रूप हैं। ख्यातो मे राजवश का वृत्तात रहता है और पट्टावलियो मे गच्छो का। ओसवाल आदि जैन जाति एवं गोत्रो की वशावलिया बहुत मिलती हैं पर उनमे ऐसे वृत्तात की प्रधानता नहीं रहती, वश परम्परा और उस वश के लोग कहा कहां जाकर बसे, उनका विवरण आदि रहता है। ऐसी पच्चीसो वशावलिया और पट्टावलिया हमारे सग्रह मे हैं। जैनेतर वंशावलिया भी अनेकों लिखी गई हैं। प्रत्येक जाति के भाट उन जातियो की वंशावलिया लिखते रहे हैं अतः उनके यहा बहुत सी महत्वपूर्ण सामग्री मिलेगी।

ऐतिहासिक बातें भी कई प्रकार की मिलती हैं। इनमे से कुछ बातें तो विशुद्ध इतिहास के रूप मे लिखी गई हैं। इसके उदाहरण के रूप मे हमारे सग्रह की 'राठौड राव अमरसिंघ की बात' उपस्थित की जा सकती है, जिसे सवत् १९९७ मे भारतीय विद्या नामक पत्रिका मे मैंने प्रकाशित की थी। इस बात मे सवत् १७०१ का वृत्तांत बहुत ही विस्तार से दिया है। संवत १७०६ मे जोधपुर मे ही इस बात की लिखी हुई प्रति हमारे सग्रह मे है। वैसे अमरसिंघ की अन्य एक बात 'परम्परा' के राजस्थानी बात-सग्रह अक मे प्रकाशित हुई है। जो बातें घटना के सम-सामयिक या कुछ समय बाद ही लिखी गई हैं उनकी ऐतिहासिकता स्वत:सिद्ध है। कई बातों मे लिखा हुआ वृत्तात तो लेखक के स्वयं का देखा हुआ होता है और कई बातें देखने वालों से सुनी हुई होती हैं। उनमे थोडा बहुत हेर-फेर हो सकता है, पर अधिक पुराने समय के व्यक्तियो की जो बातें मिलती हैं उनमें ऐतिहासिक तथ्य कम हैं। उनमें लोक-प्रवादो का सम्मिश्रण अधिक होने से वे एक तरह से लोक कथाएँ ही बन जाती हैं। केवल ऐतिहासिक व्यक्ति से सबधित होने के कारण ही उन्हें ऐतिहासिक बात भले ही कह दिया जाय।

कई बातें गद्य और पद्य-मिश्रित वचनिका और तुकान्त गद्य शैली की पाई जाती हैं। १५वी शताब्दी की ऐसी दो रचनाओ का उल्लेख करना भी यहां बहुत आवश्यक है। वचनिकासज्ञक अभी तक राजस्थानी रचनाएँ ही विशेष प्रचलित हैं जिनमें गाडण सिवदास रचित 'अचळदास खीची री वचनिका' १५वी शताब्दी की ऐतिहासिक रचना है। इसकी सब से प्राचीन सवत १६३१ की लिखी हुई प्रति अनूप संस्कृत लायब्रेरी मे है। अभी तक यह महत्वपूर्ण रचना अप्रकाशित थी अतः श्री नरोत्तमदासजी स्वामी से सम्पादित करवा कर शार्दूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट से प्रकाशित करवाई जा रही है। पद्यो के साथ साहित्यिक शैली का गद्य भी इसमे प्रयोग हुआ है। यहा उस गद्य का थोडा-सा नमूना दिया जा रहा है जिसका नाम 'वात' लिखा गया है—

वात– एक सीह नइ पाखरयउ, सूर मिहाइति आवरयउ।

पचाग्रत अमी परगर आयउ।
महादान आछइ घडइ,
दूध माहि साकर पडइ।
सोनउ नइ सु-वास,

ग्रेक ग्रचल कथइ सिवदास ॥ १
ग्रब चारण कहइ—
ग्रे वडो वडाई, तउ ग्रापणपाहइ पूछई न हुइ ।
सु ग्रेतरइ हिजु कारणइ, ग्रागिलउ राजा सभा
सहित सु-चित हुई सुणइ,
तउ सु-कवि कु-कवि की पारीखा जणइ ॥ २

दूसरी वचनिका रतन महेसदासोत री खिडिया जगा री वही सर्व प्रथम डॉ. टैसीटरी ने सम्पादित की। ग्रभी डॉ. रघुवीरसिंह ने संपादन कर के उसे प्रकाशित करवाया है। इसी तरह सवत् १४८२ की लिखी हुई तपागच्छ गुर्वावली की प्रति हमारे सग्रह मे है। इसमे पद्य ता थोडे मे हैं, ग्रौर गद्य है वह भी पद्यानुकारी ग्रर्थात तुकान्त है। इसका थोड़ा-सा नमूना दिया जा रहा है—

श्री धर्मघोष सूरि सुविचार, जेरहि (ह) उ १३२७ पदठवण ग्राचार।
जेहे गुरे ग्रतिशय लगइ योग्य ग्रवधारिउ, सा० पेथड परिग्रह परिमाण ॥
मधेरतउ निवारिउ जेणंइ पेथड़ साहि ८४ उनु त तोरण प्रासाद कराव्या।
७ ज्ञान भडार भराव्या, ग्रनइ २१ घड़ी सुवर्ण, श्री शत्रुंजय मूलप्रसाद
वीधउ वर्णि सुवर्णि।

जेह तणउ पुत्र, सा० भाभणदे पवित्र, जीणइ विह तीथि एकुत्र ध्वज, देईग्रनइ ग्रात्मा वीधउ ग्ररज, ग्रनइजे गुरुरहइ देवकइ पाटलि, सुमुद्रि दिखाडिउ चिंतामणि; ग्रनइ तिहां गोमुख यक्ष का (उ) सग प्रयावि हऊउप्रत्यक्ष, उपदेश देई वूभविउ, मिथ्यात्व करतउ ते पाप सूभविउ।

ख्यात ग्रौर वात के ग्रतिरिक्त राजस्थानी गद्य में लिखा हुग्रा एक ऐतिहासिक जीवन-चरित्र 'दलपत विलास' नामक मिलता है जिसकी एक मात्र ग्रपूर्ण प्रति ग्रनूप सस्कृत लायब्रेरी मे प्राप्त है। 'मरुवाणी' मे इसका काफी भाग प्रकाशित हो चुका है। ग्रास्तान को स्वतन्त्र ग्रन्थ रूप मे हमारे शार्दूल राजस्थानी इन्स्टीट्यूट से प्रकाशित किया जा रहा है। इस तरह राजस्थानी गद्य मे ऐतिहासिक सामग्री बहुत ग्रधिक प्राप्त है।

हस्तलिखित प्रतियो मे ऐतिहासिक बातें, सैकडों की सख्या मे लिखी मिलती हैं। १८वीं ग्रौर १९वी शताब्दि की कई सग्रहीत प्रतियाँ बीकानेर, उदयपुर, जोधपुर मे प्राप्त हैं। इन बातों के प्रकाशन का सर्व प्रथम प्रयत्न स्वर्गीय श्री सूर्यकरणजी पारीक ने किया है। उन्होंने सन् १९३४ मे 'राजस्थानी बाता' नामक ग्रन्थ, पिलानी में रहते प्रकाशित किया, जिसमें १. बगडेव पवार, २. जगमाल मालावत, ३ वीरमदे सोनगरा, ४ कहराट सरवहियो, ५ जसहा मुसहा भाटी, ६. जैतसी उदावत ग्रौर ७. पाबूजी री बात छपी हुई हैं। मुहणोत नैणसी की ख्यात के राजस्थानी ग्रौर हिन्दी सस्करण मे बहुत-सी ऐतिहासिक बातें प्रकाशित हुई हो हैं, पर फुटकर रूप में राजस्थानी, राजस्थान भारती, ग्रादि पत्रिकाग्रों मे दूदे जोधावत, सातलसोम, राव रिणमल, ग्रादि की ऐतिहासिक बातें छपती रही हैं। परम्परा

मे प्रकाशित अमरसिंघ, पदमसिंघ की बात भी उल्लेखनीय है। साहित्य संस्थान, उदयपुर से राजस्थानी बातों के ५ भाग प्रकाशित हुए हैं। उनमें भी कई ऐतिहासिक बातें छपी हैं। राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर से—राजस्थानी साहित्य संग्रह, भाग २, नामक ग्रन्थ हाल ही में श्री पुरुषोत्तम मेनारिया-सम्पादित प्रकाशित हुआ है। उसमे देवजी बगडावत, प्रतापसिंघ मोहकमसिंघ और वीरमदे सोनगरे की बात छपी है। उनमें से प्रतापसिंघ मोहकमसिंघ की बात किशनगढ के महाराजा बहादुरसिंह ने बनाई है और उसका साहित्यिक महत्व भी कम नही है। अब परम्परा के प्रस्तुत अंक मे राव रिणमल, राव जोधा, मालदेव, चन्द्रसेन, सूरजसिंघ, आदि की ऐतिहासिक बातें प्रकाशित की जा रही हैं। इस तरह राजस्थानी वातो का बढता हुआ प्रकाशन अवश्य ही उज्ज्वल भविष्य का सूचक है। और ऐसे प्रयत्न निरन्तर होते रहने की आवश्यकता भी है। पर इससे भी अधिक आवश्यक है इन बातो का आधुनिक शैली मे लिखा जाना जिससे वे केवल विद्वानो के उपयोग की ही चीज न रहे। जन-साधारण भी उनका रसास्वादन कर सके। श्री चतुरसेन शास्त्री ने सुप्रसिद्ध नव रसो के अतिरिक्त एक नये इतिहास रस का भी उल्लेख अपने प्रकाशन मे किया है। वास्तव मे राजस्थानी बातो पर आधारित उपन्यास, कहानी, नाटक आदि अधिकाधिक लिखे जाने चाहिये और फिल्म-जगत मे भी उनका समावेश होना चाहिये जिससे जनसाधारण को अपने पूर्वजो का गौरव विदित हो और उनके उज्ज्वल चरित्र की अमिट छाप उन पर पडे। रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत ने पुरानी बातो को नये साचे मे ढालने का सुन्दर प्रयत्न किया है, यद्यपि उनकी भाषा मेवाडी-प्रभावित होने से जन-साधारण के लिए उतनी सुबोध नही। हिन्दी मे भी राजस्थानी बातो पर आधारित नये साहित्य का सर्जन अधिकाधिक किया जाना वाछनीय है। पाश्चात्य जगत को राजस्थान के इतिहास का कुछ परिचय टॉड ने दिया था। उससे अनेक लोग आकर्षित हुए। अतएव अग्रेजी में राजस्थानी साहित्य प्रकाशित किया जाना चाहिये।

राजस्थानी ऐतिहासिक बातें

श्री मनोहर शर्मा

भारतीय प्रजा का इतिहास-बोध सदा से बढ़ा-चढ़ा रहा है। हमारे पुराण ग्रन्थों में इस विषय में अत्यन्त महत्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध है और विदेशी विद्वानों तक ने इस तथ्य को स्वीकार किया है। अति प्राचीन काल में वेद-मंत्रों के विशिष्ट प्रसंगों का स्पष्टीकरण भी आदि महापुराण के उपाख्यानों द्वारा किया जाता था। भारत में जो बहुसंख्यक महामहिमशाली ब्रह्मर्षि एवं राजर्षि हुए हैं, उनकी चरित्र-कथाओं से पुराण ग्रंथ गौरवमय हैं। समय पाकर अति प्राचीन महापुराण का विभाजन हुआ और महामुनि वेदव्यास ने अठारह पुराण प्रस्तुत किये। कालान्तर में इन पुराणों में भी परिवर्तन एवं परिवर्द्धन होता रहा। फलस्वरूप आजकल जो पुराण ग्रंथ प्राप्त हैं, उनका कलेवर काफी बड़ा हुआ है।

पुराणों के साथ ही भाट लोगों की प्रथा भी अति प्राचीन है। समय पाकर इन लोगों में भी वर्ग-भेद हुआ जो अपने-अपने काम के अनुसार सूत, मागध एवं बंदी कहलाने लगे। इन सब का काम प्राचीन अथवा वर्तमान शूरवीर राजाओं का कीर्तिगान करना था। राजस्थान के चारण, भाट एवं ढाढी लोग इसी परम्परा का स्मरण करवाते हैं। ये लोग भी समाज के विशिष्ट गुण-सम्पन्न व्यक्तियों की कीर्ति-कथा सुना कर जनता को प्रेरणा देते रहे हैं और यह प्रथा राजस्थान में किसी अंश में अब भी चालू है। इसी प्रकार जनसाधारण में भी विशिष्ट व्यक्तियों के गुण-कर्मों की कथा कहने का रिवाज काफी पुराना है। लोग अपने अवकाश के क्षणों को ऐसी कहानियों द्वारा सरस कर के धन्य होते रहे हैं। महाकवि कालिदास ने अपने मेघदूत काव्य में इस प्रथा की ओर संकेत किया है—

> प्राप्यावन्तीनुदयनकथाकोविद ग्राम वृद्धा-
> न्पूर्वोद्दिष्टा मनुसरपुरी श्री विशाला विशालाम्।
>
> (मेघदूत १/३०)

राजस्थान में ऐतिहासिक व्यक्तियों की जीवन-कथाओं के कहने-सुनने का प्रचार विशेष रूप से रहा है। लोग ऐसी कथाओं में बड़ी रुचि लेते रहे हैं। परन्तु यह प्रक्रिया यहीं तक सीमित नहीं रही और यहां की विशिष्ट लोक-कथाएं 'बातों' के रूप में लिखी भी जाने लगीं। ये बातें विविध विषयों की हैं परन्तु इनमें अधिकांश ऐतिहासिक बातों की हैं और वे वीर-रसात्मक हैं। इनका गद्य बड़ा ही पुष्ट और आकर्षक है। राजस्थानी बातों के लिखे जाने के

उद्देश्य के विषय में स्वर्गीय ठा० किशोरसिंहजी बार्हस्पत्य ने अपने 'डिंगल भाषा के प्राचीन ऐतिह्य' शीर्षक लेख[1] मे इस प्रकार ज्ञापन प्रस्तुत किया है —

"पद्य-ग्रथो की अपेक्षा गद्य ग्रथो मे और गुजरात की प्राचीन संस्कृति का बहुत अधिक परिचय मिलता है। डिंगल साहित्य मे शौर्य, वदान्यता, सच्चरित्रता और स्वामिभक्ति आदि उच्च मानवीय गुणो का विशेष प्रकार से चित्रण किया गया है। जो महापुरुष इन गुणो में से किसी मे सम्पन्न हुआ करते थे, उनका जीवन-चरित्र 'बातो' के नाम से सग्रहीत किया जाता था। ये बातें कल्पित नही, बल्कि ऐतिहासिक भित्ति पर चित्रित की जाती थी। प्राचीन ख्यातो से एकत्रित कर इन बातो मे स्थान-स्थान पर काव्य-रचना द्वारा लालित्य लाया जाता था। डिंगल मे इसी साहित्य को 'बातें' कह कर पुकारा जाता है। आजकल की भाषा में इनको उपन्यास कहा जा सकता है और इतिहास ससार मे इनको ऐतिह्य (Legends) कहा जाता है।

"प्राचीन समय मे जब राजकुमारो को चारण कवियो के सरक्षण मे रख कर शिक्षा दिए जाने का नियम प्रचलित था, तब उक्त कवि किसी प्राचीन वीर-धीर के ऐतिहासिक चरित्र को रोचक बना कर उसको कथानको के रूप मे लिखा करते थे और वही अपने शिष्यो को पढाते थे। साथ ही उनमे लिखी हुई बातो को कार्य रूप मे परिणत करने के लिये अपने को बराबर प्रोत्साहित करते रहते थे। * * * * ये कथानक जिस प्रकार पुरुषो के पढने की चीज हैं, उसी तरह स्त्रियो के हाथों मे भी बिना किसी हिचकिचाहट के साथ दिए जा सकते है। अश्लीलता तो इनमे नाम मात्र भी नही। जिस प्रकार पुरुषो के उपरोक्त गुणयुक्त चरित्रो का उल्लेख इनमे किया गया है, उसी प्रकार स्त्रियो के पातिव्रत्य, शौर्य, सतीत्व-रक्षा आदि गुणो का भी इनमे उल्लेख मिलता है। * * * * ऐसी एक नही, सैकडो की सख्या मे डिंगल मे 'बातें' उपलब्ध होती हैं, जिनसे इस प्रात मे प्रचलित उस समय के पारीवारिक, सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक जीवन, उत्सवो की शैलियो, स्त्री-पुरुषो के पारस्परिक व्यवहार, विवाह की भिन्न भिन्न रीतियां, राज-दरबारो के विवरण और मृगया के प्रकार आदि पर पूरा प्रकाश पडता है। यह बहुमूल्य साहित्य किसी समय राजस्थान के घर-घर मे प्राप्त होता था।"

इस वक्तव्य मे राजस्थानी की ऐतिहासिक बातो के सम्बध मे अच्छा स्पष्टीकरण किया गया है। विद्यारसिक ग्रन्थ लोग भी ऐसी बातें अपने स्वाध्याय के लिए लिखते-लिखवाते रहे हैं। साहित्य-प्रेमियो के मनोरजन का भी यह एक उत्तम साधन है। ऊपर 'ख्यात' ग्रथो की भी चर्चा आई है। 'ख्यात' एव 'ऐतिहासिक बात' की लेखन शैली का अन्तर भी ध्यान मे रखने की चीज है। इस विषय मे स्वर्गीय सूर्यकरणजी पारीक का वक्तव्य प्रस्तुत किया जाता है[2]—

---

[1]द्रष्टव्य, त्रैमासिक राजस्थान, वर्ष १, अक २, संवत् १९९२।

[2]द्रष्टव्य, राजस्थानी वाता की भूमिका पृ (८)।

"जैसा कि ऊपर कह आये हैं 'बातों' के रूप में राजस्थान का प्राचीन इतिहास लिखा गया है अतएव इन 'वातों' में ऐतिहासिक सामग्री बहुतायत में मिलती है। ख्यात की 'बातों' में और मनोरंजनार्थ रचित 'बातों' में एक स्पष्ट अन्तर यह होता है कि इनमें कल्पना की मात्रा अधिक रहती है। ख्यात की बातों में जहां तक हो सका है, ख्यात लेखक ने वंशावलियों के क्रम से प्रत्येक व्यक्ति और वंश के जीवन-काल की मुख्य बातों का यथार्थ वर्णन किया है। कहानी की बातों में किसी एक ऐतिहासिक कार्य को लेकर और उसमें कल्पना का पुट देकर मनोरंजक सामग्री प्रस्तुत की गई है। अतएव यद्यपि इन कहानियों की आधारभूत बातें ऐतिहासिक हैं परन्तु कहानी के समस्त रूप का ऐतिहासिक तथ्य मान लेना भारी भूल होगी। कहानी एक कला है और उसका प्रधान उद्देश्य है—मनोरंजक के रूप में किसी प्रमुख व्यक्ति अथवा घटना के सम्बन्ध में आख्यान लिख कर सहृदय जनता का हृदय आकर्षित करना। संसार के सभी साहित्यों में, जहां भी देखा जाय क्या कहानी, क्या उपन्यास, नाटक, काव्य—सभी में कल्पनात्मक प्रसंगों द्वारा वास्तविक तथ्यों को एक नवीन रागात्मक रूप दे दिया जाता है। यही बात इन कहानियों में भी समझनी चाहिए।"

ऊपर वर्तमान युग की कहानी की चर्चा आई है। इसी प्रसंग में वर्तमान 'कहानी' और 'राजस्थानी बात' का अन्तर भी समझ लेना आवश्यक है। इस विषय में श्री रावत सारस्वत का वक्तव्य प्रस्तुत किया जाता है[1]:—

"बात साहित्य की अपनी निजी विशेषताएँ भी हैं जिनकी सूक्ष्म आलोचना किये बिना राजस्थानी साहित्य के इस प्रधान अंग का पूर्ण परिचय प्राप्त नहीं हो सकता। किन्तु इसके पहिले हम को पक्षपातरहित होकर यह बात सोच लेनी चाहिए कि हम आज से ३०० वर्ष पहले लिखे हुए प्राचीन साहित्य की चर्चा कर रहे हैं। अतः आधुनिक कहानियों के विशाल क्षेत्र में होने वाले सूक्ष्म तत्वों के चित्रण, पात्रों के वैज्ञानिक चरित्र-लेखन तथा कहानी-लेखक के विस्तृत अध्ययन की सारगर्भित मार्मिक उक्तियों का अस्तित्व यहां न होगा। पर फिर भी पाश्चात्य साहित्य की इस भड़कती हुई वेशभूषा से परे, बीसवीं शताब्दी के यांत्रिक जीवन की कटु सच्चाइयों से भरे अन्वेषणों से निर्लिप्त, राजस्थानी बातों ने 'राजा रानी' की प्राचीन कहानियों के उसी विशुद्ध भारतीय वातावरण का झीना परिधान पहन रखा है तथा इनके अन्तःकरण में देश-प्रेम और आत्मगौरव पर जीवन लुटा देने वाली वीर आत्माओं का उबलता हुआ रक्त अब वेगपूर्ण गति से संचार कर रहा है।"

ऊपर प्रकट किये गए सभी तत्वों के स्पष्टीकरण के लिए अधिक उदाहरण न देकर यहां केवल एक उदाहरण दिया जाता है और उस पर कुछ विस्तार से चर्चा की जाती है। इस सम्बन्ध में जगदेव पंवार के चरित्र पर विचार किया जाता है, जिस के विषय में कुछ विशेष सामग्री उपलब्ध है।

---

[1]द्रष्टव्य, राजस्थान भारती, भाग २, अंक २, जुलाई १९५१।

जैसा कि ऊपर कहा गया है, राजस्थानी बातो मे यहां की लोक कथाओं को ही साहित्यिक रूप दिया गया है। राजस्थान में लोक कथाओ के कहने की भी विशेष शैली है। तदनुसार कथा की विशिष्ट घटनाओ का विस्तार के साथ वर्णन किया जाता है जिससे कि वे चित्रवत् प्रकट हो सकें। राजस्थान मे जगदेव पँवार विषयक लोक कथा विविध रूपान्तरो मे विस्तार के साथ कही-सुनी जाती है। यहा उसके एक रूप का केवल ढाचा मात्र दिया जाता है जिससे अनुमान लगाया जा सकेगा कि ऐतिहासिक तथ्य मे कल्पना का पुट कहां तक रहता है।

जगदेव पँवार धारा नगरी का 'टीकायत' (पिता का सब से बडा बेटा) राजकुमार था। जब उसके पिता का देहान्त हुआ तो उसकी सौतेली माता बुरी तरह रोने लगी। उसे अपने पति की मृत्यु का इतना दुःख न था जितना कि इस बात का कि अब उसके औरस पुत्र का क्या हाल होगा। जगदेव ने अपनी सौतेली माता को धीरज दिया और उसके पक्ष मे अपना राजपद त्याग दिया। वह अपने पिता का 'खर्च' (श्राद्ध-कर्म) कर के अपनी पत्नी सहित किसी अन्य राज्य मे भाग्य आजमाने के लिए निकल पड़ा।

आगे चल कर उसने वह रास्ता पकडा जो दुर्गम होने पर भी 'जयचद' की राजधानी मे पहुँचने के लिए अपेक्षाकृत सीधा था। मार्ग मे उसने एक नौहत्थे (नौ हाथ लम्बे) सिंह को शिकार की और फिर राजधानी मे प्रवेश किया। वहाँ एक तेली से राज भवन का पता पूछा तो उसे उत्तर मिला कि वह नाक की सीध मे चला जावे। इस पर जगदेव ने लोहे की 'कुस' को हाथ से मोड कर उसके गले मे फसा दिया। तेली राजा के दरबार मे शिकायत लेकर पहुँचा। इस पर जगदेव को वहा बुलाया गया। जगदेव ने अपना परिचय देकर तेली के गले से 'कुस' निकाल दी और जयचद के यहा वह नौकर हो गया। उसे राजा के 'ढोलिये' (पलग) का पहरा देने का काम सौंपा गया।

जब राजा सोता था तो रात के समय उसके महल में 'कालियो भैरू' आता था। वह राजा को धरती पर पटक देता और स्वय रानी के साथ पलंग पर सोता। राजा डर के मारे यह बात किसी को कहता भी न था। आज जगदेव ने 'भैरू' को जमीन पर दे मारा और उसकी एक टाग टूट गई। वह रोता हुआ अपनी माता 'ककाळी' नामक भाटनी के पास आया। उसने अपनी माता के सामने जिद्द की कि वह जगदेव के सिर को गेंद बना कर खेलेगा तभी अन्न ग्रहण करेगा। अतः उसकी माता जगदेव का सिर प्राप्त करने के लिए चल पडी।

ककाळी राजा जयचंद की सभा मे पहुँची। वह किसी के सामने घूघट नही निकालती थी। सभा मे उसने जगदेव को देखते ही घूंघट निकाल लिया। इस पर जयचंद ने अपना अपमान समझा। ककाळी ने जगदेव की दानशीलता की प्रशसा की। राजा जयचंद ककाळी को जगदेव से चार गुना अधिक दान देने के लिए तैयार हुआ। सभा समाप्त हुई और ककाळी जगदेव के निवासस्थान पर दान लेने के लिए पहुँची। जगदेव ने ककाळी को अपना शीश दान मे दिया। उसे लेकर वह जयचद के महल की ओर चली। मार्ग मे जगदेव का भानजा मिला, जो एक आख से काना था। उसने अपनी आख निकाल कर ककाळी को दान कर

दी। कंकाळी महल मे जयचंद के सामने पहुँची। राजा दान की उन वस्तुग्रों को देख कर दंग रह गया। ककाळी ने ग्रपनी टाग ऊची करदी ग्रौर राजा जयचंद को ग्राज्ञा दी कि वह ऐसा कहते हुए सात बार उसकी टाग के नीचे से निकले कि जयचद हारा ग्रौर जगदेव जीता। जयचंद ने ऐसा ही किया, तब उसका पिंड छूटा।

वहां से चल कर कंकाळी ग्रपने पुत्र के पास ग्राई ग्रौर उसे जगदेव का सिर दिखला दिया परन्तु दिया नही। वह इतने से ही राजी हो गया। तदनंतर कंकाळी जगदेव के घर पहुँची। वहा उसने जगदेव की पत्नी को उसके पति का सिर उसके धड पर रखने के लिए कहा। वीर पत्नी ने दिया हुग्रा दान वापिस लेना ग्रस्वीकार किया। तब ककाळी ने एक नारियल जगदेव के धड पर रखा ग्रौर वह जीवित हो गया। इसके बाद ककाळी ने जगदेव के भानजे की ग्राख मे 'ठीकरी' रख कर उसे नेत्रवान बना दिया ग्रौर वह ग्रपने घर लौट ग्राई।

राजा जयचंद ने जगदेव से बदला लेने के लिए प्रतिज्ञा की कि वह धारा नगरी को तोड कर ही ग्रन्न ग्रहण करेगा। धारा दूर थी, ग्रतः उसके सभासदो ने सलाह दी कि पहले कागज की धारा बना कर तोड दी जावे ग्रौर फिर सेना द्वारा चढाई कर के ग्रसली धारा तोडी जावे। तदनुसार नगरी से बाहर मैदान मे यह नाटक रचा गया। जब जगदेव को इस बात का पता चला तो वह कागज की धारा मे बैठ गया। 'टूटेगी धारा, तो लाजैगी पँवारा' इस युद्ध में भी राजा जयचद हार गया ग्रौर वह ग्रपना-सा मुँह लेकर रह गया। जगदेव वहा से चल कर ग्रपने राज्य मे ही लौट ग्राया ग्रौर फिर वहीं रहने लगा।

यह जगदेव पँवार सम्बधी राजस्थानी लोक कथा की रूपरेखा मात्र है। कहानी कहने वाले लोग इसे बडा विस्तार देकर कहते हैं। जगदेव-विषयक लोक कथा के किसी एक रूप के ग्राधार पर ही उसके सम्बध मे लिखित 'बात' तैयार हुई है। स्वर्गीय सूर्यकरणजी पारीक द्वारा सम्पादित 'राजस्थानी बातां' ग्रन्थ मे यह 'बात' प्रकाशित भी हो चुकी है। इसके ग्रनुसार जगदेव मालवा देश मे धारा नगरी के राजा उदयादित्य पँवार की दुहागिन (त्यक्ता) रानी का पुत्र है। राजा के सुहागिन रानी दूसरी है जिसके पुत्र का नाम रणधवल' है ग्रौर वह उम्र मे जगदेव से बडा है। जगदेव का रग श्याम है परन्तु वह बडा कान्तिमान है। जब जगदेव बडा होता है तो उसे ग्रपनी सौतेली माता के डाह के कारण ग्रपना घर छोडना पडता है ग्रौर वह पाटण के राजा सिद्धराज जैसिंघदे के यहा नौकरी करने के लिए सपत्नीक रवाना हो जाता है। वह दुर्गम मार्ग पकडता है ग्रौर एक सिंह तथा सिंहनी की शिकार करता है। पाटण पहुँच कर वह सहस्रलिंग तालाब के पास ठहरता है ग्रौर ग्रपनी पत्नी को वहीं छोड कर शहर में हवेली किराये करने के लिए जाता है। पीछे से एक वेश्या दगा कर के जगदेव की पत्नी को ग्रपने घर ले जाती है। रात के समय वेश्या उसके पास नगर कोतवाल के बेटे को भेजती है ग्रौर जगदेव की पत्नी चतुराई से उसे मार कर एक गांठ मे बाध देती है। फिर उस गांठ को खिडकी के रास्ते बाहर फेंक दिया जाता है। इधर जगदेव तालाब पर ग्राता है ग्रौर उसे ग्रपनी पत्नी नही मिलती तो वह राजा के भवन में चला जाता है। दूसरे दिन गांठ का भेद खुलता है ग्रौर सिद्धराज कोतवाल को दण्ड देता है ग्रौर जगदेव को दरबार में उच्च पद दिया जाता है। एक बार रात के समय सिद्धराज को ग्रपने महल से कुछ दूरी पर

जगल में कुछ स्त्रियो के रोने और कुछ के गाने की आवाज सुनाई देती है तो वह पता लगाने के लिए जगदेव को भेजता है। साथ ही गुप्त रूप से वह स्वय भी उसके पीछे हो लेता है। आगे पता चलता है कि रोने वाली स्त्रियां पाटण की जोगनिया हैं, जो अगले दिन सिद्धराज की मृत्यु होने वाली है, अतः रो रही हैं और गाने वाली स्त्रियां दिल्ली की जोगनियां हैं जो उसे लेने आई हैं। जगदेव अपने स्वामी सिद्धराज की उम्र बढवाने के लिए अपना, अपनी पत्नी का और अपने दो पुत्रो का सिर भेंट करने के लिए तैयार होता है और उसकी स्वामि-भक्ति से प्रसन्न हो कर जोगनिया सिद्धराज की उम्र अडतालीस वर्ष बढा कर चली जाती हैं। सिद्धराज यह सारी लीला छिपे तौर पर देखता है और अगले दिन जगदेव के साथ अपनी पुत्री का विवाह कर देता है। कुछ वर्षों बाद सिद्धराज एक नया विवाह करता है और उसकी रानी के महल मे रात के समय काला भैरव आता है। जगदेव उसका पैर तोड देता है और गाठ बाध कर अपने घर ले आता है। इसके बाद चामुंडा देवी एक भाटनी के रूप मे आती है और लगभग लोक कथा के अनुसार ही कहानी चलती है। इस 'बात' मे जैसिंघदे द्वारा धारा तोडने की चर्चा नही है। 'बात' मे जगदेव के शीश-दान की तिथि जरूर दी गई है:—

सवत इग्यारह इकाणवै, चैत तीज रविवार।
सीस ककाळी भट्टणी, जगदे दियो उतार॥

लोक कथा और बात के कथानक मे कुछ अतर भी है। इसका कारण यह भी है कि जगदेव-विषयक लोक कथा के अनेक रूपान्तर है, अतः बात का लेखक उन मे से जो ठीक समझे उसी का उपयोग कर सकता है। इन मे जगदेव द्वारा शीश दान करने की घटना को विशेष प्रसिद्धि मिली है। इस घटना की मुहणोत नैणसी की ख्यातो मे भी चर्चा है[1]।

राजस्थानी बात के रगीन वातावरण मे चित्रित जगदेव पँवार की इस जीवन कथा को ऐतिहासिक तथ्य के रूप मे ग्रहण करना उचित नही। डा० दशरथ शर्मा ने राजस्थान भारती (भाग ४, अक ४) मे अपने 'त्रिविधवीर जगदेव परमार' शीर्षक लेख मे शिलालेखों के आधार पर 'जगदेव पवार' के जीवन पर प्रकाश डाला है। तदनुसार जगदेव के बडे भाई लक्ष्मदेव और नरवर्मा थे। हो सकता है कि वह कुछ समय के लिए सिद्धराज जयसिंह के यहा रहा हो, परन्तु उसका अधिकांश प्रवास-काल तो दक्षिण भारत मे कुन्तलेन्द्र के यहा ही बीता, जहा उसने बडी वीरता दिखलाई और काफी सम्मान प्राप्त किया। आगे चल कर जब मालवा पर विपत्ति के बादल मँडराये तो वह अपने देश को लौटा और उसने आक्रामक सिद्धराज जयसिंह से टक्कर ली और उसे परास्त किया। इस लेख से सिद्ध होता है कि निश्चय ही जगदेव त्रिविध-वीर था परन्तु जयसिंह के दरबार मे रह कर उसके द्वारा कंकाळी भाटनी को शीश-दान किए जाने की कहानी निराधार एव ऊपर से मिलाई हुई प्रकट होती है।

यहा राजस्थानी की एक ऐतिहासिक बात का नमूना मात्र विचार करने के लिए प्रस्तुत किया गया है। परन्तु इस से यह सार नही निकाल लेना चाहिए कि 'राजस्थानी ऐतिहासिक

---

[1]द्रष्टव्य, मुहता नैणसी री ख्यात (श्री बदरीप्रसाद साकरिया) पृ. ३३६।

बातें ऐतिहासिक तथ्यो से सर्वथा रहित होती है। कई बातों में ऐतिहासिक सामग्री अधिक मिलती है और कई मे कल्पना का रंग विशेष होता है।

साथ ही यह ध्यान रखना चाहिए कि राजस्थानी बातों में और विशेष रूप से ऐतिहासिक बातों में यहा के मध्यकालीन लोकजीवन का इतिहास लिखने के लिए परमोपयोगी सामग्री उपलब्ध है। इस सामग्री द्वारा राजस्थानी जनजीवन के प्राय: सभी अगों पर अच्छा प्रकाश डाला जा सकता है और अभी तक इस दिशा मे कुछ भी कार्य नही हुआ है। शोध करने वाले विद्यार्थियो के लिए यह एक उत्तम क्षेत्र है। इस सामग्री मे तत्कालीन समाज की अच्छाइयो एवं बुराइयो दोनों के अत्यत स्वाभाविक चित्र हैं। वर्तमान राजस्थान के लोक-हृदय का ज्ञान प्राप्त करने के लिए यहा के भूतकाल के जीवन का लेखा-जोखा भी विस्तार के साथ किया जाना जरूरी है। *इस दिशा मे राजस्थानी बातें विशेष रूप से सहायक सिद्ध होंगी।*

इसके साथ ही राजस्थानी की ऐतिहासिक बातो द्वारा एक और भी महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हुआ है। राजस्थान के इतिहास को बड़ा सम्मान प्राप्त है और इस सम्मान का कारण वे बहुसख्यक व्यक्ति है जिनके नाम उभर कर ऊपर आ गए हैं। इनके अतिरिक्त ऐसे अनेक व्यक्ति यहा हुए हैं जिनको जनता ने बड़ा सम्मान दिया है परन्तु उनके नाम इतिहास मे नही आ पाए हैं। उनके सम्बध मे यहा गीत गाये जाते हैं और कहानिया कही जाती हैं। इन सब के लिए ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं परन्तु इनके चारित्र्य के महत्व को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। ये लोक वीर हैं और इनमे से कई तो लोकदेवता के रूप मे पूजे जाते हैं। ऐसे व्यक्तियो के चरित्र यहा की बातो में संवार सजा कर साहित्यिक रूप में प्रस्तुत किये गये है। ऐसी स्थिति में राजस्थानी ऐतिहासिक बातें विशेष रूप से ध्यान देने योग्य हैं।

ऐतिहासिक टिप्पणियाँ

राव रिणमल री बात

पृ. १७ — सोनगरों का राव रिणमल की बढ़ती हुई शक्ति से आतंकित होना और अपनी लड़की ब्याह कर फिर उस से घात करने की घटना को श्री विश्वेश्वरनाथ रेऊ ने संवत् १४८२ के आसपास की माना है। (मारवाड़ का इतिहास, भाग १, पृष्ठ ७३)

पृ. १६ — राव रिणमल की बहिन, जिसके विवाह का नालेर चित्तौड़ के कुंवर चूंडा के लिए भेजा गया था, पर वह लाखाजी को ब्याही गई थी। उसका नाम ओझा आदि इतिहासकारो ने 'हंसाबाई' लिखा है पर यहां 'राजकुंअर' लिखा मिलता है। आगे पृष्ठ २३ पर इन्ही का नाम (मोकल की माता) 'बख्तावर बाई' मिलता है। पृ. १६ पर ही लाखा के स्थान पर खेता लिखा मिलता है। यह भूल से ही लिखा गया मालूम होता है।

पृ. २६ — धोखे से चाचा मेरा द्वारा राणा मोकल को मारने की घटना का समय श्री रेऊ ने सं. १४९० माना है। (मा. इ., भा. १, पृ. ७५)

पृ. २६ — मोकलजी के मारे जाने पर कुंभा घोड़े पर चढ़ कर जोधपुर रिणमलजी के पास भाग आया, ऐसा इस बात में लिखा है पर मुंहणोत नैणसी की ख्यात, पृ. १०६ में राव रिणमल के पास मोकल की मृत्यु का समाचार एक संदेशवाहक के हाथ पहुंचना ही लिखा है। रेऊजी ने इस घटना के समय कुंभा की उम्र केवल ६ साल की मानी है (पृ. ७५)। ऐसी स्थिति में कुंभा का घोड़े पर चढ़ कर इतनी दूर जाना संभव भी नहीं था। कई इतिहासकार उनकी उम्र इस समय १२ वर्ष की भी मानते हैं। ओझाजी के मतानुसार भी यह संदेश एक संदेशवाहक के साथ ही पहुंचाया गया है। रेऊजी के मतानुसार राव रिणमल ५०० चुने हुए सरदारों को लेकर चित्तौड़ पहुंचा।

पृ. ३० — मुंहणोत नैणसी के अनुसार रिड़मल के पुत्र अरडकमल ने नाहरी मारी (नैणसी की ख्यात पृ. १०७)

पृ. ३१ — चाचा चाचावत ने राणा कुंभा की दमचर्या करते समय आंसू ढलका कर रिड़मल के बढ़ते हुए आधिपत्य से उत्पन्न खतरे की बात की और कुंभा बहकावे में आ गया।

पृ. ३२ — कर्नल टॉड (एनल्स एण्ड एन्टीक्वीटीज ऑफ राजस्थान, भा. १, पृ. ३३२) और सूर्यमल्ल मिश्रण (वं. भा., भा. ३, पृ. १८७२) ने रिड़मल का राणा मोकल के समय में मारा जाना लिखा है, वह सही नहीं है।

पृ. ३२ — नैणसी के अनुसार राना की डोकरी (दासी) ने जोधा को सचेत करने के लिए पुकारा।

राव जोधा रै बेटां री बात

पृ ३५ — मारवाड़ की ख्यातों में करण के स्थान पर कान्ह नाम मिलता है। ओझाजी ने इस घटना को इम्पीरियल गजट के आधार पर गलत सिद्ध किया है। उनके मतानुसार कन्नौज पर उस समय कोई ऐसा हिन्दू राजा नहीं था। पर रेऊजी ने यह घटना सही मानी है। उनके मतानुसार कन्नौज के राठौड़ घराने का प्रतिष्ठित सरदार करण बहलोल लोदी का मित्र था और उसने जोधा को बादशाह से गयाजी जाते समय मिलाया था। तथा बादशाह ने गयाजी आने वाले यात्रियों से लिया जाने वाला कर माफ कर दिया। (मा. इ., भा. १, पृ. ६५)

पृ ३६ — ओझाजी ने राव जोधा की मृत्यु का संवत १५४५ माना है, वही सही है।

पृ. ३६ — नैणसी ने अपनी ख्यात मे जोधा द्वारा चित्तौड़ मे लूट मचाने का विस्तृत वर्णन किया है। नापा की सलाह से कुम्भा ने जोधा के साथ संधि करनी चाही। दोनों ओर से द्वन्द्व युद्ध होना तय हुआ। राणा की ओर से विक्रमादित्य झाला और जोधा की ओर से बीजा ऊदावत मैदान मे आये। झाला मारा गया। बीजा जीता (नैणसी की ख्यात, पृ. १३०)

रेऊजी ने इस घटना का माडोल के पास घटित होना बताया है। उनके मतानुसार जोधा करीब २० हजार योद्धा लेकर युद्ध के लिए पहुँचा। कुंभा पहले ही मालवे के सुलतान से उलझा हुआ था। ऐसी स्थिति मे उसने युद्ध नही करना चाहा और जोधा से संधि करली और वैर समाप्त करने के लिए बबूल वाली जमीन जोधा को देदी। (मा. इ., भा १. पृ. ६०)

पृ ३६ — ओझाजी ने भी सातल की गद्दीनशीनी और मृत्यु का संवत यही माना है। उनके मतानुसार पीपाड़ के पास से जब मुगल तीजणियों (तीज मनाने वाली लड़कियों) को हरण कर के ले जा रहा था तो सातल ने पीछा किया और सेनापति घड़ूलिया को मार कर लड़कियों को ले आया। वह इस युद्ध मे इतना घायल हो गया कि कुछ समय बाद ही स्वर्ग सिधारा।

विशेष—'घुड़ला' गीत इसी घटना का प्रतीक है। जोधपुर में चैत्र बदि आठम को घड़ूले का मेला लगता है।

पृ ३६, ३७ — नैणसी ने इस घटना का वर्णन इस प्रकार किया है—लक्ष्मी का विवाह-सम्बन्ध हरभू ने पहले सीवा के साथ करना चाहा, पर सींवा ने यह कह कर अस्वीकार कर दिया कि लड़की अशुभ लक्षणों में पैदा हुई है, इसलिए उसे यह सम्बन्ध स्वीकार नहीं है। अन्य दो-तीन जगह प्रयत्न किया पर सम्बन्ध न बैठा। तदुपरान्त सूजा एक बार शिकार खेलता-मेलता इधर आ निकला, तब उसके साथ लक्ष्मी का विवाह कर दिया गया। (मु. नैणसी की ख्यात, पृ. १३८)

पृ ३७ — मारवाड़ की कई ख्यातों में लिखा है कि टीकायत कुं. बाघा जब मर गया तो वीरमदे को सरदारों ने टीका देने का विचार किया, पर वीरम की माता ने उनका

यथोचित आदर-सत्कार नहीं किया। गांगा की माता को जब यह पता लगा तो उसने फौरन सारा प्रबध करवाया और उनका बहुत सत्कार किया, तब सरदारो ने उस समय का मुहूर्त टाल कर गागा को मेवाड से बुलाया और उसे टीका दिया। तभी से यह कहावत प्रचलित हुई बताई जाती है—

'रिडमला थापिया जिके राजा।'

पृ. ३८ — राव गांगा की मृत्यु का संवत ओझाजी ने १५९८ माना है, वही सही है।

राव मालदे री बात

पृ. ४२ — शेरशाह और मालदे के युद्ध की घटना के बारे मे नैणसी ने लिखा है कि शेरशाह ने मालदे को सशकित करने के लिए वीरम की सहायता से कूंपा के डेरे पर २० हजार रुपये कंबल खरीद कर भिजवाने के लिए भेजे और २० हजार ही जैता के पास सिरोही की तलवारें खरीद कर भिजवाने के लिए भेजे। उधर मालदे के पास सूचना भिजवाई—जैता, कूपा जैसे विश्वासी वीर भी रुपया लेकर शेरशाह से मिल गये हैं। मालदे को शक हो गया और वह चुपचाप जोधपुर लौट गया। पीछे युद्ध हुआ जिसमे बहुत से योद्धा काम आये। (मु नैणसी की ख्यात, पृ. १५७-१५८)

तवारीख शेरशाह मे लिखा है कि शेरशाह ने जब सुना कि मालदे ने अजमेर और नागोर ले लिया है, तब वह बेशुमार फौज लेकर चढ आया। फतहपुर-सीकरी के पास आकर उसने अपनी फौज कई भागो मे विभक्त करदी। मालदे ५० हजार सवार लेकर सामने गया। एक माह तक फौजें बिना लडे पडी रही। अत मे शेरशाह ने एक जाली अर्जी अपने नाम लिखवा कर राव मालदे के वकील के तम्बू के पास डलवादी (जिसमे सरदारो ने शेरशाह से मिल जाने की बात लिखी थी)। मालदे उसे देखते ही सशकित हो गया और बहुत कुछ समझाने पर भी जोधपुर लौट गया। जैतारण के पास जैता कूपा ने शेरशाह की फौज का वीरता के साथ मुकाबिला किया और वीरगति को प्राप्त हुये।

ओझाजी ने भी शेरशाह की ओर से चालाकी से डलवाये गये जाली पत्र द्वारा मालदे का सशकित होना लिखा है। मालदे के जाने के बाद जैता कूपा १०, १२ हजार की फौजें लेकर लडे। (जोधपुर का इतिहास, भाग १, पृ. ३०२-३०३)

पृ. ७४ — मालदे की मृत्यु का यही सवत ओझा के इतिहास मे है।

पृ ७५ — भाद्रेस का रहने वाला बारहठ आसानन्द डिंगल के प्रसिद्ध भक्त कवि ईसरदास का चाचा था

पृ. ७६ — रेऊजी ने मालदे के अधीन ५८ परगनों की सूची दी है। (मा. इ., भाग १, पृ १४२)

राव चंद्रसेन री बात

पृ ७८ — ओझाजी ने भी चद्रसेन के जन्म की तिथि यही स्वीकार की है।

पृ. ७९ — हृदे खीची के स्थान पर ओझाजी ने साहूणी ईंदा खीची का नाम लिखा है जिसने कि उदयसिंह को युद्ध-भूमि से बचा कर निकाला (जो. इ , भा. १., पृ. ३३४)

पृ. ८० — फारसी तवारीखो के आधार पर ओझाजी मानते हैं कि गढ पर बार-बार चढाई करने की आवश्यकता नही पडी होगी । एक ही वार मे अकबर के राज्यकाल के आठवें वर्ष मे जोधपुर का किला जीत लिया गया। (जो इ., भा. १, पृ. ३३५)

पृ. ८८ — रेऊजी के मतानुसार एक दिन उग्रसेन और आसकरन दोनो भाई चौसर खेलते समय लड पडे और आपस मे झगड कर मर मिटे।

पृ. ९० — रेऊजी ने राव रायसिंह तथा जगमाल का धोखे में आकर बिना शस्त्र के ही सुरतान की फौज द्वारा रात्रि के समय मारा जाना लिखा है । (मा. इ, भा. १, पृ. १६८, १६९)

राजा उदैसिंघ री बात

पृ ९१ — शरीर मे मोटे होने के कारण शाही दरबार मे मोटे राजा के नाम से पुकारे जाते थे। राव चद्रसेन ने अकबर की अधीनता स्वीकार नही की थी पर उदयसिंह ने अकबर की अधीनता स्वीकार कर उसकी ओर से कई युद्धो मे अच्छा काम किया था जिससे बादशाह ने उन्हे राजा की उपाधि दी और मारवाड का राज्य दिलवाने का वायदा किया था।

पृ ९१ — रेऊजी के अनुसार सोजत स० १६४१ मे प्राप्त हुई (मा इ , भा. १)

पृ ९२ — सीवाने को प्राप्त करने की घटना का सवत रेऊजी ने १६४४ माना है (मा इ., भा १)

पृ. ९३ — फलोधी सम्बन्धी भाटियो मे युद्ध का सवत रेऊजी ने भी यही माना है। (मा इ , भा १, पृ १७१)

महाराजा सूरजसिंहजी रै राज री बात

पृ ९४ — विश्वेश्वरनाथ रेऊ ने सूरसिंहजी के जन्म का सवत् १६२७ माना है। गद्दी-नशीनी का सवत १६५२ है।

पृ ९५ — सूरसिंहजी को मेडता सेनापति अम्बर चम्पू को वीरतापूर्वक हराने के उपलक्ष मे बादशाह ने दिया था। 'सवाई राजा' का खिताब भी इसी समय मिला।

सोजत रै मंडळ री बात

पृ. १०० — मारवाड के इतिहास मे सोजत का अत्यत महत्वपूर्ण स्थान रहा है। राव रिणमल ने तो बहुत समय तक उसे (धिणलो) अपना निवास-स्थान बनाया था। उसके पश्चात् भी जोधपुर के शासकों का इस परगने के साथ निरतर घनिष्ट सम्बन्ध बना रहा।

राव सालै री बात

पृ १०६ — इस साखा का सम्बन्ध राठोडों के राज्य के सस्थापक राव सीहाजी से भी है,

जिनके साथ उनका संघर्ष हुआ था, ऐसा इन्हीं ऐतिहासिक बातों की पोथी में आगे लिखा मिलता है। संभव है इसी लाखा की भ्रांति से कई ख्यातकारों ने लाखा फूलाणी मान लिया हो और उसके साथ सीहाजी के युद्ध होने की बात तथा उनके हाथ से मारे जाने की बात गढ़ली हो।
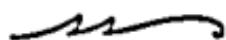
उद्देश्य व नियम

१—राजस्थानी साहित्य, भाषा, कला व संस्कृति का वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करना पत्रिका का मुख्य उद्देश्य है।

२—परम्परा का प्रत्येक अंक प्रायः विशेषांक होता है, इसलिए विषयानुकूल सामग्री को ही स्थान मिल सकेगा।

३—लेखों में व्यक्त विचारों का उत्तरदायित्व उनके लेखकों पर होगा।

४—लेखक को, सम्बन्धित अंक के साथ, अपने निबन्ध की पच्चीस अनुमुद्रित प्रतियाँ भेंट की जायेंगी।

५—समालोचना के लिए पुस्तक की दो प्रतियाँ आना आवश्यक है। केवल शोध-संबंधी महत्त्वपूर्ण प्रकाशनों की समालोचना ही संभव हो सकेगी।

परम्परा की प्रचारात्मक सामग्री, उसके नियम तथा व्यवस्था-सम्बन्धी अन्य जानकारी के लिए पत्र-व्यवहार निम्न पते से करें—

व्यवस्थापक :

परम्परा

राजस्थानी शोध-संस्थान, चौपासनी

जोधपुर [राजस्थान]